महराज

महराज

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5321-395-4

दाम : 250 रूपया

पहिल संस्करण : 2018

लेखक एवम् प्रकाशक : रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No : C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No : 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP : 201315
Phone: 01202343563 M-9968502767

महराज
A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण

समस्त अड़ेर डीह (मधुबनी) ग्रामवासीकेँ सप्रेम समर्पित

रबीन्द्र

दू आखर

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि जौँ ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि उपन्यासक पाण्डुलीपिकेँ रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ उपन्यासमे गुणात्मक सुधार भेल। एहि हेतु ओ प्रशंसाक पात्र छथि। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ)क अमूल्य सुझाव समय-समय पर भेटैत रहल अछि । हमर अनन्य मित्र श्री ओम प्रकाश सपरा,श्री मदन मोहन सिन्हा, एवम् श्री संजीव सिन्हा हमरा लिखबाक हेतु निरंतर उत्साहित करैत रहलाह । हिनकासभकेँ हार्दिक धन्यवाद ।

आशा अछि जे पाठक लोकनिकेँ ई पुस्तक पसिंद पड़तनि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

11 सितम्बर 2018

महराज

१

छोटसन गाम पुरबारिटोलमे कमला आओर लखनाक सुखी संपन्न परिवार छल। लखना दस बिघा मड़ौसी जमीन जोतैत छलाह। लखनाक एक पैर सदरिकाल खेते-खरिहानमे रहैत छल। हुनकर संपन्नता गामेक किछुगोटेकेँ नीक नहि लगैत छलनि। ओ सभ कै बेर झूठ-मूठकेँ मोकदमामे लखनाक नाम दए दैत छलाह मुदा ओ जेना-तेना बचैत गेलाह। आस्तिक लोक छलाह। सभमास सत्यनारायण भगवानक पूजा करैत छलाह आ संकटसँ उबारक हेतु हुनकर कृतज्ञ रहैत छलाह।

समय सभ दिन एकरंग नहि रहैत अछि। ओसभ केना-ने-केना लचरि गेलाह। किछु ऋण सेहो भए गेलनि। ओहने दिकदारीक समयमे महराजक लगान नहि दए सकलाह। हुनकर पाछु पड़ल दिआदवादकेँ ई मौका हाथ लगलैक। महराजक ओहिठाम नालिस भेल। लगान नहि देबाक कारण हुनकर सभटा जायदाद औनेपौने दाममे नीलाम भए गेल। महराजक सिपहसलारसभ ढ़ोल बजा-बजा कए सभटा जमीन बेचि देलक। लखना एहि आघातकेँ बरदास नहि कए सकलाह आ किछुए दिनमे एहि संसारसँ चलैत बनलाह। हुनकर पत्नी कमला तँ पहिनेसँ अथबल छलीह। चलि-फिरि नहि होनि। पक्षाघातसँ वामअंग बेकार छलनि। लखनाक आकस्मिक देहावसानकेँ ओ नहि सहि सकलीह आ किछुए दिनमे हुनको प्राणांत भए गेल।

देखिते-देखिते एकटा जुड़ल-अटल घर उजड़ि गेल। अन्न-अन्नक मोहताज भए गेल। ऐहन खिस्सा लखनेक नहि छल। गाम-गाम एहिना कतेको लोक महराजी जुलुमक शिकार भेलथि आ जिविते नर्कक भोग

भोगि रहल छलाह। महराजके कोनो मतलब नहि। पता नहि हुनका किछु बुझलो रहनि कि नहि? की पता हुनकर सिपहसलारसभ मनमानी करैत रहल हो? ककर हिम्मत छल जे महराज लग सिकाइत करत। जे कनीको किछु करत ओहिसँ पहिने ऊपर पहुँचा देल जाइत छल।

लखना ओ कमला मरिओ कए अपन लोक-वेदसँ फराक नहि भए सकलाह। रहि-रहि कए ओ सभ गामेक लगीचमे घुमथ रहैत छलाह। अपन जजातिपर नजरि लगओने रहैत छलाह। हाकरोस करैत रहैत छलाह जे हुनकर संतानसभक हककेँ अन्यायपूर्वक बेदखल कए देल गेल। मोनमे कतहुँ उमीद रहनि जे कहिओ हुनकर कोनो संतान एहि अन्यायक प्रतिकार करत आ तखने हुनकर आत्माकेँ मुक्ति हेतनि।

यद्यपि ओकरासभकेँ मरला कतेको बरख भए गेल मुदा गामक, अपन लोकक मोह ओकरा गाम झीकने आनि लैत छल। गाम आबएकाल ओ देखैत छल जे महराजक महल चारूकात पसरिते जा रहल छल। बड़का-बड़का देबालसभ ठाढ़ भए गेल छल। की-की ने भए गेल छल, मुदा देबालक ओहिकात लोक बेबस छल,जीवितो जीवनक संपूर्ण सुखसँ वंचित छल। कतेको लोककेँ हार-पाँजर एक भेल छल। से सभ देखि कए ओ आओर दुखी भए जाइत छल,कै बेर ठोहि पारि कए कानए लगैत छल। तथापि ओ गामक मोह छोड़ि नहि पाबि सकल छल।

एहिना एकराति ओसभ अपन गामदिस जेबाक इच्छुक छलाह। कमला बजलीह- "चलु ने अपन गाम?”

“पता ने आब के-के हेताह? कोन रुपमे गाम होएत? ककरो चिन्हबो करबैक कि नहि? आ फेर जौं किछु उल्टा-पुल्टा समाचार भेटि गेल तँ अनेरे दुखमे पड़ि जाएब।" -लखना बाजल।

“एतेक क्यो सोचए? हमरा लोकनि छी प्रेतात्मा। बौआएब तँ

अपन सभक कपारेमे लिखल अछि?"

“ऐं! की कहलिऐक?"

“ध्यान कतए अछि?"

“ऐ! इएह अपनसभक घर लगैत अछि। लगीचमे चभच्चा देखि रहल छी। मुदा हरिक घर नहि देखा रहल अछि?"

“हमरातँ बहुत चीज नहि देखा रहल अछि? फुलबाड़ी जकरा हम दिन-राति पानि दैत रहैत छलहुँ कहाँ अछि? ओलार जतए महींष बन्हाइत छल ओहो निपत्ता अछि। कतेको नव-नव घर देखि रहल छी। कहीं दोसर गाम तँ नहि आबि गेलहुँ?"

“धुत् तोरीके। सुनैत नहि छिऐक के खोखसि रहल छैक?"

“के छैक?"

“किछु देखा नहि रहल छैक? मुदा खोखसबाक आबाज तँ आबि रहल अछि।"

“से तँ सत्ते।"

“मुदा छै की।"

“रातुक अर्धपहर छैक। किछु भए सकैत छैक? की पता कोनो आओर प्रेतात्मा घुमि रहल होइक? जीन्न होइक,ब्रह्म पिशाँच होइक,तैं सावधाने रहब।"

"बात तँ सही कहि रहल छी, किछु संभव अछि।"

आवाज बढ़िते गेल। ठन..ठन...झम..झम...।"

“हमरा डर लगैत अछि...।"

“प्रेतो भए कए डर लागि रहल अछि?"

“इएह तँ एहि जोनिक विशेषता अछि जे एतए सभ किछु अपने-आप होइत रहैत अछि। अहाँ तँ आब पुरान भेलहुँ। ई सभ बूझल हेबाक चाही।"

“दाइ गे दाइ...। ई के अछि...। नमगर-नमगर हाथ बढ़ओने जा रहल अछि।"

“थम्हु, टार्च बारि रहल छी।"

“टार्च कतएसँ आएल?"

“बड्ड अपाटक छी। श्राद्धमे दान भेल रहैक से बिसरा गेल?"

ढन-ढनकेँ आवाज बढ़िते गेल। कनी कालमे बड़ी जोड़केँ अन्हर आएल आ सभ किछु उड़ा कए लेने चलि गेल।

“भागू-भागू, क्यो पछोड़ कए रहल अछि...।"

आओर दुनू गोटे बिला गेल।

राति भरि कमला ओ लखना गामक लगीचमे घुमैत रहि गेल मुदा नीचा नहि उतरि सकल। लगैक जेना कोनो प्रचंड शक्ति ओकरासभकेँ रोकि रहल अछि। किछु देखा नहि रहल छलैक। दुनू गोटेक मोन औनाए लगलैक। एहन तँ कहिओ नहि भेल छल। देखल-सुनल गामक रस्तामे ई की सभ भए रहल छैक? दुनू गोटेक चिंता एकहि बातक रहैक, जे आखिर ओकर वंशजसभ केँ कोनो संकट तँ नहि आबि गेल? एहिबातसँ ओसभ व्यग्र छल।

“कै बेर कहलहुँ जे आब गाम-घरकेँ बिसरु। ओहिठाम आब की राखल छैक? तीन पुस्त गुजरि गेल। अपनासभकेँ के चीन्हत? मुदा अहाँक मोन मानिते नहि अछि।" -लखना कहलकै।

"बुझै तँ छीऐक मुदा मोन नहि मानैए" -कमला बाजलि।

“प्रेत जोनिमे हम अहाँ छी। एतए लोक अपन मोनक किछु नहि कए सकैत अछि। भूख- प्यास सभ लगैत अछि मुदा समाधान कथुक अपना हाथमे नहि अछि।"

“से तँ छैक मुदा बौअनकेँ बिसरि नहि पाबि रहल छी।"

"अहाँकेँ ई की सभ फुराइत रहैत अछि? के थिक बौअन?"

"सएह कहू, बौअन बिसरा गेल?"

"हमरा किछु मोन नहि पड़ रहल अछि?"

“बहुत आश्चर्यक गप्प थिक जे लोक अपनो संतानकेँ बिसरि जाइत अछि।”

“बिसरि नहि जाइत अछि, बिसरा जाइत छैक। ई मृत्युलोक नहि छैक, प्रेतलोक छै।”

ओकरासभकेँ गप्प-सप्प होइते रहैक कि लगलैक जेना ठनका खसि रहल छैक। अन्हर उठि रहल छैक। चारु-कात भयावह ध्वनि सन्न-सन्न कए पसरि रहल अछि।

"भागू, भागू।"

"की भेलैक?"

"सुनि नहि रहल छिऐक?"

"की छैक...?

ओ एतबा बाजले छलि कि मखना सामने प्रकट भेल- “गोर लगैत छी।"

“के छह?' -लखना पुछलकैक।

"हम छी कालू भगताक भाए, मखना।"

से कहि आगा बढ़ि गेल। ओ मृत्युलोकसँ ककरो प्राण घिचने जा

रहल छल। यमपाश भजैत हरहराइत आगाँ बढ़ल जा रहल छल कि कमला ओ लखना हाकरोस करैत देखाएल रहैक।❑

२

कमला ओ लखना पुरबारिटोलक प्रसिद्ध भूतहा गाछीक पीपरक गाछपर रहि-रहि कए कानैत रहैत छलि आ ओहिठामसँ आबैत-जाइत लोकसभ कतेको बेर ओकरा हाकरोस करैत सुनैत छल। कमला आ मखनाकेँ एना हाकरोस करैत देखि मखनाक हृदयमे बहुत कष्ट भेलैक। ओ ओकरसभक इतिहास जनैत छल। एहन हाकरोस करैत ओ एसगर नहि छल। कतेको लोक महराज आ हुनकोसँ बेसी हुनकर सिपहसलारसभक अन्यायसँ त्रस्त छल। मखना स्वयं परेसान छल। मुदा कएल की जाए? किछु तँ प्रतिकार करक छलैक। तकर ब्योंतमे ओ लागि गेल। यमराजक ओहिठाम जाल पसारए लागल। यमराजकेँ ओकर गतिविधिपर शुरुएसँ शंका रहनि मुदा ओहो बेबस छलाह। सभठाम लोक जीति सकैत अछि मुदा घरनीसँ जीतब बहुत मोसकिल काज थिक। मखना कोना-ने-कोना यमराजक घरनीकेँ पटा लेने छल। एहि कारणसँ ओकरा खिलाफ ककरो नहि चलैत छल।

एकदिन दुपहरिआक समय रहैक। पुरबारिटोलक लोटन महीष चरबए गेल रहए। गाछीलग पहुँचितहि कानबाक आबाज सुनि महीष परसँ धरफराक खसल। महीष चिकरए-भोकरए लगलैक। ओ महीषकेँ छोड़ि भूत-भूत..! बजैत इएह-ले वएह- ले भागल। भागवाक क्रमे धोती खुजि कतए खसलैक से होश नहि रहलैक। कहुनाक नंग-धरंग अपन दलानपर पहुँचल। ओतए पहुँचितहि धराम दए खसि पड़ल आ बेहोश

भए गेल।

गाममे गर्द पड़ि गेल। “लोटनकेँ भूत गछारि देलक। भूत ओकरामे सन्हिआ गेल अछि। दूपहरिआमे भूतहा गाछी जेबेक नहि छलैक,” तरह-तरहक बातसभ गामक लोक कए रहल छल। ओहिठाम क्रमशः लोकक करमान लागि गेल। लोटनक ऊपर पानिक छिड़काव कएल गेल। पंखासँ हवा कएल गेल। मुदा ओ टस-सँ-मस नहि भेल। कै गोटे कहए लागल जे एकरापर देवीक प्रकोप छैक,क्यो कहैक जिन्न सबार भए गेलैक,क्यो किछु,क्यो किछु। ताबतेमे गामक प्रसिद्ध भगता कालू ओहिठामसँ गुजरि रहल छल। लोकक भीड़ देखि साइकिलसँ उतरि पुछलकै-

"की बात?"

"कलममे महिंष चरबए गेल छलैक। ओतहि कोनो भूत गछारि लेलकै" -लोकसभ बाजल। से सुनितहि कालू भगता ताल-पतरा करए लागल। मंतर पढ़ए लागल। कनीकालमे लोटना फुरपुरा कए उठि गेल। गमछासँ देह झाड़लक आ बिदा भेल जेना किछु भेले नहि रहैक। लोकसभ अबाक छल। कालू मोंछ पिजबैत बाजलः

"गामक सीमानमे भूत पैसि गेल अछि। बचि कए रहैत जाउ।"

संयोगसँ हम ओही समय इसकूलसँ लौटि रहल छलहुँ। ताबे लोकक भीड़ छटि गेल छल।

लोटनकेँ पुछलिऐकः"की भेलै?

“की जाने गेलिऐक?” -लोटन बाजल।

"एतेक लोक कथी लेल जमा भेल छल?"

लोटन किछु नहि बाजल। ताबे हमर माए ओतए आबि गेलि आ हमरा धिचने चलि गेलि।

ओहि दिनक बाद जखन कखनो किओ भूतहा गाछी दिस जाइत ओकरा ककरो कानबाक आबाज सुनाइत। एहि बातसँ गौँवासभ ततेक डरा गेल छल जे दिनोमे ओमहरसँ लोक आबा-जाही कम कए देलक। बहुत आवश्यक होइतैक तँ हनुमान चालीसा पढ़ैत कहुना कए ओहो दू-तीन गोटे संगे जाइत। ओ गाछी इलाकामे चर्चित भए गेल छल। आमक मासमे सोड़हि-के- सोड़हि आम पड़ल रहैत छल,क्यो उठओनिहार नहि। सड़ि-सड़ि कए आम फेकाइत छल। नढ़िआ-कुकुरसभ आम खा-खा कए एकहि संगे भूकए लगैत छल जे आओर भयावह लगैत छल।

मुदा हमरा रहल नहि होअए। हमर बाबा,दाइ,बाबू सभक सारा ओही गाछीमे छल। ओ हमर पुस्तैनी गाछी छल। नेनेसँ हम बाबूक संगे ओहिठाम आमक रखबारी करए जाइत छलहुँ। कै दिन असगरो आमक रखबारी करैत छलहुँ। कहाँ कहिओ किछु विद्दति भेल? आबि ई गप्प-सप्प सुनैत रहैत छी। की पता एहूमे किछु बात होइक?

माएकेँ हम ई बात कतेको बेर कहलिऐक मुदा ओ अंठा दैक। बेसी कहितिऐक तँ कहैत- “तूँ एहिसभ बात पर एतेक नहि सोचै। पढ़ाइमे मोन लगा जाहिसँ भविष्य बनतौ। की करितहुँ? चुप्प भए जाइ। मुदा सौंसे गामकेँ कोना चुप्प कए दितिऐक? सभ एकस्वरसँ ओकरा भूतहा गाछी कहैक। एक हिसाबे गामक लोकसभ ओहि गाछीकेँ बारि देने छल।❑

३

माएकेँ बरोबरि बाबू लेल पुछैत रहैत छलिऐक। हमर बाबू कतए छथि? किएक नहि अबैत छथि? जाबे अबोध रही ताबे माए किछु-किछु कहि कए पोल्हा दैत छलि। आब तँ हम इसकूल जाइत छी। पाँचमाक

विद्यार्थी छी। दसम बर्ख भेल। किछु-किछु बातसभ बूझि रहल छी। माएकेँ हमर जिज्ञासा शांत करब उचित बुझेलैक। ओहि दिन इसकूलसँ आबि झोड़ा पटकि खाएपर बैसले रही की अपने बाजए लगलि-

"तोहर पिता तोहर जन्मक किछु दिनक बादे मरि गेल रहौक।"

"की भेलैक? बाबू किएक मरि गेलखिन?"

"गाममे हैजा फैलि गेल रहैक। कतेकोगोटे दुखित पड़ल। किछुगोटे बाँचिओ गेल। मुदा तोहर पिता के जे हैजा धेलक से रुकबाक नामे नहि लेलक, चौबीस घंटा रद्द-दस्त होइते रहल।"

"कोनो इलाज नहि भेलैक?"

"की इलाज होइतैक? गाममे ने डाकटर रहैक ने बैद?"

"तखन?"

"गामक पुरबारिमे ब्रह्मबाबा बसैत छथिन, तकरे गोहरबैत रहलिऐक। कतेक उचती-बिनती केलिऐक। तोहर दाइ भगवती लग भरि राति छाती पिटैत रहलखिन। रहि-रहि कए बेहोश भए जाथिन। भगवती! हे भगवती ! एहन अन्याय नहि करू हे भगवती! हमर प्राण लए लिअ, हमर बच्चाकेँ बकसि दिअ हे भगवती!- से सभ कहैत छाती पिटैत रहि गेलि।

"फेर?"

"फेर की होइतैक? तोहर पिताक हालत खरापे होइत चल गेल। भोर होइत-होइत नारी घिचा गेलनि। साँस बन्द भए गेलनि आ ओ एकहिबेरमे आँखि उन्टा देलखिन। हम तँ कनैत-कनैत बेहाल रही। एहि घटनासँ सौंसे गाम सन्न रहि गेल। तोहर दाइ हाकरोस करैत रहलीह।

हमरा तँ कतेको दिन-धरि भूख-पिआस सभ खतम भए गेल। लगैक जे हमरो जान नहि बाँचत। मुदा हमतँ छी कठजीव। एहनो विपत्तिकेँ झेलि गेलहुँ।”

हम माएसंगे ई सभ गप्प करिते रही कि कालू भगता कतहुँसँ घुमैत-फिरैत आबि गेल।

महराज लोकक समस्त संपदाकेँ हरण कए अपनहिमे मस्त छलाह। गाम-घरमे शिक्षाक घोर अभाव छल। डाक्टर,बैद डिबिआ लए कए तकनो नहि भेटि सकैत छल। तेहन परिस्थितिमे लोकक मजबूरीक फएदा धूर्त, उचक्कासभ नाना प्रकारक छल,प्रपंच कए उठाबैत छल। ओझा-गुनी, डाइन-भगता संकटमोचक छल।

एहने संकटमोचक छल-कालू भगता। जेहने देखएमे कारी छल तेहने ओकर मोनो मलिन छलैक। जतहिँ स्त्रीगण रहैत ओतहि चुक्की मारिकए बैसि जाइत आ शुरु भए जाइत। गोल मुँह, चपटल नाक, इएह-इएह मोटक बाँहि, भुट्ट आ चतरल देह ओ देखबामे भूत-प्रेतसँ कम भयावह नहि लगैत छल। जिला-जबारमे भगतैमे ओकर नाम छल। सोम आ शुक्रक अपने ओहिठाम भगतै करैत छल जाहिमे परिपट्टाक कारनीसभ ओकरा गोहरबैत रहैत छल। सभकारनी चाउर, दालि, अल्लु अनैत छल। एहि तरहेँ बोरा भरि-भरि अन्न-पानि भगता लए जाइत छल। ओहीमे सँ ओहि दिनक ओकरा ओतए भंडार होइत छल। कारनी आ ओकरा संगे आएल ओकर लोकसभक भोजनक इंतजाम रहैत छल।

ककरो किछु समस्या तँ ककरो किछु, मुदा परेसाने लोकसभक ओतए आएब-जाएब होइत छल। सोम-शुक्रक अलावा ओ आन दिन गाम-गाम बजाहटि भेलापर जाइत छल। ककरो भूत झाड़लक तँ कतहुँ जिनक प्रकोपक समाधान केलक।

हमरासभकेँ गप्प-सप्प करैत देखि ओ अपने बकए लागल-

"तोरासभकेँ बड़का संकट घेरने छौ, बचि कए रहिअह।"

“की कहलिऐक?" हमर माए बाजलि।

"समय पर अपने बुझा जेतह।"

से कहि भगता ओहिठामसँ ससरि गेल। माएक मोन उदास भए गेलैक। भगता की कहि गेल, किएक कहलक, सोचैत रहि गेल।

कालू भगता कनिके दूर गेल होएत कि एकटा अजोध गहुमन साँप छत्र काढ़ि कए ओतए ठाढ़ भए गेल। हम जाबे चिचिआइ, माएकेँ सतर्क करितहुँ,ताबे तँ अनर्थ भए गेल। साँप माएकेँ हबक्का मारलक। दहिना जांघसँ खून टप-टप खसए लागल। माए ओहिठाम बेहोश भए खसि पड़लि।

देखिते-देखिते ई समाचार सौंसे गाम बिजलौका जकाँ पसरि गेल। जे जतहि छल, सभ हमर दरबाजापर जमा भए गेल। एकदिस हमर माए बेहोश पड़ल छलि,दोसर दिस करमान लागल लोक। मुदा ककरो किछु नहि फुराइक जे कएल की जाए? क्यो किछु, क्यो किछु बजैत रहल। ताबतेमे लोटना चटिबाहकेँ पकड़ने आएल। धराधर चाटी चलए लागल। मंत्र पढ़ि-पढ़ि चटिबाह घुरमि-घुरमि कए झाड़-फूक करैत रहल, मुदा किछु नहि भेल। कनिके कालमे हमर माएक देह निष्प्राण भए गेल।

एतेक कम बएसमे माता-पिता दुनू खतम भए गेल छल। पिताक तँ किछु नहि देखने रहिऐक मुदा माएकेँ सामनेमे मरैत देखि लागल जेना ठनका खसि पड़ल। लोक-वेदसभ जमा होबए लागल। माएक अन्तिम संस्कार करबाक तैयारी शुरु भेल।

गाम-धरक लोकक एहन समयमे बहुत सहयोग भेटल। सभटा

ओरिआन गौंवेसभ केलक। आगाँ-आगाँ हम आ पाछु-पाछु माएक लहासकेँ चारि गोटे उठओने "राम नाम सत्य है " कहैत आगा बढ़ल जा रहल छल।

संयोगसँ कालू भगता ओहिठामसँ गुजरैत देखाएल। कालू केँ देखितहि लोकसभ ओकरा गरिआबए लागल। सभक कहब छलैक जे ओकरे जादू-टोनाक कारण हमर माएक जान गेल, कारण ओ देवी-देवा पोसैत छल। भगतै करैत छल आ हक्कल डाइनो छल, कहाँ दनि अष्टमीक रातिमे गाछ हकैत छल। किओ किछु,किओ किछु कहिते रहि गेल।

देखिते-देखिते माए जरि कए खाक भए गेलीह। हम निरंतर कनैत रहि गेलहुँ। लोकसभ अपना भरि बोल-भरोस दैत रहल। मुदा गुंड़क मारि धोकरे जनैत अछि। हमर सर्वश्व माए छलीह, से देखिते-देखिते चल गेलीह।

अंतिम संस्कारक विधि-विधान समाप्त भेल। माएकेँ सारा केँ जड़ैत, धधकैत छोड़ि हम गौंवा सभहक संगे बिदा भेलहुँ। माए सभदिनक हेतु छुटि गेलीह। हम एकदम एसगर रहि गेलहुँ। एगारह दिन धरि झर-झर नोर खसैत माएक श्राद्ध करैत रहि गेलहुँ।

श्राद्ध संपन्न भए गेल। पाहुनसभ बोल भरोस दए अपन-अपन गाम चलि गेलाह। रहि गेलाह मात्र हमर मामा। ओहो कतेक दिन रहितथि। नौकरी करैत छलाह। अपना गामक मिडिल इसकूलमे मास्टर छलाह। शिक्षाप्रेमी छलाह। हमर हालत देखि बहुत दया भए गेलनि आ हमरा अपने संगे अपन गाम लेने चलि गेलाह।

मामा संगे जेबा काल हमर दिआदसभ बहुत खुश रहथि। भेलनि जे आब एकर बस्तु-जातसभ लेबामे कोनो कष्ट नहि होएत। भेबो केलैक सएह। से बात फराके कहब..।

गामसँ निकलैत काल माएक साराक लगीच दए जेबाक रहैक। ओतए पहुँचितहि पैरमे जेना कैंच लागि गेल। आगा ससरले नहि होअए। मामा ई बात चट दए बूझलखिन आ हमर गलामे हाथ धए कहए लगलाह-

"श्रीकांत हम छी ने। तूँ कथुक चिंता नहि कर।"

हमरा भेल जेना मामाक मुँहसँ माएक आत्मा बाजि रहल हो। हम मामा दिस बकर-बकर तकैत रहलहुँ। आँखिसँ नोर ढ़बर-ढ़बर खसैत रहल। फेर मामा हिम्मत देलनि। कहलनि –

"माता-पिता ककरो सभ दिन नहि रहैत छैक। परंतु नीक काज कए तूँ अपन माए-बापक आत्माकेँ शांत कए सकैत छह। हुनकर आशीर्वाद लए सकैत छह।"

मामाक बात हमरा मोनमे गड़ि गेल। करवद्ध भए माएकेँ प्रणाम केलहुँ आ मामा संगे ओतएसँ आगा बढ़ि गेलहुँ।❑

४

आइ ओहि घटनाक पाँच साल भए गेल। माएक पाँचम बरखी भए रहल छल। हमर मामा विधि-विधानसँ बरखीक व्यवस्था केने रहथि। सौंसे गामक ब्राहमण भोजनक हेतु आमंत्रित रहथि। खूब नीक जकाँ काज भेल। थैह-थैह भए गेल। मुदा हमर मोन भोरेसँ उदास छल। काज करैत-करैत आँखि लागि गेल। सपना देखए लगलहुँ। लागल जेना माए आबि कए ठाढ़ छथि, कहि रहल छथि- “श्रीकांत कथुक चिंता नहि करह। हम सदरिकाल तोरे लग छी।

एतेक बाजि ओ हमर हाथ धए लेलीह। लाल टुह-टुह भगवती सन

हुनकर आकृति देखैत बनैत छल। हम हुनका साष्टांग प्रणाम करए उठलहुँ कि मामाकेँ माथसँ हमर हाथ टकरा गेल। ओ हमरे लग सुतल छलाह। मामा अकचकाक उठलाह- “की भेल?”

"माए.." -एतबा बाजि हम बेसुध भए गेल रही। बैद बजाओल गेलाह। ओझा गुनी सेहो भेल। हम क्रमशः सामान्य होइत गेलहुँ। मुदा रहि-रहि कए माएक कहब मोन पड़ैत रहैत छल।

ओहि दिन इसकूलसँ आएल रही। दसमाक परिणाम आएल छल। हम प्रथम श्रेणीमे उतीर्ण केने रही सौंसे मामागाममे हल्ला भए गेल छल। मामाक सभ प्रशंसा कए रहल छल। हम असारापर बैसल अखबार देखैत रही। ताबे माएक आवाज सुनाइ पड़ल, जेना कहि रहल छथि- “श्रीकांत! हरि कतए अछि?"ताबते जोरकेँ हल्ला भेलैक। गाममे मारि भए गेल छलैक। कनीके कालमे मामा लहु-लुहान भेल पड़ल छलाह। हरि कोनो काजसँ बजार गेल छलाह। काज कए लौटि रहल छलाह। गामक लगीच आबि गेल छलाह कि चओरमे चारि-पाँचटा लठैतसभ घेरि लेलकनि आ दे दनादन,दे दनादन,लाठीक बरखा कए देलक। ओ तँ रच्छ भेल जे कनीके कालक बाद इसकूलमे छुट्टी भेल आ चटिआसभकेँ अबैत देखि ओ सभ हरिकेँ ओही हालतमे छोड़िकए भागि गेल। मास्टर साहेबकेँ रक्तरंजित देखि चटिआसभ चिकरए-भोकरए लागल। लग-पास बहुत लोकक करमान लागि गेल। इसकूलसँ मास्टरसभ दौड़ल अएलाह। सभ छगुन्तामे छल। हरि सन निर्विवाद लोकपर एहन घातक प्रहार ! एना किएक भेल? के केलक?

हरिक बहुतरास जथापात महराजक सिपहसलारसभ नीलाम कए बेचि देने छल। रहि-रहि कए ओकरा ई बात ध्यान अबैत रहैत छल। एहि प्रकारसँ दरिद्र भेनिहार कोनो ओ एसगरे नहि छल। गाम-गाम एहन लोकसभ भरल छल जकर एहने इतिहास छल। गाहे-बगाहे ओ अपन

आक्रोश व्यक्त करैत रहैत छलाह। एहिबातसँ कुपित भए जमींदारक लठैतसभ हुनकापर आक्रमण कए देलक।

हरिकेँ मारि कए तिनू बदमास लंक लागि कए भागि रहल छल। बीचमे धार छलैक। भादव मास छल। धारमे पानि भरल छल। धारमे कुदि गेल। ऊपरसँ मेघ बरसए लगलैक। तथापि ओसभ हेलि गेल आ पता नहि कतए जाए ऊपर भेल। पुलिस बहुत प्रयास केलकैक मुदा किओ नहि पकड़ाएल। पुलिससभ सभ घुड़ल आ हरिकेँ ओही जीप पर लादि कए अस्पताल लेने चलि गेल।

हरिकेँ ऊपर कएल गेल एहि घातक प्रहारक समाचार केना-ने-केना पुलिस मोहकमामे ऊपर धरि पहुँचि गेल। कहाँदनि जासूसी खबरि भेटलैक जे एहि घटनामे जन विद्रोहक संभावना अछि। एसपी, कलक्टर सभ दन-दन कए घटनास्थल पर पहुँचल। लोकसभकेँ पूछ-ताछ होबए लागल। क्यो कोनो निजगुत बात नहि कहैक। एसपी तमसा गेल आ जएह सामने अबैक तकरे पकड़ि कए थाना लेने चल गेल।

एहिबातसँ लोकमे आक्रोश आओर बढ़ि गेल जे पुलिसक आला अधिकारी निर्दोष लोकसभकेँ पकड़ि कए थानामे बंद कए देने अछि। गाम-गामसँ लोकसभ जुटए लागल। सभ मिलि कए थानाकेँ घेरि लेलक। ओहि भीड़मे कैटा अगिमुत्तूसभ छल। ओसभ गोली-बारुदसँ लएस छल। दना-दन फटक्का फुटबाक आबाज भेलैक आ पुलिससभ लंक लागि कए भागल। थाना धू-धू कए जरए लागल। एसपी, कलक्टर सभ फेल भए गेलाह। किछु काल लेल एहन लगलैक जेना गुंडासभक राज भए गेल। पुलिसलगमे कमे लोक छलैक। क्यो ई नहि सोचि सकल जे एकटा मामुली घटना एहन रुखि लए लेत। मुदा जे हेबाक से भए गेल रहैक।

एहि हंगामाक खबरि महराजक ओहिठाम धरि गेल। एहि

घटनाक्रमसभसँ ओ बहुत विचलित छलाह। की पता काल्हि जा कए ई सभ राज-काजमे संकट ने ठाढ़ करए" -महराज सोचथि। अस्तु, ओ अपन सिपहसलारसभकेँ सरकारक आला अधिकारीसभ लग पठओलथि जाहिसँ एकरा नीकसँ दबा देल जाए। महराजक प्रयास कारगर भेल। महराज आओर हुनकर सिपहसलारक सह पाबि सरकारी महकमाक रुखि बहुत आक्रामक भए गेल। दूपहर राति धरि पुलिसक आला अधिकारीसभक बैसार होइत रहल। निर्णय भेल जे गौँवासभकेँ सबक सिखाओल जाए। रते-राती पुलिसबलकेँ गामपर छापामारीक हेतु पठाओल गेल। दूपहर रातिमे पुलिस सभ दन-दन करैत गाममे प्रवेश केलक। लुच्चा,लफंगासभ तँ पहिने घर धए लेने छल। मुदा पुलिसकेँ तँ लोकसभकेँ सबक सिखेबाक रहैक से जतए जे भेटलैक तकरा पकड़ने चलि गेल। दूटा पुलिसक जीपमे एगारह गोटेकेँ पकड़ि कए सोझे एसपी लग लेने चलि गेल। एसपी साहेब प्रशन्न भेलाह। सभकेँ रातिभरि राजपुरामे पुलिस हाजतमे राखल गेल। ओकरासभ पर दुनियाँ भरिक धारा लगा देल गेल। देशद्रोहसँ लए हत्याक प्रयासक धारा लगाओल गेल। पुलिसक क्रोधक क्रूड़तम प्रतिफल सामने छल।

हालत तेहन छल जे क्यो- ककरो सुधि लेनहार नहि रहलैक। गाममे जे क्यो बाँचल छल सभ भागल। मात्र स्त्रीगण, बच्चा ओ वयोबृद्ध लोकसभ गाममे रहि गेलाह। कालू भगता सेहो अंदर छल। गाममे लोक सभ फुसफुसेबो करैक जे कहाँ गेलैक ओकर भगतै?तेहन छल तँ रोकि लैत पुलिसकेँ। बँचा लैत अपनोकेँ तखन ने?

मुदा कालू तँ जहलोमे अपन रस्ता पकड़ि लेलक। जहलक अधिकारीसभकेँ कोना-ने-कोना जाइते देरी मिला लेलक। साँझक नित्य ओकर भगतै होबए लागल। ओहूठाम कारनीसभक पाँति लागि गेल। की

जहल, की गाम, कालू भगत अपन भगतैसँ सभकेँ गुम्म केने छल।

ई बात एसपी साहेबकेँ कान धरि पहुँचल। पहुँचैक रहैक । एसपी जेलरकेँ बजओलक। ओहि समयमे आओर क्यो नहि छल।

"जहलमे की सभ भए रहल अछि?" -एसपी पुछलकैक।

"सरकार! झूठ नहि कहब। जहिआसँ ई भगता जहलमे आएल रोज रातिकँ हमर डेरामे भूत-प्रेत चक्कर लगा रहल अछि। काल्हि तँ हद्दे भए गेलैक?” -जेलर बाजल।

"की भेलैक? तोरा एहिना सभठाम भूते देखाइत रहैत छह? जहन नौकरी जेतह तखनसभ भूत झड़ि जेतह। अपन भाभटि जल्दी समटह।" -एतबा कहि एसपी साहेब जेलरकेँ ओतएसँ भगा देलकैक।

एसपी साहेबसँ डाँट खा कए जेलर अपन डेरा पहुँचले छल कि ओकर घरबाली सरकारी डेराक बाहरे ठाढ़ छलि।

"बाहर किएक ठाढ़ छी?" -जेलर बाजल।

"घर रहए जोकर नहि अछि"।

"की भेल?"

"अपने जा कए देखि लिअ।"

अंदर जाइत जेलरकेँ माथा घुमए लगलैक। सौंसे घरमे अक्कर-बक्कर भड़ल छलैक। ओछाएन पर की- की ने फेकल छलैक। ततबे नहि भानस धरि नहि छोड़ने छलैक। मुँहथरे पर मरल कौवा खसल छलैक। ई सभ देखि कए जेलरक माथा सुन्न भए गेलैक।

जेलर बाबूकेँ किछु नहि फुराइक। ओमहर एसपी साहेबक डंटा तँ एमहर भूत-प्रेतक आतंक। ओकरा तँ लगैक जे चिंतासँ हार्ट फेल कए

जेतैक। डेरामे घरबाली असगरे रहैत छलैक। जेलर बाबू अपने जेलक समस्यासभमे व्यस्त रहैत छलाह। जहिआसँ कालू भगता जहल आएल नित्य नव-नव फसाद होबए लागल। पुलिसक आला अधिकारी सेहो किंकर्तव्यविमूढ़ भए गेल रहथि। हुनकोसभकेँ मोनमे ई बात घुमए लागल- “किछु बात तँ छैक अन्यथा जेलर बाबू एतेक परेसान किएक रहितैक?" मुदा सामना-सामनी जखन जेलर होथि तँ ओसभ ओकरे डाँटि देथि, कोनो आओर रस्तो नहि छलनि। सरकारी काज तँ चलेबाक छलनि। मुदा कालू भगत एसगरे सभपर भारी पड़ि रहल छल। सभसँ खराप हालत तँ जेलरबाबूक रहैक। जेलमे कालू भगताक डर,घरमे घरनी परेसान आ बाहर अधिकारीसभ कस्तन केने। कखनोक तँ मोन ततेक उचटि जाइक जे होइक जे फाँसी झुलि जाए। फेर सम्हरए। डर होइक जे कहीं भूत-प्रेतक असर तँ नहि भए रहल अछि।

जेलरक कमजोरी कालू भगता बूझि गेल। ओ तँ लोकक मोन तारिलेबामे माहिर छल। रहि-रहि कए ओ जेलर बाबूकेँ डराबए लागल। हद तँ तखन भए गेल जखन जेलरक सामनेमे कालू भगता महिला वार्डक कैदीसभकेँ झाड़-फूक शुरु कए देलक आ ओ मूकदर्शक बनल रहल। कालू भगता नीकसँ ओकरा अपन चांगुरमे लए लेलकैक। कालक्रमे कालूक प्रभावमे पूरा जहलक कैदी सभ आबि गेल। महिला कैदीसभ तँ आगुए-आगुए रहैत छल। ककरो साहस नहि होइक जे कालू भगतकेँ टोक देत। के अनेरे अनिष्ट बेसाहति? जेलरबाबू रोज कालीमाताकेँ प्रार्थना करथि जे ई कैदीसभ छुटि जाए। ओकीलोसभकेँ यथासाध्य उत्साहित करथि, मुदा तेहन-तेहन धारासभ लागल छल जे ककरो जमानत नहि होइक। जेलर माथ ठोकि लिअए?

घरबालीकेँ साहस दैक। हनुमान चालीसाक कैटा किताबसभ

आनि कए सिरमामे राखि देलकैक। मुदा जेलरक घरबाली कोंढ़कैं कमजोर रहैक। ताहीबातक जेलरकैं चिंता रहैक। कहीं एहन ने होइक जे ओ ड्युटी करैत रहए आ घरबालीक संगे किछु अनिष्ट भए जाइक। तैं ओ सोचलक जे कालू भगताकैं मिला कए राखल जाए। ओकर घरबाली कैं किछु भए गेलैक तँ के काज देत? ❑

५

हमर मामा ककरा की बिगारने छलथिन जे हुनकर ई हाल कएलक?दिन-राति ओ अपन काजमे लागल रहैत छलाह। ककरोसँ कोनो मतलब नहि। एसगर छलाह। बिआह नहि केने रहथि। हमरे अपन संतान बूझि पालन-पोषण कए रहल छलाह। एहन निर्दोष आदमीकैं के मारलक आ किएक? ई सबाल सभक माथामे घुमि रहल छल। पुलिस तँ दोसरे लफरामे फँसि गेल। लुच्चा-लफंगासभ थाना जरा देलक। ओकरसभक पुलिससँ कोनो कुन्नह रहल हेतैक मुदा फल भोगलक सौंसे गौँआ? तेहन-तेहन धारा लगा देने रहैक जे जमानत हेबाक बाटे नहि रहैक। अनेरे लोकसभ जहलमे बंद छल। कतेकोकैं घर उजरए पर छलैक, कतेककैं उजरि गेलैक कारण कमासुतसभ जहलमे सड़ि रहल छलैक। के-ककरा देखितैक। गरीबक टोल छल। नेतासभ अबैक,बोल भरोस दैक आ घसकि जाइक। किओ कोनो ठोस काज नहि कए सकल। एहन हालतमे सौंसेगाम परेसानीक दौरसँ गुजरि रहल छल। जे गाममे बाँचल छल से सभ अबाक छल, माथ-कपार नोचि रहल छल। समाधान किछु नहि फुराइत छल। एतेक गोटे जहलमे छल मुदा असली अपराधी के कोनो पता नहि छल। मास्टर साहेबकैं के मारलक आ कथी लेल से अखन धरि पता नहि चलि सकल। प्रायः पुलिसोकैं एहिसँ कोनो खास मतलब नहि

रहैक। ओकरा तँ लोकसभसँ ओलि चुकेबाक रहैक आ तकर व्योंत सेहो भइए गेल छल। थाना जराएब बहुत महग पड़ल। एक-एक परिवारसँ कतेको गोटे बंद भए गेल छल। एकगोटेक तँ तीनपुस्त संगे जहलमे खिच्चरि खा रहल छल। समाधान ने पुलिसकेँ किछु फुराइक ने जहलमे बंद निर्दोष कैदीसभकेँ। कारण जखन एक बेर पुलिस लोकसभक खिलाफ झुठो केस कए देलक तँ ओकरा आपस कोन आधार पर लैत? अपने आफत भए जइतैक। नौकरी बचेबाक फिराकमे कतेको निर्दोष प्राणी सालभरिसँ जहलमे सड़ि रहल छल।

कालू भगते किछु करत। सभक आश वएह रहि गेल छल। जहलमे बंद सभ गौंवासभ ओकरा गोहरबैत रहैत छलैक। मुदा ओ तँ अपनेमे मस्त छल। जेलरकेँ डराकए काबू कए लेने छल। दिन-राति रंग-रभस करैत बीति रहल छल। एहन आनंद तँ ओकरा गामोमे नहि छलैक। भगतै चलि रहल छलैक। कारनीसभकेँ फूँकि रहल छल आ सभसँ बड़का बात जे जेलरकेँ काबू कए लेने छल। जहाँ जेलर एमहर-ओमहर केलक कि ओकर घरबालीकेँ केना-ने-केना तेहन कए डरबैत छल जे जेलर उल्टे पैरे कालू लग दोड़ैत छल। खुसामद करए लगैत छल। बाह रे जेलर बाबू!

ऊपरका अधिकारी सभकेँ किछु- किछु पता लगैक मुदा ओसभ काजमे ततेक व्यस्त रहैत छल जे एकटा जेलक समस्या लए बैसि तँ नहि सकैत छल। मासिक बैसारमे जेलर केँ फज्जति कए दैक। जेलर सभ सुनि लिअए आ बात फेर ओतहि रहि जाए।

मुदा ई हालत कतेक दिन धरि चलितैक। विचाराधीन कैदीसभकेँ ऊपर कोर्टमे सुनबाइ साल भरिसँ टलि रहल छल। मामिलामे कोनो प्रगति नहि होइक। अंतमे तंगभए जजसाहेब एसपीकेँ नोटिस कए देलथि। अगिला तारिखपर ओकरा कोर्टमे अएबाक आदेश भेल। आब तँ जेलर

बाबूक सीटी-पीटी गुम्म। घर पहुँचि कए चौकीपर धराम दए खसलाह।

रघु आ निशा कलकत्तामे एकहि कालेजमे पढ़ैत छल। निशाक रूप-रंग देखि कए रघु प्रभावित होइत गेल। निशाकेँ सेहो रघु पसिंद रहैक। दुनूगोटे बिआह करए चाहए मुदा परिवारक लोक नहि मानै। ताबते रघुकेँ राजपुरामे जेलरक नौकरी लागि गेलैक। ओ निशाकेँ लेने ओतए चलि आएल आ कालीमंदिरमे बिआह कए लेलक। निशाक पढ़ाइ-लिखाइक संगे संगीतमे बहुत महारत रहैक। कहिओ-कहिओ राजपुरामे आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रममे ओ गबैत छलीह। हुनकर गायनक प्रशंसक महराजो छलाह। कै बेर महराजक संगीत सभामे सेहो ओ आमंत्रित भेलीह। महराज तहिएसँ हुनकर प्रशंसक रहथि। ओ चाहथि जे कहुना निशाकेँ राजेक हातामे राखि ली मुदा ताहि हेतु रघु तैयार नहि होथि। अपना भरि जेलर बाबू निशापर बहुत ध्यान दैक मुदा जहिआसँ ई कांड भेलैक ओकर सुधि-बुधि हराएल रहैक।

ओमहर कैदीसभ अपने तंग छल। मुदा असली मजा तँ कालू भगता लए रहल छल। मजेदार गप्प तँ तखन भेल जखन साँझमे कारनीक पाँतिमे जेलर स्वयं आबि कए ठाढ़ भए गेल। जेलरकेँ एना एकटंग्गा देने ठाढ़ देखि जहलक पुलिससभ गुम्म छल। मुदा बाजति की? अपन अधिकारीक हाल पर गुम्म छल।

साँझमे भगतै होइत रहैक। जेलर बाबूकेँ एकटंगा देने देखि सभसँ पहिने ओकरे गोहार लगओलक। पुछलकैक- “की भेलौक?

"हमर जान खतरामे अछि। किछु करिऔक, नहि तँ हमर घरबाली बिलटि जाएत।"

"भेलौ की?-भगता बाजल।

“अहाँसँ की छिपल अछि? हमरा बचा लिअ।"

कालू भगता छाउर छिटलकैक आ कहलकै जे तोहर समस्या बहुत जहीन छौक। असगरमे झड़बए पड़तौक। बहुत खतरनाक जोगिन पाछा पड़ि गेल छौक।

जेलर सष्टांग दंडबत भए गेल। सौंसे जेलमे हरकंप मचि गेल। जहलक पुलिससभ जेलरकेँ मोने- मोन गरिआबैत छल। कैदीसभक सेहो चकबिदरो लागल छल। सभ मोने मोन कहैत छल- “एहन तमासा नहि देखलिऐक। धन कहीं कालू भगताकेँ जे जेलरोकेँ हवा निकालि देलक।"

जेलरक हेतु अलगसँ भगतै करबाक ओरिआन ओकरे घरमे दुपहर रातिक भेलैक। जहलसँ जेलरक कारसँ कालू भगता जेलरक सरकारी डेरा पहुँचल। ओतए जेलरक घरबालीकेँ देखितहि छगुन्तामे पड़ि गेल। एहन सुन्दरि..!

जेलरक घरबाली छलहो हजारमे एक। गोर-नार ,६ फुट नाम, हरिअर-हरिअर आँखि,चाकर माथ, सभ मिलि लगैक जेना स्वर्गक परी होइक। कालू एकटक ओकरे देखैत रहि गेल। जेलर भगतैक समानसभक जोगारमे लागल छल आ कालू भगता दोसरे दुनिआँमे मगन छल। जेलर पूजाकसभ वस्तु लए आएल। ओकरा देखिते कालू भगल शुरु केलक।

"मोसकिल छौक एकरा बचेनाइ। पिशाँच लागि गेल छैक।"

"जे करबै से अहीं करबैक। हम तँ अहाँक शरणमे छी।"

"पहिने की करैत रहलह? आब तँ मामला हाथसँ निकलि गेल अछि।"

"की भेलैक?"

"हम की कहबौक, इएह ले, अपने बकतौक।"

आओर ओ बकए लगलीह-

"हमरा किओ आओर नहि बचा सकैत अछि। भगते हमर जान बचाओत... ।"

ई बाजि कए ओ बेहोश भए गेलि। भगता की केलकै, कोन मंत्र पढ़लकैक जे ओकर बाद निशा ओकरे बात बूझैक। जेलर बहुत चिकरल- “निशा! निशा! "

कोनो जबाब नहि आएल। निशा निःशव्द ओहीठाम भूलंठित भए गेलि। जेलर बाबूक परेसानीक अंते नहि छल। एमहर घरबाली बेहोश छलैक ओमहर किओ एसपी साहेबकेँ सिकाइत कए देलकैक जे जेलसँ कालू भगत गायब अछि।

जेलमे छापा पड़ि गेल। आब की होएत?-से सोचि-सोचि कए जेलर परेसान छल, ताबे एसपी साहेबक फोन आबि गेलैक। जेलर इएह-ले वएह-ले ओतएसँ जेल बिदा भए गेल। आ भगता...?

जेलरकेँ देखिते एसपी साहेब चिचिआ उटलैक- “रघु। ई की भए रहल अछि?तूँ जेलक माहौलकेँ चौपट कए देलह अछि। आब तोहर नौकरी भगवानो नहि बचा सकैत अछि।"

"माफ कएल जाए सरकार!"

"तोहर गलती अक्षम्य छह। तोरा जेलर राखि कए हम अपन नौकरी अपने खा जाउ। ई नहि भए सकैत अछि। तोरा बारंबार चेतौनी दैत रहलिअह, मुदा तूँ सुधरबाक बजाए उल्टे रस्ता धेने छह। तखन जे हेबाक से हेबे करत। भए सकैत अछि तोरा जहलो जाए पड़ए।"

जेलरक हालत देखवए जोगर छल। ओकरा मुँहसँ बकार नहि निकलि रहल छल। तथापि प्रयास कए ओ बाजल- “सरकार देखि नहि रहल छिऐक?"

" कथी देखबैक? एहिठाम की छैक जे देखबैक।"एसपी साहेब एतबा बाजल छलाह कि जेलर बेहोश भए ठामहि खसल। ऐसपीक सामने कालू भगता सद्यः ठाढ़ छल।

"तूँ कतए चल गेल रही?-एसपी साहेब बजलाह।

"हम तँ सदरिकाल एतहि छी सरकार।"

"झूठ, झूठ।" -एसपी साहेब चिचिआ उठलाह।

"अहाँकेँ जकरेपर विश्वास होअए तकरे सँ पुछारी कए सकैत छी, मुदा एहि हेतु जेलर बाबूकेँ प्रताड़ित नहि कएल जाए। ओ एकदम निर्दोष छथि। जाने भगवान।" -कालू भगता एसपी साहेबकेँ गोहरबैत बाजल। एसपी साहेब सौंसे जेल घुमि अएलाह, एकटा कैदी कालूक खिलाफ नहि बाजल। एसपीकेँ ठकबिदरो लागि गेल। सोचए लगलाह- “आखिर सिकाइत के केलक? जौं सिकाइत झूठ छल तैयो किछु तँ कारण रहल हेतैक।“मुदा किछु प्रमाण नहि भेटि रहल छलैक। हारि मानिकए एसपी साहेब ओतएसँ अपन डेरापर आबि गेलाह।

जेलरकेँ कालू भगताकेँ जेलमे देखि छगुन्ता लागि गेलैक। सोचए लागल- “ई कोना एतए आबि गेल?" कालू ओकर मोनक बातकेँ तारि गेल आ जोरसँ ठहाका पाड़लक। जेलरक मुँह देखएबला छल।

ओ जहलसँ डेरा पहुँचल तँ कालू भगताकेँ बाहर निकलैत देखलक। ओकर माथामे किछु नहि सन्हिआ रहल छलैक। सत्य की अछि?जे ओ जहलमे देखलक से आ कि जे ओ अखन देखि रहल अछि? दुनू घटना प्रत्यक्ष देखलक। अचानक ओकरा चिचिआ गेलैक- “निशा,निशा।"

"की बात”?- निशा हँसि रहल छलि।

“कालू कतए छल?"

"जतए अहाँ छोड़ि गेल रहिऐक।"

निशाक मुँहे ई सुनि जेना ओकरा बकोर लागि गेलैक। मुदा आब की? जेलर बाबू निशा दिस टुकुर-टुकुर देखैत रहि गेलाह। जेलर कैं ओहि राति निन्न नहि भेलैक। भरि राति टुकुर-टुकुर तकैत रहि गेल। एहि करोटसँ ओहि करोट करैत रहल। मुदा निशा फोंफ काटि रहल छलि। एतेक गहीर निन्नमे ओ कै दिनक बाद देखाइत छलीह। ताहि बातसँ रघुकैं खने चिंता होइक,खने मोनमे चैनो लगैक। ओ सोचए लागल- “किछु बात तँ छैक एहि भगतामे जकर असर सद्यः देखा रहल अछि। आइ कतेको दिनपर निशा चैन छथि, अन्यथा रातिभरि कछमछ करैत बीति जाइत छलनि। अपने तँ परेसान रहिते छलीह, हमरो बेचैन केने रहथि।“

भोर भेलैक। अखबारबला अखबार फेकलकैक। दूधबला दूध दए गेल, काजबाली काज करए आबि गेलि, मुदा निशाक निन्न नहि टुटलनि। बेचारे जेलर बाबूकैं ड्युटी जेबाक रहनि। ऊपरसँ राति भरिक जगरना छलनि। अपने चाह बनेलाह। निशाकैं पड़ले देखि नहि रहल भेलनि। बाजि उठलाह-

“ऐ सुनैत छी। हम आफिस जा रहल छी। घर बन्द कए लिअ।"

निशा करोट बदललीह, मुदा उठि नहि सकलीह। जेलरबाबू फेर किछु बजलाह। केबारकैं अपनेसँ सटा देलखिन आ आगा बढ़ि गेलाह।

जहल जाइत काल जेलर बाबू कैं जेलसँ फोन आएल। कैदीसभकैं आइ कोर्टमे पेशी छलैक। अखन धरि पुलिसक गाड़ी नहि आएल छलैक। पछिलो तारिखपर देरीसँ कोर्ट पहुँचबाक कारण जेलरकैं जज बहुत फज्जति केने रहैक। मुदा ओ की करैत?बिना पुलिस सुरक्षाकैं कैदिसभकैं जेलसँ बाहर तँ नहि लए जा सकैत छल। खैर!कनी कालमे पुलिस सदल-

बल पहुँचि गेलैक।

थाना जरेबाक कांडक बिचाराधीन कैदीसभक जमानत अर्जीपर सुनबाइ भेलैक। सरकारी ओकील जमानतक बिरोध करैत रहलक मुदा जज ककरो नहि सुनलकैक। एगारहो विचाराधीन कैदीकेँ जमानत दए देलक। कैदीसभक खुशीक ठेकान नहि छल। सालभरिसँ एहि दिनक प्रतीक्षा कए रहल छल। बेवजह जेलमे सड़ि रहल छल। कहबी छैक जे खसी मारि घरबैया खाए आ हत्या लेने वाभन जाए। सएह भए रहल छल। पुलिस प्रशासनपर आला अधिकारीसभक दवाव पड़ल रहैक आ ओसभ अपना-आपकेँ बचेबाक हेतु जे जतए जाहि हालतमे भेटलैक तकरा पकड़ने चलि गेल। सभ चकित रहि गेल। ककरो कोनो सुनबाइ नहि भेलैक। थानाकेँ जराएब भारी परलैक। केलक किओ,भरलक किओ।

सालभरिक बाद सभगोटे गाम पहुँचल तँ सौंसेगाममे खुशीक वातावरण पसरि गेल। सभ नाच-गान करए लागल। सत्य नारायण भगवानक पूजा राखल गेल। ढ़ोल, हरमुनिआ, झालि, मृदंग समेत तमाम लोकसभ भगवानक भजन गाबैत पूजा-पाठ संपन्न केलाह। एतेक दिनक बाद लोटन साँझमे जखन पोखरि दिस गेल तँ संयोगसँ हमरे गाछीमे पहुँचि गेल। पुरनाबात सभ बिसरा गेल रहैक। पोखरि दिस बैसले छल कि गाछक फुनगिपरसँ ओहिना ककरो कानबाक अबाज सुनएमे अएलैक। लोटन इएह-ले वएह-ले भागल। ढ़ेको बान्हबाक होश नहि रहलैक। लोटा कतए खसलैक सेहो नहि बूझि सकल।

लोटन बेसुध पड़ल छल। ओसारापर ओकरा लोकसभ घेरने छल। जकरा जे उपाय फुराइक से करैत छल। मुदा ओ टस सँ मस नहि होइत छल। देह बोखारसँ जरि रहल छल। मुँहसँ लार खसि रहल छल। ककरो

किछु नहि बुझा रहल छल जे आखिर ओकरा भेलैक की? एहन परिस्थितिमे गाममे एकमात्र समाधान छल-कालू भगता। मुदा ओ गाममे नहि छल। ओहि दिन जमानत भेलाकबाद सभगोटे आपस आबि गेल। कालू कहलकैक जे ओ सिमरिआ जा रहल अछि। गंगास्नान केलाक बादे गाममे टपत। तकरो आइ तीन दिन भए गेल मुदा ओ गाम नहि पहुँचल।

लोटनक हालत खराब भेल जा रहल छल। आङनमे लोक करमान लागल छल कि कतहुँसँ ढेपक बरखा होबए लागल। की-कहाँ सभ खसए लागल। लोकसभ इएह-ले वएह-ले भागल। सभक मुँहमे एक्केटा गप्प रहैक- “भूतक प्रकोप छैक।" कनीकालमे जखन भीड़ कम भेल आ आङनमे हवा सिहकल तँ लोटन आँखि खोललक।

घरक ऊपरसँ मखना जा रहल छल। लोटनकेँ देखि कए हँसल आ मोने-मोने बड़बड़ाइत आगा बढ़ि गेल- "बचि गेलह।"

ओहि दिन मखना यमलोक खाली हाथ लौटि गेल। यमराजक ओतए पेशगी भेलैक। मखना थर-थर कपैत ठाढ़ छल कि यम महराज बमकलाह-

" लोटन लग जेबाक की औचित्य छल?"

"गलती भए गेलैक सरकार!"

“की सरकार, सरकार कए रहल छैं? एहि तरहेँ तोहर काज नहि चलि सकैत छौक।सावधान भए जो।" यमराजक एहन सख्त रुखि देखि मखना काँपि गेल।

यमराज खतिआओन मंगौलाह तँ स्पष्ट भेल जे एखन तँ निशाक प्राण खिचबाक रहैक। एहन भारी गलती आखिर भेल कोना? ई सभ विचार-विमर्श चलिए रहल छल कि मखना भागल-भागल यमराजक

दोसर रेखा पत्नी लग चल गेल। ओकरा एना अफसिआँत देखि ओ पुछलखिन- “बात की अछि? एना किएक हाँफि रहल छह?"

मखना हाथ जोरि यमराज दिस इसारा केलक। ताबते यमराजजी ओतहि आबि गेल छलाह।❑

६

ओहि राति निशा भरि राति कुहरैत रहलि। रहि-रहि कए विचित्र आबाज निकालए लगैक। जेलर परेसान भए गेल। ओकरा कालू भगता ध्यानमे अएलैक। कालूक भगतै असरदार भेल रहैक। निशामे चमत्कारिक परिवर्तन ओ आनएमे सफल भेल रहए। मुदा आब तँ ओ चल गेल छल। किछु पता-ठेकाना सेहो नहि देने छलैक। की केना करए से जेलर बाबूकेँ फुरेबे नहि करैक। पड़ोसमे एकटा बंगाली डाक्टर रहैक। ओकरासँ पूर्व परिचय रहैक। दौड़ल-दौड़ल ओ बंगाली डाक्टरकेँ बजा अनलक। बेरि-बेरि आला लगा कए ओ देखैक मुदा सभ चीज ठीके बुझाइक। बीपी सामान्य छलैक, हृदयक धरकन सेहो ठीक रहैक, होशोमे रहैक तखन समस्या की रहैक? ओहो भुतिआ गेल। किछु नहि बूझि सकल। कहलक-

“ई तँ बड़ ओझराएल मामला लगैत अछि। एकर तँ सभ किछु सामान्य लगैत छैक, तखन एकर ब्यवहार एहन किएक भए जाइत छैक?"

जेलर बाबू की कहितैक? बात-बातमे कालू भगताक चर्च भए गेलैक। बंगाली डाक्टरक माथा ठनकल। ओकरा भूत-प्रेतमे विश्वास नहि छलैक मुदा जे सद्यः देखि रहल छल तकर की समाधान दैत? ओकर

सभटा ज्ञान हरा गेल छलैक। कहलकैक- “हम हारि गेलहुँ जेलर बाबू। एहन मरीज आइ धरि नहि देखने छलिऐक। एकरा कोनो बड़का डाक्टर लग लए जाउ। मामला बहुत ओझराएल बुझा रहल अछि। “ध्यान राखब" -से कहि ओ बिदा भए गेल।

जेलर बाबू माथ पकरि कए बैसि गेल। बंगाली डाक्टरकेँ जाइते निशाक चिकरब-भोकरब फेर जोर पकड़लकैक। जोर-जोरसँ मूड़ी हिलाबए लागलि। जेलरकेँ देखिते केकिआए लागैत छलि। जेलर चिंतासँ ततेक परेसान भए गेल जे लगैक जेना माथा फाटि जाएत। भोर होबए पर छल।कौवा डाक देलक। फरीच भए गेल रहैक। जेलर बाबूकेँ चाहक तलब धेलकैक। चाह के बना कए दितैक? घरनी बेसुध पड़ल रहैक। डाक्टरो किछु नहि कए सकल। आओर ओझरा कए चल गेल। चाहक अमल ओ नहि रोकि सकल। अपनेसँ चुल्हा पजारलक। केटलीमे पानि,दुध,चाहक पत्ती,चिन्नी सभ एकहि बेर धए देलक आ आँचकेँ तेज कए देलक। दूइए मिनटमे चाह उफनाए लगलैक। जाबे साकंछ होइत-होइत ताबे आधा चाह उफनि कए खसि पड़लैक। कहुना कए बाँचल चाहकेँ कपमे धेलक आ पिबाक हेतु तत्पर भेल कि बाहर ककरो आबाज सुनेलैक।

"जय भवानी!जय भवानी!”

जेलर बाबू चाह लेने घरक फटक खोलि कए बाहर भेलाह।

"ई तँ कालू लागि रहल अछि? मुदा चिन्हा नहि रहल अछि। एकर चालि-ढ़ालि एकहि दिनमे एतेक कोना बदलि गेल?"

फेर सोचलक जे भए सकैत अछि जे धोखा भए रहल हो। राति भरिक जगरनाक कारण माथामे दुविधा भए गेल हो। तेँ पुछलकैक-

"अहाँ के छी? ककरासँ भेंट करबाक अछि?"

एतबा सुनतहि ओ चिकरए लागल-

"बूड़ि कहाँकेँ? एकहि दिनमे बिसरि गेलह। तेँ तँ तोहर ई हाल छौक।"

एतबा बाजि ओ अपन तृशूल झमकओलक आ कमंडलसँ जल निकालि जेलर बाबूक ऊपर फेकए लागल आ कहलक-

“अखने तोरा बुझेतह जे हम के छी।"

जेलर बाबू चाह पिनाइ छोड़ि दंडवत भए गेल।

“गलती भए गेल। हम अहाँकेँ नहि चिन्हि सकलहुँ। मुदा एकहि दिनमे अहाँक रूप एतेक बदलि गेल?"

“खबरदार! जे हमर रूप-रंग पर टोका-टाकी केलह। तोहर घरबालीक जान जा रहल छौक आ तूँ झौहर खेला रहल छैं?"

"झौहर? राति भरि जागल छी। डाक्टरकेँ सेहो बजओने रहिऐक। मुदा किछु फएदा नहि भेलैक उल्टे आओर मोन खराप भए गेलैक। डाक्टरो थाकि कए चल गेल।"

"मोसकिलसँ ई बचलौक अछि। मरवना यमपाश लए घुमि रहल छौक। सम्हरि जो।"

"की कहलिऐक? यमपाश..। बाप रे बाप...। आब की होएत? ई मुष्टंग के अछि?"

"सभटा तोही बूझि जेबही तँ भगता की करतैक?"

"कहुना कए एकर जान बचा दिऔक। जे कहब से करब।"

"बहुत देरी भए गेलौक। मोसकिल काज लागि रहल अछि।"

ई सभ दुनू गोटेमे गप्प भइए रहल छल कि जेलर बाबूक चारपर किछु बिचित्र सन आबाज भेलैक। ओ घर दिस दौड़ल। निशा बेहोश छलैक। छाती दिस तकलक। ऊपर-नीचा भए रहल छलैक। साँस चलि रहल छलैक। आब तँ ओ ठोहि पाड़ि कए कानए लागल।

जेलर बाबूक कानब सुनि कए कालू भगता अंदर आबि गेल आ ओकरा चार दिस इसारा केलकैक। मुदा जेलर बाबूकेँ किछु नहि देखा रहल छल। मुदा कालू साफे देखि रहल छल। मखना यमपाश फेकए हेतु तैयार छल मुदा ओकरा कोडवर्डे बिसरा गेल छलैक। यमपाश खुजिए नहि रहल छल। घामे-पसिने ओ परेसान छल। ओकर ई हाल देखि कालू भगताकेँ नहि रहल गेलैक। ओ चिचिआ उठल- “तोरा किओ आओर नहि भेटि रहल छह जे वारंबार एहीठामक चक्कर लगा रहल छह?"

"तूँ हमरा लोकनिक कारबारमे हस्तक्षेप केनिहार के?"

एतबामे मखनाकेँ फोनपर घंटी बाजए लागल। देखैत अछि जे फोनमे लिखल अछि- “यमराज"

ओकर सीटीपीटी गुम्म रहैक। कोडवर्ड बिसरा जेबाक कारण यमपाश चलि नहि सकलैक आ निशाक प्राण खिचबाक समय बीति गेल। आब की होएत? मखना घामे-पसीने भीजि गेल छल। ताबे ओकर मोबाइलक घंटी कै बेरि बाजलैक। ओकरा ऊपर बजाहटि भए गेलैक। ओ लंक लागि कए भागल। ई सभ कालू भगता देखि रहल छल। आ भभा कए हँसए लागल।

"फेर ई बचि गेल... ।”

भेलैक ई जे कोडवर्ड बिसरि गेलाक बाद मखना गलत-सलत कोड लगाबए लागल जाहिसँ यमलोकक नेटवर्क जाम भए गेलैक। यमलोकमे

आपत्तिकालीन घंटी घन-घनाए लागल। यमराज तँ पहिनेसँ ओकरासँ तमसाएल छलाहे। एहिबेरक घटनाक बाद तँ ओ किछु करएपर अड़ल रहथि। मुदा जहन घैलक पेनी फुटल होइक तँ पानि अटकत कोना? इएह हाल छलनि यमराजक। मखना छल फेरल लोक। ओ यमराजक पत्नीकेँ तेहनक पोटने छल जे यमराज फिस्स भए जाइत छलाह। एहूबेर इएह भेल। ओ सोझे यमपत्नी रेखा लग पहुँचल आ सिसकी भरए लागल।

की भेल?की भेल?" यमपत्नी रेखा पुछलखिन।

“की कहू? यमराजकेँ अहाँपर सक रहैत छनि। ताहि चलते हमरो जान लेबए पर लागल छथि। कोनो मौका बाम नहि जाए दैत छथि।"

"भेलैक की, से तँ बाजू?"

मखना सभटा बात नून-तेल लगाए कहि देलक आ इसारा पबतहि ओतएसँ घसकि गेल। यमराज पनपिआइ करए घर अएलाह तँ देखैत छथि जे यमपत्नी जमीनपर अखरेमे सुतल छथि। मुँह झपने छथि आ कानि रहल छथि। यमराजजी मोसकिलमे पड़ि गेलाह “आब की भेल?”

"रेखा! रेखा!" कै बेर आबाज देलखिन मुदा कोनो जबाब नहि भेटलनि। मामला गड़बड़ाइत देखि ओ रेखाक सिरमामे बैसि हुनका मनबएमे लागि गेलाह। मखना घरक खिड़की लग नुका कए सभटा दृश्य देखि रहल छल आ मोने मोने खुश भए रहल छल।

"चललाह हमरे ठीक करए। आब सम्हारथु ..." बड़बड़ाइत छल कि यमराजक नजरि ओकरापर पड़ल। ओ चिकरि उठलाह-

"दुष्ट...सावधान...।"

ई सुनितहि मखना इएह-ले वएह-ले भागल।❑

७

मास्टर साहेबक संग भेल मारि-पीटक कए साल बीति गेल मुदा

पुलिस ककरो पकड़ि नहि सकल। असलमे थानाकांडमे सभ तेना ने ओझरा गेल जे ककरो एहि मामलाक सुधि नहि रहलैक। फेर मास्टर छलाह मामूली आदमी। आगा नाथ ने पाछा पगहा। ककरा की कहितथि? जान बाँचि गेलनि सएह बहुत। फेर अपन काजमे लागि गेलाह। इसकूल जाथि आ विद्यार्थीसभकेँ खूब मेहनतिसँ पढ़ाबथि। हुनका ताहिबातसँ इलाकामे यश रहनि। गाम-गामक विद्यार्थीसभ पढ़बाक हेतु हुनकर डेरा पर आएल करथि। ककरोसँ पाइ नहि लैत छलखिन।

हम मैट्रिकक परीक्षा प्रथम श्रेणीमे पास भए गेल रही। मुदा आगा की कएल जाए से फुरेबे नहि करए। भीतर इच्छा रहए जे आगा पढ़ी मुदा तकर कोनो जोगारे नहि छल। घरक हालत तेहने छल तहन तँ रहि गेलाह मामा। ओहो सालभरि इलाजक चक्करमे परेसान छलाह। आब किछु स्थिर भेलाह। गामक लोक सभ से जमानत पर छुटि कए आबि गेल छल।

एकदिन अहिना बैसल रही की मामा कहलाह- “श्रीकांत् हमरा मोन होइत अछि जे तूँ आगा पढ़ाइ करह। सालभरि समय तँ तोहर बर्वादे भए गेलह। मुदा आब हालत ठीक अछि। हमरा जे पार लागत से मदति करबे करबाह। संगे गामोसँ किछु मदतिक जोगार करबाक प्रयास करब।"

"हम तँ स्वयं पढ़बाक इच्छुक छी मुदा अहाँक हालत देखि कए साहस नहि भेल।" -हम कहलिअनि।

"कोनो बात नहि। जे बित गेलैक से बित गेलैक। आगाक सोचल जाए। काल्हि हम दुनू गोटे पुरबारिगाम चलब। देखैत छी, ओतए की हाल अछि।"

"ठीक छै।"❑

८

मामासंगे हम अपन गाम पुरबारि टोल पहुँचलहुँ। हमर मामागाम पछबारि टोल हमर गामसँ सटले छल। पैरे दस मिनटक रस्ता छलैक तथापि ओतए कतेको सालक बाद जा रहल छलहुँ। माता-पिता नहि रहलासँ गामक कोनो आकर्षण नहि रहि गेल छल। हमर जथापात दिआदसभ हथिआ चुकल रहथि। ओसभ निश्चिन्त रहथि जे भने ई चल गेल। गाम पहुँचि कए अपन फूसक घरकेँ ताकए लगलहुँ। नामो निसान खतम छल।

घरारीकेँ चारूकातसँ घेरि कए तरकारी रोपि देल गेल छल। मामासंगे हमरा देखि हमर काका मुँह घुमा लेलाह। जेना कोनो मतलब नहि होनि। हमर घरक लगीचमे नव-नव घर बनि गेल छल। कहि नहि के सभ ओतए आबि कए बसि गेल छलाह आ कि पुरने घरकेँ फेरसँ बनाओल गेल छल? तरह-तरहकेँ बातसभ मोनमे अबैत रहल। जखन काका नहिए टोकलाह तँ हमही आगा बढ़लहुँ- "काका गोर लगैत छी"

"के छी?"

"अहाँक भातीज, श्रीकान्त।"

"एतेक दिन पर कतएसँ ऊपर भेलह?"

से कहि तेना ने मुँह घुमओलथि जेना हमरासँ कोनो बहुत पैघ अपराध भए गेल हो। मामा सभटा बात देखि-सुनि रहल छलाह। हुनका तँ काका टोकबो नहि केलखिन। एहन हालतमे की उमीद राखल जा सकैत छल? तथापि हमर मामा कहलखिन- "हमरा नहि चिन्हलहुँ? हम छी हरि, श्रीकान्तक मामा।"

"चिन्हव किएक नहि, मुदा अहाँ तँ आएब-जाएब बंद कए देलहुँ,

कतेक साल पर आइ कोना मोन पड़लहुँ?"

हमर काका महराजक जेठरैयत रहथि। महराजक सिपहसलारसबसँ जान पहचान रहनि। पुलिसमे सेहो जान-पहचान छलनि। ताहिबातक बहुत घमंड रहनि। जकरे -तकरे पुलिस, थानाक धमकी दैत रहितथि। हुनकर नाम छलनि देवीकान्त मुदा गौंवासभ देबू कहनि। ओना ओ गाममे चर्चित छलाह तकर प्रमुख कारण रहैत जे ओ किछु झार-फूक सेहो करथि आ कालू भगतासँ बहुत गहींर दोस्ती रहनि। हमर पिता तँ कमे बएसमे मरि गेलाह। हम नेने रही। जे किछु चास-बास छल सभ पर हमर काका दखल कए लेलाह आ तेहनक निश्चिन्त भए गेलाह जेना हम जीविते नहि होइ।

कनी काल हम आ मामा अहिना ठाढ़े रही की कालूभगता कतहुँ सँ आएल।

"मामा गोर लगैत छी।"

"नीके रहह। कतएसँ आबि रहल छह?"

"अहाँकेँ तँ सभ बात बूझले होएत।"

"की बात?"

"साल भरिसँ जहलमे बंद छलहुँ। मोसकिलसँ छुटलहुँ अछि।"

"बहुत दिनपर भेंट भेल अछि।"

“आउ ने, चैन सँ बतिआएब।” -से कहि कालू भगता अपन घर दिस बढ़ि गेल। हम आ मामा ठाढ़े रही। काका बैसबो लेल नहि कहलाह। उल्टे मोनमे तामस रहनि जे हमसभ किएक अएलहुँ? जतए छलहुँ ततए छलहुँ,एहिठाम आबए के कोन काज?

जखन काका अपने किछु नहिए पुछलाह तँ हमहि कहलिअनि-

“मैट्रिक पास कए गेलहुँ। सालभरिसँ बैसल छी। सोचि रहल छी

जे आगा पढ़ाइ हेतु नाम लिखाबी। मुदा टाकाक जोगार नहि भए रहल अछि।"

एतेक बात सुनितहि ओ पाछु घुमलाह आ लोटा उठओने कलम दिस बिदा भए गेलाह। कोनो जबाब नहि देलाह। किछु आश्वासन नहि। हमर मामाकेँ नहि रहल गेलनि। ओ तमसाकए बजलाह-

"अहाँक भातिज किछु कहि रहल छथि।"

"से की?"

"ओकर हिस्साक खेत छैक तकरा बेचि कए ओकरा मदति कए दिऔक।"

"कोन खेतक गप्प कए रहल छी?"

"पैत्रिक खेत-पथारमे आधाक ओहो हकदार अछि। एखन ओकरा जरुरत छैक, पढ़ाइ करक छैक। अहाँकेँ स्वयं सोचबाक चाही। "

एतेक बात ओ बजने छलाह कि हमर काका हाथसँ लोटा हुनकापर फेकलाह। रच्छ भेल जे ओ माथ छिप लेलाह नहि तँ पता नहि की होइत? मामाकेँ नहि रहल गेलनि। चिकरए-भोकरए लगलाह। ताबते हमर पितिऔत लोटन सेहो आबि गेल आ मामाकेँ गट्टा धए दरबाजा परसँ बाहर जेबाक हेतु संकेत केलक। ओहिठाम कतेको गोटे जमा भए गेल छलाह, मुदा क्यो किछु नहि बाजल। हालत काबूसँ बाहर होइत देखि हमहीं मामाकेँ शांत केलहुँ आ आपस मामागाम बिदा भए गेलहुँ।

गामसँ बहराइत अपन गाछी बाटे जाइत रही की माएक सारा देखाएल। पैर थकमका गेल। आँखिसँ नोर झर-झर खसए लागल। मामा बूझि गेलाह। हमर हाथ पकड़ि लेलथि आ कहए लगलाह-

"चिंता नहि करह। तोरा भगवान मदति करथुन। "

एतबा बात ओ कहने छलाह कि सिनुरिआ गाछ हिलए लागल आ

धप्प दए हमर दहिना पैर लग किछु खसल। मामा रुकए कहलाह-ताबे तँ हम ओकरा उठा चुकल छलहुँ। पोटरी कसि कए बान्हल छल। ऊपरसँ आबाज भेल-

"एहि पोटरीकेँ मामागाम पहुँचि कए खोलिअह।"❑

९

हम दुनू गोटे पोटरीकेँ कान्हतर दबने डेगारि कए अपन टोल दिस जाइत छलहुँ कि फटकिएसँ कालू भगता आबाज देलकनि-

"मामा! मामा! बिना भेंट केनहि चलि अएलहुँ।"

मुदा मामा अन्ठा देलखिन आ आगा बढ़ैत रहलाह। कनीके कालमे अपन दरबाजापर पहुँचलाह। ओहि पोटरीकेँ अंदर लए गेलाह। दुनू गोटे मिलिकए ओकरा खोलए लगलहुँ। पोटरि खोलितहि चम-चम करैत कैटा सोनाक सिक्कासभ देखाएल। मामा तँ डरा गेलाह जे ई सभ आएल कतएसँ मुदा हमही हुनका बुझा-सुझा कए ओहि सिक्कासभकेँ सम्हारि कए रखलहुँ। बीसटा सोनाक सिक्का-सोचिए कए मोनमे आश्चर्य होइत छल। हम कहलिअनि-

"ई माएक आशीर्वाद थिक।"

"आब किछु सोचबाक काज नहि। तुरंत अपन नाम कालेजमे लिखा लएह।"

मामाक बात हमरो पसिन्द भेल। ई गप्प-सप्प करिते छलहुँ कि कालू भगता मामाक ओहिठाम पहुँचि गेल। मामा मोने-मोन सोचए लगलाह- "ई किएक पछोड़ केने अछि?"

दरबाजापर कालू जोर-जोरसँ आवाज लगा रहल छल-

"बिना भेंट केनहि चलि अएलहुँ। एतेक दिनपर भेंट भेल छल। बहुत रास गप्प-सप्प करबाक छल।"

"की कहैत छी? देबु ततेक हल्ला करए लगलाह जे ओहिठामसँ जल्दिए चलि अएलहुँ।"

"बात की छैक?"

“बात की रहतैक? कहलिअनि जे श्रीकांत पढ़ए चाहैत छथि। ताहि हेतु किछु टाकाक जोगार करक छैक से हुनकर हिस्साक जमीन बेचए चाहैत छी। एतबा सुनितहि ओ हमरा ऊपर लोटा फेकि देलाह। संयोगसँ बचि गेलहुँ नहि तँ कपार दू टूक भए जाइत।

"एहि मामलामे अहाँ एसगर नहि छी। हमसभ अहाँक संग छी।"

कालू भगताकेँ बैसबाक आग्रह केलहुँ। ताबे चाह बनि गेल छल। चाह पिबैत-पिबैत ओ अपन खिस्सासभ कहए लागल।

कालू गप्प-सप्प शुरुए केने छल कि ओकर मोबाइल बाजए लगलैक।

"के छी?'

"जेलर बाबू।"

" सभ ठीक अछि ने?"

"ठीक कहाँ अछि? निशाकेँ रहि-रहि कए चक्कर आबि जाइत छैक। कोनो इलाज असर नहि कए रहल छैक।"

"हम तँ गाम आबि गेल छी।"

"किछु करिऔक, नहि तँ ओकर जान नहि बाँचत।"

"मुदा हमर अखन गाम छोड़ब संभव नहि अछि कारण दसमीक समय आबि रहल छैक। भगवतीकेँ जगेबाक छैक।"

"कोनो उपाय करिऔक।"

जेलर बाबूक हालत बहुत पातर भए गेल छल। कोनो रस्ता नहि देखि कालू कहलकैक- "एकहिटा उपाय बुझा रहल अछि।"

"की?"

"हुनकासंगे अहाँ हमरा ओतए चल आउ।"

"ठीक छैक। हम आइए साँझ धरि पहुँचि रहल छी।"

यद्यपि कालूक छिज्जा जेलर बाबूकेँ नीकसँ बूझल रहैक तथापि ओ पत्नीक संगे कालू भगताक ओतए बिदा भए गेलाह। रस्तामे बिलाड़ि रस्ता काटि देलकनि। आब की हएत?

निशाक हालत खरापे भेल जाइत रहनि। बरखाक समय छल। लोकसभ अपन-अपन घर धेने छल। जकरा तेहने अनिवार्य रहैक सएह बाटपर चलबाक साहस काए रहल छल। पानिक झट्टक बंद हेबाक नामे नहि लए रहल छल। ओहन हालतमे ओ बससँ पुरबारिगामक हेतु बिदा भेलाह। सौंसे बसमे मात्र पाँच गोटे छल। दू गोटे ईसभ एकटा आओर यात्री आ बस चालकक संग खलासी। कनीके काल बस चलल होएत की ओकर इंजन घुर्र-घुर्रक आवाज करए लागल। बाहन चालक कतबो प्रयास केलक मुदा ओ टस-सँ-मस नहि भेल।

सड़कपर भरि-भरि डाँर पानि बहि रहल छल। एहन हालतमे की होइत? जे हेबाक से भेल। बसक इंजन जाम भए गेल। बस चालक पों-पों कए सीटी बजबैत रहल मुदा किओ कतहुँ मदति हेतु आगा नहि आएल। आब की होएत?

जेलर बाबू भगवान !भगवान! करैत रहलाह ।रच्छ एतबे भेलैक जे निशाकेँ ठंड हवा लगलैक। ओ कने-मने सुधरल। जेलर बाबू कालू

भगताकेँ फोन लगेलाह। कतबो प्रयास करथि, वारंबार एतबे संवाद आबए-

"नेटवर्क जाम अछि,एखन गप्प नहि भए सकैत अछि।"

रातिक साढ़े न बाजि रहल छल। लोकसभ अपन-अपन घरमे सुतए चल गेल। बरखा रुकबाक नामे नहि लए रहल छल। बाहन चालक हाथ बारि देलक जे आब गाड़ी कतहुँ नहि जा सकैत अछि। यात्री चाहथि तँ उतरि जाथि। जेलर बाबू माथ ठोकि लेलाह।

एतबेमे बड़ी जोरसँ ठनका खसल। ततेक इजोत भेल जे लगैक जेना दिन भए गेल हो। ओही प्रकाशमे बससँ सटले एकटा फूसक घर देखेलनि। ओ निशा संगे उतरि कए ओहि खोपड़ी दिस बढ़लाह। मुदा कतबो प्रयास करथि क्यो घरक फट्टक नहि खोलए। बससँ निचा भए गेल रहथि। पानिसँ दुनू गोटे भिज गेल रहथि। घुरि कए बस दिस तकैत छथि तँ बस एकदम खाली। ने बाहन चालक छल,ने खलासी ने ओ तेसर यात्री। असलमे ओसभ महराजक आदमी छल जे महराजक इसारापर निशाक पछोर केने रहैत छल। ऐन मौकापर बस खरापकए ठाढ़ कए देलक आ चंपत भए गेल। आब तँ जेलर बाबू डरे थर-थर काँपए लगलाह। हुनका एना डराइत देखि निशा सेहो परेसान भए गेलीह। हारि कए ओ घरक दिस बढ़लाह। घरक अंदर किछु-किछु आवाज सुनेलनि।

“कनी घर खोलब।"

"के छी?

'हमसभ यात्री छी बरखामे भीजि रहल छी। कनी केबार खोलु, जाहिसँ हमसभ आश्वस्त होइ।"

मुदा अन्दरसँ किछु जबाब नहि अएलैक। बरखा रुकबाक नामे

नहि लए रहल छल। दुनूगोटे नीकसँ भीजि गेल रहथि। निशाक मोन खराप भए रहल छलनि। जाढ़सँ थर-थर कपैत छलीह। ई सभ देखि कए जेलर बाबूकेँ नहि रहल गेलैक। ओ जोरसँ केबारमे धक्का मारलक। केबार खुजितहि ओ दुनू व्यक्ति की देखलाह की नहि जे बेहोश भए ठामहि खसि गेलाह ।❑

१०

प्रात भेने जखन जेलरबाबूकेँ होश भेलनि तँ कोनो अज्ञात स्थानमे पड़ल छलाह। निशाकेँ कतहुँ पता नहि छल। लग-पास किओ छलहो नहि जकरासँ किछु मदति भेटितनि। रातिओमे किछु नहि खेने रहथि। पानिओ नहि पीवि सकल रहथि। भूख-पिआससँ छट-पट करैत छलाह। जखन बुझा गेलनि जे ओहुना मरिए जाएब तँ ओहिठामसँ आगा ससरलाह। कनीके आगा बढ़ल होएताह कि एकटा जुआएल गहुमन साँप छत्र काढ़ने बीच रस्तापर ठाढ़ छल। आब तँ जेलरबाबूक हालत सम्हारसँ बाहर भए गेल। जेलरबाबू छगुन्तामे छलाह। कोनो उपाय नहि सुझा रहल छलनि। ओ ओहिठामसँ आपस भेलाह। कनीके आगा गेल हेताह कि ऐकटा बड़ीटा महराजीसुरंग देखेलैक। एहि कात साँप, ओहि कात सुरंग। जाथि तँ केमहर? हारि कए सुरंगमे पैसि गेलाह।

महराजीसुरंगमे जौँ-जौँ आगा बढ़थि तँ- तँ रस्ता फरीछ होइत गेल। साहस कए ओ आगा बढ़लाह, कोनो आओर उपायो नहि रहैक। ओ आधा घंटा धरि चलैत रहलाह तकरबाद आओर चलबाक साहस नहि भेलनि। देह थाकि कए चूर-चूर भए गेल छलनि। भूख-पिआससँ छटपटा रहल छलाह। ओ ठामहि बैसि गेलाह। ओहिठाम चारुकात मनोरम दृश्य छल। नाना प्रकारक फूल-फलहरीसँ वातावरण मह-मह करैत छल।

हरिअर कंचन घास, ठाम-ठाम गुलाब जलसँ सिक्त पानिक फुहारा पड़ि रहल छल। काते-काते सुन्दर-सुन्दर महल बनल छल। दहिना दिस एकटा रमणीय उद्यान देखेलनि। ओ ओमहरे बढ़ल छलाह कि चौकीदार रोकि देलकनि।

“आब की कएल जाए?"

जेलरबाबूकेँ छगुन्तामे देखि ओ बाजल-

"घबड़ाउ नहि,"

"हम बूझि नहि पाबी रहल छी।"

"अगुताउ नहि। सभटा अपने बूझि जेबैक।"

जेलर बाबू अत्यंत विस्मय सँ ओकर बात सभ सुनैत रहलाह।

“ई के अछि? हम कतए आबि गेल छी?"

ई बात सभ हुनकर मोनमे वारंबार अबैत रहलनि। कनिक दूर आओर गेलापर एकटा बेस टनगर लोक देखाएल। पातर-छितर,गोर दप-दप आ बेस फुर्तिगर। जेलर बाबूकेँ देखिते ओ प्रशन्न भए गेल। हाथसँ बैसबाक इसारा केलकैक। लगैत छलैक जेना कोनो महराजक हबेली होइक। फेर ओ अपने बजलथि- "हमरा चिन्हलहुँ?"

जेलर बाबूकेँ गुम्म देखि फेर अपने कहलाह-

"हम छी महराजी भगता "।

ओ जेलरबाबूक जलखैक ओरिआन केलक। बहुत भुखल रहथि, धराधर सभटा चट कए गेलाह। थाकल छलाहे,भोजन करितहि हाफी आबए लगलनि आ कनीके कालमे निन्न पड़ि गेलाह।❑

११

महराजक नजरि निशापर बहुत दिनसँ गरल छलनि। जहन जेलरबाबू महराजी हातामे रहब कबूल नहि केलाह तँ महराज ई भार महराजी भगताकेँ देलखिन जे ओ कोनो चालि चलए। महराजी भगता मंत्र-तंत्रक प्रयोग कए हुनका ओझरओलक। समाजमे पसरल अशिक्षा ओ अंधविश्वास आगिमे घीक काज करैत छल। गाम-गाम महराजी भगताक आदमीसभ पसरल छल। एक हिसाबे ओसभ महराजक कारपरदाज छल जे हुनक शोषणमे सहायक छल। कालू भगतो सएह छल। गड़बड़ एतबे भेलैक जे निशा संगे ओ अपने ओझरा गेल।

फरीच भए गेल छल। बरखा सेहो थम्हि गेल छल। गाममे लोकसभ अपन-अपन रोजी-रोटीमे लागि गेल छलाह। चिरै-चुनमुन अपन खोंता छोड़ि कए स्वछन्द भए आकाशमे उड़ि रहल छलाह। मुदा कालू भगताक मंत्र-तंत्र चलिए रहल छल। ओकर कोरामे निशा अखनो बेहोश पड़ल छलीह। कनीकालमे कालीकेँ गोहरबैत निशाकेँ भरि पाँज पकड़ने उठल। ताबतमे निशाक आँखि खुजलैक। अपनाकेँ एहि परिस्थितिमे देखि कए ओ आश्चर्यचकित छलि। हम एहिठाम कोना आबि गेलहुँ?"

"कालू भगत हँसए लागल। पुछलकैक- "मोन केहन अछि?"

"किएक, हमरा की भेलए? "

"छोड्ड ई गप्प-सप्प। चाह पिबैक?"

"किएक नहि।"

"ठीक छैक, तँ हम करिआ चाह बना रहल छी कारण अखन धरि

दुध नहि आएल अछि आ भए सकैत अछि जे आइ अएबो नहि करए।"

"कोनो बात नहि।"

मंद-मंद बहैत हवाक झोंकासँ निशाक चेतना क्रमश: सक्रिय भए रहल छल। ओ अखिआसि रहल छलि जे कतए छथि?मुदा ओ ओहि स्थानकेँ चिन्हि नहि सकलीह। किछु-किछु मोन पड़ि रहल छलैक। ताबतमे कालू भगता भफाइत चाह लेने आएल। चाहक चुस्कीसंग जेना ओकर माथाक फुर्ती सेहो बढ़ैत गेलैक। ओकरा ध्यानमे अएलैक जे जेलर बाबू तँ ओकर संगे छलैक,फेर ओ कतए गेल?रातुक प्रलयंकारी दृश्य आ भीजैत-तीतैत जेलरबाबू ओकरा मोन पड़ए लगलखिन।

"रघु कतए छथि?"

“अहाँ एहि चक्करमे किएक पड़ल छी? हम छी ने?"

निशाकेँ कालूक नेतपर सक होबए लगलेक। सोचए लागलि-

"कहीं इएह किछु गड़बड़ तँ नहि केलक?"

मुदा किछु बाजलि नहि। ताबत चाह खतम भए गेल छल। कालू मुस्की देलकैक आ निशाकेँ हाथ पकड़ि भीतरक कोठरीमे लेने चलि गेल।

कालू अपना भरि बहुत कोशिश केलक जे निशाक मोनसँ जेलर बाबू हटि जाइक। जखन निशाक चिंता बढ़िते गेल तँ कालू जोर-जोरसँ किछु-किछु बड़बड़ाए लागल। ओकर आँखि लाल-लाल ओ भयावह भए गेलैक। निशा चेतनासून्य भए चौकीपर खसि पड़लि।❑

१२

मामा हमरा संग कए सोनाक सिक्काबला पोटरीकेँ राजपुरा लेने चलि गेलाह आ नामी सोनार सभकेँ देखए देलखिन। ओसभ पोटरीमे राखल सोनाक सिक्का देखि कए दंग छल।

"मुदा तोरा ई सोनाक सिक्कासभ भेटलह कतए? ई तँ किछु दिन पहिने महराजक घरसँ हरा गेल छल। महराज एकरा तकने फिरि रहल छथि। सौंसे शहरमे डिगडिगिआ पिटाओल गेल अछि जे हराएल सोनाक सिक्काक भांज देनिहारकेँ महराज स्वयं इनाम देथिन।"

"हम से सभ नहि जनैत छी। ई हमरा भगवान देलाह अछि।"

"झूट-मूठकेँ खिस्सा गढ़ि रहल छह। एखने महराजक पुलिस पकड़ि लेतह तखन बूझिअहक।"

“तूँ हमर बात पर विश्वास करह। हम ककरो सोनाक सिक्का नहि जनैत छी। ई हमर अछि, एहिमे कोनो सक नहि हेबाक चाही।

"तँ थम्हह, हम महराजक सिपाहीकेँ खबरि कए दैत छिऐक। तोरा संगे फाँसीपर के चढ़त।”

सोनार महराजक कारकुनकेँ फोन कए देलक। औ बाबू! देखिते-देखिते सोड़हि महराजी पुलिस एकट्ठा भए गेल आ ओकरा संग सबाल-जबाब करए लागल।

"तोहर की नाम छह?"

"हरि"

"घर कतए छह"

"पछबारिगाम। “

बहुत घोंघाउज होइत देखि हम दोकान दिस बढ़लहुँ। देखैत छी

जे सिपाहीसभ मामाकेँ टंगने जा रहल अछि। सोनाक सिक्काबला पोटरी सेहो हुनकासँ छिन लेलक अछि। हम बहुत चिकरलहुँ, मुदा ओसभ डंटा देखाकए हमरा चुप करा देलक आ मामाकेँ लदने-फदने महराज लग लेने चलि गेल। पाछु-पाछु हमहुँ ओतए पहुँचलहुँ।

प्रात भेने मामाकेँ हथकड़ी लगाए महराजक दरबारमे आनल गेल। दसटा महराजी पुलिस आगा-पाछा घुमि रहल छल। लगैक जेना कतेक भारी अपराधीकेँ पकड़ल गेल अछि। महराजक दरबार लागल। बीचमे सिंघासनपर महराज सुशोभित भए रहल छलाह। दुनूकात नाना प्रकारक लोकसभ उत्सुकतासँ महराजक श्रीमुखसँ न्यायक प्रतीक्षा कए रहल छल। महराजाधिराजक स्वागत हेतुसभ किओ ठाढ़ भए गेलाह। दूटा भाँट मनोयोगपूर्वक महराजक जयगान करए लगलाह-

"जय हो ! जय हो !सरकार के जय हो...
दुश्मन के क्षय हो, सभ कियो निर्भय हो
सबकिछु मधुमय हो, सभगोटै सुखमय हो
अगबे जय-जय हो..!
बल बढ़ै, आयु बढ़ै,बुद्धि बढ़ै, विद्या बढ़ै
चौगुन्ना संपत्ति बढ़ै,विपक्षी के विपत्ति बढ़ै
खेतमे अन्न बढ़ै, तिजोरीमे धन बढ़ै
थपड़ी बला जन बढ़ै,बात बला मन बढ़ै
गौरव छन-छन बढ़ै, यात्रा हवाइ बढ़ै
यश के पतक्खा नभमे उड़ै...
जय हो! जय हो!
सरकार के जय हो!

अगबे जय जय हो..!

तकरबाद महराजसँ न्यायसभाक कार्यक्रम प्रारंभ भेल। एकटा दरबान जोरसँ आवाज देलक-

"महराजाधिराजक जय हो! सरकारक आज्ञा हो तँ न्यायसभाक कार्रबाइ प्रारंभ हो।"

"आज्ञा अछि।"

तकराबाद सभसँ पहिने हमर मामाकेँ महराजक सामने उपस्थित कएल गेल। महराज ताबे पान खा रहल छलाह। पान थूकबाक हेतु पिकदानी लए एकटा कारकुन दौरल। ततेकटा पान छल जे महराजक मुँहसँ आबाजे नहि निकलि रहल छल। पानकेँ थुकरि ओ पुछलाह-

"ई के थिक आ एकर की अपराध अछि?"

ई सुनितहि पेशकार बाजए लागल- “श्री मान! ई महान चोर अछि। अहाँक रनिबाससँ सोनाक सिक्काक पोटरी चोरा लेलक। आइ कतेको दिनसँ ओहि पोटरीक खोज भए रहल छल आओर ई बदमास ओकरा सोनारक हाथे बेचबाक फिराकमे छल कि पकड़ल गेल। ओ तँ सोनार इमान्दारी केलक जे ई बदमास पकड़ल गेल आ सोनाक सिक्का सेहो आपस भए गेल नहि तँ सत्यानाश भए गेल रहैत। एकर अपराध अक्षम्य थिक ताहि हेतु एकरा मृत्युदंड देल जाए।"

महराज हमर मामा दिस तकलाह। फेर पुछैत छथि-

"की बात छैक से सच, सच बाजह।"

"सरकार अपनेसँ किएक किछु झूठ कहब। अपने देवता थिकहुँ। हम कोनो चोरी नहि केलहुँ। हमरा तँ ई पोटरी भूतहा गाछी लग भेटल। हम अपन भागिन संगे अबैत रही कि ई पोटरी पाकल आम जकाँ भट दए

खसल। हम ओहि पोटरीकेँ उठा लेलहुँ। खोलैत छी तँ बीसटा सोनाक सिक्का भेटल। हम बहुत प्रशन्न भेलहुँ। भेल जे भगवान हमर भागिनक पढ़ाइ-लिखाइक खर्चाक व्योत कए देलाह अछि। हम अपन भागिनसंगे एहि पोटरी लए राजपुराक सोनार ओतए गेल रही कि ओ सोनार महराजी पुलिसकेँ बजा अनलक आ तकरबाद जे भेल से तँ अपनेकेँ बुझले अछि।"

महराज ई बात सुनितहि हमरा बजओलथि। हम नवालिग ठहरलहुँ। मामाक परेसानीसँ मोनमे बहुत दुख छल। महराजक सामने जाइते ठोहि पाड़िकए कानए लगलहुँ। महराजकेँ दया आबि गेलनि। ओ बजलाह-

"तूँ के छह बालक? एना किएक कानि रहल छह?"

हम महराजकेँ सभटा बात सच-सच कहि देलिअनि। प्रमाणस्वरुप अपन मैट्रिकक प्राप्तांको देखए देलिअनि। ई सभ देखि सुनि महराजकेँ मोन डोललनि। ओ न्याय पुरुष भए ठाढ़ भए गेलाह। हुकुम देलथि- "ई व्यक्ति एकदम निर्दोष अछि। एकरा तुरंत रिहा कएल जाए संगहि ई पोटरी सभटा सोनाक सिक्काकसंगे एकरा आपस दए देल जाए। एहि बालककेँ राजकोषसँ पढ़ाइ-लिखाइक व्यवस्था कएल जाए। संगहि हिनका दुनू गोटेकेँ रहबाक हेतु घर रा जक हातामे देल जाए।"

“महराजक आदेश सुनि सभ बाजि उठलाह-महराजक जय हो! अपने साक्षात अवतारी पुरुख छी!"

महराजक आज्ञा सुनिकए मामाकेँ घिघि लागि गेल। ओ दंडवत भए गेलाह आ बजलाह- "श्री मानक जय हो! हे देवपुरुष! हमरा ई सोनाक सिक्का नहि चाही। हमरा नहि बुझल छल जे ई सिक्का रनिवासक अछि। हमरा एहि सिक्कासभकेँ आपस करबाक आज्ञा देल जाए। अपने हमर भागिनक शिक्षाक व्योंत कइए देलहुँ अछि। एकर अतिरिक्त हमरा किछु

नहि चाही।"

ओहिठाम उपस्थित समस्त सभासद लोकनि हमर मामा दिस छगुन्तामे ताकए लगलाह। हमरा तँ बकोर लागि गेल। हमर मामाक बात सुनि महराज दंग रहि गेलाह आ बजलाह- "हम ई सोनाक सिक्का एकहि शर्तपर लेब जे अहाँ एहि राजक राजमंत्रीक पद स्वीकार करी।"

चारुकात महराजक जय-जय होबए लागल। मामा सहर्ष महराजक राजमंत्री बनए हेतु स्वीकृति दए देलथि। कहबी छैक जे राखनहारा साइआ, मारि ने सकिहै कोइ, सएह भेल। कहाँ सिपहसलारसभ फाँसीक हेतु सोचि रहल छलाह, कहाँ ओ राजमंत्री भए गेलाह। इएह थिक नियति।

सभा विसर्जित भए गेल। चारुकात एहि घटनाक चर्चा होबए लागल। हमर मामाकेँ राजमंत्री बनओलासँ किछु सभासद बहुत परेसान रहथि। न्यायसभाक विसर्जनक बाद ओसभ बाहर निकलैत काल आपसमे चर्च करथि जे महराजपर भांगक निशा चढ़ि गेल छलनि नहि तँ एहन घाघ चोरकेँ कतहुँ राजमंत्री नहि बनबितथि। मुदा सामने के बाजत?

महारानी अपन हेराएल सोनाक सिक्कासभ पाबि गद-गद भए गेलीह आ महराजाकेँ बहुत मानलखिन। महराज दहो-बहो रहथि। आनन्दसँ गद-गद रहथि जे रानी एतेक प्रशन्न भेलीह। महराज सोचथि- "बाह रे हम।"

रानी कहलखिन- "हम ओहि आदमीसँ भेंट करए चाहब।"

"किएक ने। हे लिअ, ओ अहाँक द्वारपर ठाढ़ छथि।"

"से केना भेलैक?"

"हमरा अपने मोनमे रहए जे अहाँकेँ एहि आदमीसँ भेंट कराएब तेँ

ओकरा पहिने समाद दए देने रहिऐक।"

महराज घंटी बजओलथि आ हमर मामा ओतए हाजिर भए गेलाह। मामाक देखिते जेना रानीकेँ करेंट लागि गेलनि। सोचए लगलीह- "ई आदमी कतेक सुन्दर अछि। कोनो नीक खानदानक व्यक्ति लागि रहल अछि।"

रानी हमर मामाकेँ बहुत धन्यवाद देलखिन आ राजाज्ञाक अनुसार राजमंत्रीपद शीघ्र ग्रहण करबाक आग्रह केलखिन। हमर मामाक खुशीक वर्णन करब मोसकिल। इलाकामे गर्द भए गेल जे हरि राजमंत्री भए गेलाह अछि।

महराजक आज्ञाक अनुसार हमरा लोकनिक रहबाक हेतु महराजक हातामे विशाल भवनक व्यवस्था भेल। सेवादारसभ सेहो नित्य अपन काजमे लगा देल गेलाह। देखिते-देखिते हमर मामाक प्रभाव राजमहलमे ततेक पसरि गेलनि जे पुरान-पुरान चाटुकारसभकेँ अपन भविष्यपर ग्रहण लगैत बुझाए लगलनि। मुदा कइए की सकैत छलाह?बहुत मोन हेतनि तँ दू कर बेसी खा लेताह। बाह रे समय! की सँ की भए गेल। काल्हि धरि जे आदमी घोर संकटमे छल से आइ राजमहलक सहभागी भए गेल।

रानीकेँ जखन कोनो खास काज होइतनि तँ हमर मामाकेँ बजबितथि। देखए सुनएमे तँ ओ सुन्नर छलाहे। राज महलमे रहि नित्य नीक-निकुत खाइत-पीबैत आओर चमचम करए लगलाह। रानीकेँ हुनकासँ गप्प-सप्प करबामे नीक लागए लगलनि। कोनो-ने-कोनो बहाना ताकि हमर मामाकेँ बजा लितथि आ घंटो गप्पमे लसकल रहितथि। महराजक जासूससभ ई बात महराजकेँ पहुँचबैत रहैत छलनि मुदा हुनका

कहाँ फुरसति रहनि जे एहिबात सभ पर ध्यान दितथि। फेर ओ तँ अपने तरह-तरहकेँ लफासोटीमे लागल रहैत छलाह। भने रानी कतहुँ व्यस्त छथि" -ओ सोचथि आ जासूससभकेँ उल्टे डाँटि-फाँटि देथि। ओ बेचारासभ चुपचाप सहटि जाइत। मुदा मोनमे तामस तँ हेबे करैक।❑

१३

मखनाक गतिविधिपर यमराजकेँ सक भए गेलनि। ओ अपन जासूससभकेँ ओकरापर विशेष ध्यान रखबाक हेतु कहलखिन संगहि इहो कहलखिन जे कोनो बात होइक तँ हुनका तुरंत खबरि कएल जाए। सएह होबए लागल। जासूससभ ओकर आगा-पाछा करए लागल। ओ जतहि जाइत किछु गोटे आगा तँ किछु गोटे पाछा चलैत रहैत छलैक। एहि बातसँ मखनाकेँ सेहो सक भए गेलैक। सोचए लागल जे आखिर ई सभ के अछि आ हमरा किएक पछोर करैत रहैत अछि?

मखनाक संचिकाकेँ यमराज स्वयं पढ़लथि। ओ ओकर पारिवारिक पृष्ठभूमिक जानकारी चाहैत छलाह। पढ़ैत-पढ़ैत हुनका पता लागल जे ओ तँ राजपुराक रहए बला अछि। मृत्युक बाद ओ यमलोक आनल जा रहल छल की रस्तेमे हेराफेरी कए अपनसभटा संचिका बदलि देलक।

ई सभ बूझलाक बाद यमराजकेँ बहुत चिंता भेलनि। मोने-मोन सोचथि- "ई आदमी शुरुएसँ गड़बड़ लगैत छल। सभसँ दुखद बात अछि जे हमर श्रीमतीजी एकरापर बहुत भरोस करैत छथि। पहिने तँ हुनका बुझाबी। फेर देखल जएतैक। एकरा रस्ता लगाएब कोन भारी बात छैक?"

यमराजक कारक टायर पंचर भए गेल रहनि। हुनका फेर मखनेपर सक भेलनि जे कहीं ई एकरे काज ने होइक। सोझासँ एकटा एक्का जा रहल छल। ओ एक्काबलाकेँ रुकबाक इसारा केलाह। आहि रे बा !ओ तँ यमराजक इसारा देखितहि फटकी भागए लागल। प्राणक डर ककरा नहि हेतैक?सएह भेलैक।

यमराज तमसा कए एक्काबलाक पाछा दौड़ रहल छलाह कि मखना देखलकनि।

"सरकार अपने किएक दौर रहल छी?"

"पकड़ एकरा" -एक्काबला दिस इसारा केलखिन। मुदा ओहो तँ फेरल छल। एक्काबलाकेँ इसारा केलक जे भागि जो। एक्काबला आओर जोर-जोरसँ एक्काकेँ दोड़बए लागल। यमराज आओर तमसाइत ओकरा खिहारि रहल छलाह। यमलोकमे बेस मनोरंजक दृश्य भए गेल छल। एहि दौर-बरहामे यमराजक हाथसँ मखनाक संचिका खसि पड़ल। यमराजकेँ से अखिआस तखन भेल जखन सामनेमे रेखा आबि कए दौरबाक कारण पुछए लगलखिन-

"की बात छैक? एना किएक दौर रहल छी?"

"की कहु?-से कहि हाथक संचिकाकेँ ताकए लगलाह।

"संचिका कतए गेल।"

"कोन संचिका?"

ताबते एकटा यमसिपाही एकटा संचिका लेने दौरल आएल। यमराजकेँ जानमे जान आएल। ओ एहि संचिकाकेँ पढ़बाक हेतु रेखाकेँ देलखिन।

"एकरा पढ़ू। सभबात अपने बूझि जेबैक।" -से कहि संचिका

रेखाक हाथमे धए देलनि

रेखा बहुत ध्यानसँ ओहि संचिकाकेँ पढ़ए लगलीह। ओहिमे सौंसे मखनाक प्रशंसा भरल छल। हुनकर मोन आनंदसँ गद-गद छल। फेर बजलीह-

"हम तँ ई बात बुझिते रही। मखना बहुत नीक खानदानक लोक अछि आ बहुत योग्यो अछि, मुदा अहाँकेँ के बुझाएत?"

"की बात कहि रहल छी? अहाँ एहि संचिकाकेँ नीकसँ नहि पढ़लिऐक की?"

"हम खुब नीकसँ पढ़ि लेलहुँ। अहाँक चश्मा लगैत अछि खराब भए गेल अछि। फेरसँ पढ़ि लिअ। आ हे! चश्मा ठीक करा लेब।"

पत्नीक एहन व्यंगात्मक गप्प सुनि यमराजक मोन जरि गेलनि। भेलनि जे अखने एहि दुनूगोटेक प्राण घीचि ली। से तँ ओ कइए सकैत छलाह मुदा ब्रह्माजीक डर भेलनि। फेर ओ संचिका रेखाक हाथसँ लए पढ़ए लगलाह।"आहि रे बा! एकर तँ पाँति- पाँति बदलि देल गेल अछि। मखना मामूली धोखेबाज नहि थिक।" -यमराज बजलाह।

"अहाँकेँ तँ एहिना रहैत अछि। हमरा लगीचमे क्यो रहए से अहाँकेँ पसिंद किएक होएत? असली बात तँ से अछि।"

दुनू व्यक्तिमे एहि बातपर बेस घोंघाउज होबए लागल। से देखि मखना बहुत प्रश्न्न भेल। मोने-मोन सोचलक-

"हमर पाछा पड़ल छलाह। आब लेथु।"

यमराजकेँ व्यग्र देखि मखना कहए लागल-

"सरकार अपने किएक परेसान छी? घरबालीक बातपर चिरौरी नहि करू। आइ-काल्हि बहुत खराप कानून आबि गेल छैक। सिकाइत भए जाएत तँ जमानतो नहि होएत।

"चुप रह। ई राजपुरा नहि थिकैक। यमलोक छै। तोरा तँ हम जल्दिए ठेकाना लगेबौक। देखै छी तूँ कतेक दिन बचैत छैं। तोहर खेल जल्दिए खतम हेतौक।"

से कहि यमराज मोछ पिजाबए लगलाह। मुदा मखनाक लेल धनिसन। मखनाकेँ तँ मोन होइक जे यमराजकेँ ठामहि उठा कए पटकि दिअए।

यमराज अपन मंत्रीमंडलक आपत्तिकालीन बैसक बजओलथि। ओकर मुख्य विषय छल-मखनाक कदाचारकेँ ध्यानमे रखैत ओकरापर दंडात्मक कार्रवाइ। ओ ई कहिओ ने सोचने हेताह जे छोटसन एहि मामलामे हुनके मंत्रीमंडलक सदस्यगण हुनकर खिलाफ चल जेताह। मुदा भेल सएह।बैसक हंगामेदार भए गेल। “काबीनामंत्री धरिमे मखनाक एहन गहींर पहुँचि केना भेल?-ई सोचि-सोचि यमराजक चकरी गुम छल।“जरूर कोनो खास आदमी षड़यंत्र कए रहल अछि।" -यमराज मोनेमोन सोचए लगलाह। बैसारक क्रममे मंत्रीगण सबूतक मांग कए देलाह। कहए लगलाह जे अहाँक मखना संग मतभेद व्यक्तिगत कारणसँ अछि,एहिमे यमलोककेँ ओझराएबाक कोन औचित्य?" यमराज गुम पड़ि गेलाह आ आग्रह केलाह जे मूल संचिका तकबाक हेतु हुनका किछु समय देल जाए।

"एवमस्तु" -मंत्रीगण बजलाह। बैसार खतम भेल। मंत्रीसभ अपनामे चुप-चाप गप्प करथि- "यमराजो सठिआ गेल अछि। एकरा एहि बएसमे अपन पत्नी छोड़ि रेखाक चक्करमे पड़बेक नहि छल। एकर आब एहिसभ काजक बएस छैक? व्यर्थकेँ चस्का लगेने अछि। मखनाक कोन दोख। ओ नहि तँ किओ आओर? की ने?"

“सत्य वचन" एकरा वशक किछु छैक नहि तखन किएक लफड़ामे

पड़ल रहैत अछि।" -से बजैत सभ ठठाकए हँसि देलक।❑

१४

मखना अपन मौलिक संचिकाकेँ यमलोकसँ लदने-लदने राजपुराक लगीचमे पहुँचल। ओ कालू भगताकेँ ताकि रहल छल। कालू ओकर सहोदर भाए छल। मखनाक देहसँ प्राण निकलि रहल छलैक कि यमदूत सभकेँ पैर पकड़ि गोहराबए लागल। ओकरा कनैत-कलपैत देखि यमदूतसभकेँ दया आबि गेलैक। पुछलकैक- "किएक कानि रहल छह?"

"हमर प्राण आपस कए दएह।"

"एकहिटा उपाय छैक?" यमदूत बाजल।

"कहह ने, जे कहबह सएह करब, मुदा हमरा बचा लएह।"

तकरबाद पता नहि दुनू गोटे की-की बतिओलक? किछु लेब-देब भेलैक। आ मामला पटि गेलैक। यमलोक जइतहिँ यमदूतसभमे मिझरा गेल। ओकर संचिका बदलि देल गेल। एहि तरहेँ ओ यमराजक दरबारमे पैस बनओलक। कोना-ने-कोना यमपाश सेहो भेटि गेलैक। आओर तँ जे भेलैक से भेलैक, यमराजक घर धरि घुसिआ गेल। ततबेपर नहि रुकल, रेखाक संगे रमि गेल। किछु तँ ओकरामे छलैक जे एतेक आगू बढ़ि गेल।

मखना अपन गामक ऊपर कै बेर चक्कर लगओलक मुदा कालू कतहुँ नहि देखेलैक?हारि कए ओ आपस होइत रहए। फरीच भए गेल छल। ताबे ओ राजपुरा लग पहुँचि गेल छल कि एकटा नान्हिटा घरक फट्टक खुजल।

"ई तँ कालू लागि रहल अछि। मुदा एकरासंगे एहन सुन्दरि के

छथि?" -ओ मोने-मोन सोचैत छल।

कालू कुर्सी निकालि कए बाहर बैसल आ निशा भपाइत चाहक कप लए हाथमे देलखिन। दुनू गोटे चाह पीबए लगलाह संगे गप्प-सप्प सेहो चलि रहल छल। दुनूक संतुष्टिभाव किओ पढ़ि सकैत छल। ताबतेमे मखना कनीक आओर लगीच आबि गेल। किछु छल तँ कालू भगता छल, मंत्र-तंत्र किछु ज्ञान छलैक। ओकरा यमदूतक आगमनक आभास भेलैक। नहूँ, नहूँ बाजल- "शिव! शिव! निशाक ध्यान कालूपर पड़लैक।

“कथि लेल चिंतित छी?"

कालू ऊपर दिस इसारा केलक मुदा किछु बाजल नहि। मखना लाख बुझेबाक चेष्टा कएलक मुदा कालू आओर डराइत रहल। ओकरा बहुत परेसान देखि मखना ओकरा दुनूकेँ ठामहि उठा लेलक आ उड़ि गेल।

"एहनो जबरदस्ती भेलैक अछि?" -कालू बाजल।

मखना भभा कए हँसल। मखना राजपुरा पहुँचि महराजी पोखरिपर उतरि गेल। कालू भगता आ निशाक जान-मे-जान आएल। ओ भरि रस्ता हनुमान चलीसा पढ़ैत रहल आ मखना हँसैत रहल।

“तूँ के छह?” -कालू बाजल।

“तोहर छोट भाए।”

मखना बाजल।

"से केना भए सकैत छैक? ओ तँ साल भरि पहिने मरि गेल।"

"से बात ठीक छै मुदा जे हम कहि रहल छी सेहो ठीक अछि।"

"से कोना भेल?"

"तूँ शांत रहह। हम सभटा बात कहबह।"

"ठीक छैक, कहह।"

कालू कनीक आश्वस्त भेले छल कि मखना निशा दिस इसारा केलक।

"ई तोरा संग कोना भए गेलह?"

"पहिने तूँ अपन खिस्सा कहह? बातकेँ एमहर- ओमहर घुमाबह नहि।"

“ठीक छैक, तँ सुनि लएह।"

मखना कहलकैक जे हमर बात पर ध्यान दएह। फेर अपन खिस्सा शुरु केलक-

"हमर प्राण खिचने यमदूत लए जाइत रहए। रस्तेमे एकटा मैथिल यमदूत भेटल। ओ अपन बात कहए लागल जे केना ओ यमराजकेँ चकमा दए नर्कक यातनासँ बँचि गेल, ततबे नहि यमदूतो बनि गेल। ओकर बताओल पद्धति हमहु दोहरओलहुँ। हम तँ आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ जे लोक खामखा अपना ओहिठामकेँ बदनाम केने छैक। यमपुरीक हालत तँ ओहूसँ चौपट छैक। हमर सभटा संचिका बदलि देलकैक। परिणाम भेल जे यमराज लग जाइते हमर जोरदार स्वागत भेल आ बिना कोनो देरी केने यमदूतमे बहाल कए लेल गेल। यमपाश भेटि गेल आ विशेष कोडवर्ड सेहो भेटिगेल।"

"कोडवर्ड की भेलैक से नहि बूझलिऐक?"

"तोरा ई सभ बूझबाक कोन काज छह? सारांशमे बुझहक जे मुजरिम जज भए गेल" -से कहि ओ ठहाका पाड़िकए हँसए लागल।

"मुदा तोहर सकल-सूरत केना बदलि गेलह?" -कालू पुछलकैक।

"नहि बुझलहक, जेहने काज करबैक तेहने बगए चाही ने।

यमपुरीमे जबरदस्त ड्रेसकोड छैक।

तीनूगोटेमे गप्प-सप्प भइए रहल छल कि हरि अपन चेला-चाटीसभक संगे महराजी पोखरिक निरीक्षण करए पहुँचलाह। जहिआसँ ओ राजमंत्री भेलाह,हुनकर रोबदाव देखए बला छल। महराज ओ महरानीक खासम-खास भए गेल छलाह। बहुत गोटे भीतरे-भीतर जरैत छल मुदा ताहिसँ की?

महराजी पोखरिक घाटपर कालूकेँ देखिते ओ चिचिआ उठलाह-

"कालू, कोना छह? "

"गोर लगै छी? “

“नीके रहह। ई के छथि?”

एहिसँ आगा ओकरा किछु नहि फुरेलैक। दुनूगोटेमे गप्प होइते रहैक कि मखना निपत्ता भए गेल। धरफरीमे ओकर संचिका कालू लग खसि पड़लैक। हरिक ध्यान ओहिपर पड़लनि। हुनकर सिपाही ओहि संचिकाकेँ उठाकए हुनकर हाथमे थम्हा देलक। मुदा ओ ओहि संचिकाक एक्को आखर पढ़ि नहि सकलाह। पता नहि की अर्र-बर्र लिखल छैक?-ओ मोनहि-मोन सोचैत रहथि।

ओ ओहि संचिकाकेँ मुंसीकेँ धरा देलखिन आ कालूसंगे गप्प करए लगलाह। कालू तँ हिनकर ठाट-बाट देखि कए छगुन्तामे रहए। किछु फुरेबे नहि करैक। हरि ई बात तारि गेलाह आ कहए लगलखिन-

"नहि बुझलहक, ई सभ हनुमानजीक चमत्कार अछि, नहि तँ हम तँ खतम छलहुँ"।

से की?" चलह ने हमरे ओहिठाम। दुनूगोटे चैनसँ बतिआएब। कालूक संगे निशा सेहो छलखिन, तेँ चिन्तित भए गेल जे पता नहि कतए लेने जा रहल अछि। हरिक माथा तुरंत काज केलक। कोनो बातक चिंता

नहि करह। हम संगे छिअह ने। हिनको लेने चलह।"

आ तीनू गोटे बिदा भेल। हरिक पाछा-पाछा ओकर सिपहसलारसभ चलि रहल छल। कालू ओ निशाक संगे हरि अपन महलमे पहुँचलाह। घर देखिते कालू छगुन्तामे पड़ि गेल। हरि पुछलखिन्-

"चिंतित बुझा रहल छह?"

"किछु नहि।"

"किछु तँ तोरा मोनमे छह। अपने सभटा बूझि जेबहक। ई सभ हनुमानजीक कृपा छनि।" ई बाजि हरि बैसले छलाह कि महराजी भगता प्रातःभ्रमणसँ आपस आबि रहल छलाह। हरिक घर लग अबितहि हुनका पुछलखिन्-

"अहाँक घरमे के अछि?"

"ई छथि कालू भगत। हमर गामे लग पुरवारिगाममे रहैत छथि।"

"आओर के अछि?"

"हिनके संगी छथिन-निशा।"

महराजी भगताकेँ लगीच अबैत देखि कालू सकपका गेल। मुदा ओ तँ आओर लगमे सहटल आबि रहल छलखिन। निशा सेहो परेसान छलीह। ई सभ देखि हरि बाजि उठलाह-

"अहाँसभ एतेक परेसान किएक छी?ई किओ आन नहि छथि। "

मुदा कालू जे चुप भेलाह से बकारे नहि खुजनि। हरि महराजी भगताकेँ ओ संचिका दैत कहलखिन- "कनी एकरा देखबैक। पता नहि की,की लिखल अछि।" महराजी भगता संचिका लए आगू बढ़ि गेलाह।❑

१५

मखना कतहु गेल नहि छल। लगेपास नुकाएल छल। जाइत कतए। यमराज ओकर यमपुरीक कोडवर्ड जप्त कए लेने रहथि जाहिसँ ओकर यमपाश काज केनाइ बंद कए देलक। ओकर संचिकाक हेराफेरी पकडा़ गेल छल। पक्का सबूत प्राप्त करबाक हेतु मखनाक गतिविधि पर दिन-राति नजरि राखल जा रहल छल। हेरा-फेरी तँ ओ केने रहैक, आब पकड़ेबाक समय आबि रहल छलैक। तेँ ओ अपन भाए कालू लग पहुँचल छल जे कोनो रस्ता निकलत मुदा ओ तँ अपने चक्करमे मस्त छल। यमराजक चेलासभ ओकरा देखि रहल छल। जखन ओ संचिका कालू लग खसओलक तखने यमराज ओकर फोटो खीचि लेलाह। यमराज मोने मोन सोचैत छलाह-

"आब कतए जाएत?पक्का सबूत हमरा हाथ लागि चुकल अछि।"

मखना बहुत फेरल आदमी छल। तेँ ने मरलाक बादो अपन संचिकामे हेराफेरी कए यमदूत बनि गेल। मुदा सभक खेल करवनो-ने-करवनो खतम होइत अछि। सएह मखनासंगे भेलैक, कनी जल्दीए भए गेलैक। यमलोकोमे यमराजक दोसर पत्नीसँ गठजोड़क चक्करमे पड़ि गेल। मामला तेजीसँ चर्चाक विषय भए गेल। यमराजकेँ ओकरापर सक ओहीदिन भए गेलनि जखन गलत व्यक्तिक प्राण खिचबाक हेतु यमपाश लए पहुँचि गेल। जे हेबाक रहैक से भेलैक। यमराज ओकरासँ खिन्न भए गेलाह। ओकर सभटा शक्ति छिनि लेलथि। ओकर यमपाश निष्कृय भए गेल। तखनसँ ओ भागि रहल अछि,नुका रहल अछि मुदा कखन धरि?

यमराज फेर अपन काबीनाक बैसक बजओलथि। ओहिमे मात्र

एकटा विषय छल- “मखनाक धोखाधड़ीक आ ओकरा खिलाफ प्रभावशाली कार्रवाइ। यमलोकक काबीनाक बैसार प्रारंभ भेल। यमराज बजलाह- “वंधुवर! अहाँसभकेँ कुसमयमे आबय पड़ल ताहि हेतु हम क्षमाप्रार्थी छी। असलमे ई धूर्तराज मखना मोसकिल कए देलक अछि। पछिलाबेरक बैसकमे किछु मंत्रीलोकनि ओकरा खिलाफ सबूतक प्रयोजन कहलथि। से लिअ, सबूत हाजिर अछि।"

तकर बाद बड़काटा पर्दापर मखनाक गतिविधिक सद्यःप्रसारण प्रारंभ भेल। मंत्री लोकनि यमराज द्वारा आधुनिकतम तकनीकीक प्रयोग कए मखनाकेँ पकड़ि लेबामे सफल भेलासँ छगुन्तामे रहथि। ओसभ मखनाक एक-एक डेगकेँ सद्यः देखि-सुनि रहल छलाह। मखना अपन भाए कालू भगताकेँ कहि रहल छल-

“भाइ! नहि बूझलिऐक जे यमराजक आदमीसभ एतेक पक्का अछि। हमरा तँ यमपत्नी रेखासँ दोस्ती भए गेल आ से ततेक गहींर भेल चल जा रहल छल जे ओ यमराजोकें ठेंगा देखा देलथि। तकरबाद यमराज हाथ धो कए हमर पाछा पड़ि गेलाह।"

मखना बजने जा रहल छल आ एक-एकटा गप्प यमलोकक काबीनाक बैसारमे मंत्री लोकनि सद्यः सुनि रहल छलाह। मृत्युलोकसँ दूभाषिआ मरिकए यमलोक पहुँचल छल। वएह मखनाक गप्प-सप्पकेँ मैथिलीसँ यमभाखामे अनुवाद कए रहल छलाह। काबीनाक सदस्य लोकनि यमराजक प्रस्तावसँ सहमत भए ओकरा ताजीवन कारावासक स्वीकृति देलथि। तकरबाद काबीनाक बैसार विसर्जित भए गेल। यमराजक काबीनाक फैसलाक क्रियान्वयन हेतु यमराजक पुलिस वारंट लए मृत्युलोक बिदा भेलाह।❑

१६

राजमंत्री कालू भगतकेँ रहबाक हेतु एकटा पैघ कोठरी दए देलखिन। तकरबात हुनकर जलखै,चाह-पानक व्यवस्था हेतु भनसिआकेँ कहि देलखिन। कालूक बेस आव-भगत होमाए लागल। दिन-राति कोना बीति जाइक से ककरो पता नहि चलैक। ओमहर महराजी भगता सेहो कालूसँ संपर्कमे रहथि। मखनाक संचिका पढ़ब आ बूझब हुनकर बसमे नहि रहनि कारण ओकर भाषा बहुत विचित्र छलैक।

महराजी भगता कालू भगताकेँ अपन गुटमे सामिल करबाक प्रस्ताव हरिकेँ देलखिन जे ओ सहर्ष मानि लेलाह। कालूक महराजी भगताक दलमे सामिल हेबाक अधिसूचना निकलि गेल। एहिबातसँ अतिप्रशन्न भए कालू भांग खाए सुति गेलाह। भोरे जखन निन्न टूटल तँ देखैत छथि जे निशाक कतहुँ अता-पता नहि अछि।

यमपुलिससभ मखनाकेँ पकड़बाक हेतु चारूकात पसरि गेल छल। ओकरासभक हाथमे यमपाश छलैक। मुँह-कान भयावह लगैत छलैक। ओ सभ विचित्र प्रकारक वस्त्र पहिरने छल जाहिसँ ओ ककरो देखाइत नहि छल मुदा ओ सभ देख रहल छल। मखना जान बचाबए हेतु चारूकात भागि रहल छल। आब ओकरा मनुक्खक देह तँ रहैक नहि जे मृत्युलोकमे कतहुँ रहि जाइत। ओ तँ यमलोकक रस्तेमे हेरा-फेरी कए यमदूत बनि गेल छल। आब ओकर पोल खूजि गेल अछि, ओ की करए?कोनो रस्ता नहि देखा रहल छलैक। कालू भगता सेहो फेल छल। बहुत मोसकिलसँ ओ बूझि सकल जे मखना ओकर मृत भाए थिक। मुदा किछु मदति नहि कए पाबि रहल छल। मखनाक मौलिक संचिका से

महराजी भगताक कबजामे चल गेल रहैक। सच कही तँ मखना आब चारूकातसँ घेरा गेल छल। पता नहि यमराज ओकर की गति करतैक?

कालू एहि विषयमे महराजी भगतासँ विचार-विमर्ष केलथि मुदा ओ हँसि कए टारि देथि। समाधान किछु नहि कहथि। प्रायः हुनको किछु नहि फुराइत रहनि जे एहि बबालसँ कोना पार पाओल जाए?

एमहर निशाकेँ निपत्ता भए गेलासँ कालू बेचैन छल। "आखिर ओ गेलीह कतए?"-वारंबार इएह सबाल ओकरा मोनमे घुमैत छलैक। अछता-पछता कए ओ महराजी भगता ओतए पहुँचल। रातिक समय छलैक। महराजी भगता पीने बुत्त रहथि। माथ अपना काबूमे नहि रहनि। कालूकेँ देखिते बाजि उठलाह-

"किएक बेचैन छह। निशा महराजक रंगमहलमे अछि आ आब ओतहि रहत। जानक काज होअ तँ कात भए जाह।"

-से कहि ओ दहिना दिसक महलक दिस इसारा केलक। कालूक तामस तँ असमान छुबि रहल छल। ओकरा मोन होइक जे दौर कए महराज लग पहुँचए आ हुनकर गला घोंटि देअए। ओकर मनोभावकेँ महराजी भगता नीकसँ पढ़ि लेलाह। आखिर कतेको सालसँ ओहि हातामे रहि रहल छलाह। मोने-मोन हुनका बड़ हँसी लगैत छल। असलमे ई लफड़ा ओकरे लगाओल छल।❑

१७

महराजक कृपासँ हमर पढ़ाइ नीकसँ चलए लागल। कालेजमे नाम लिखा गेल। कतेको बेर कालेजसँ घुरैत काल माएक ध्यान अबैत छल। मुदा सोची जे किछु एहन काज करी जाहिसँ माता-पिताक नाम अमर भए

जाए। ई काज तँ विद्येसँ भए सकैत छल। विद्याबले लोक बड़का अधिकारी भए सकैत अछि। कलक्टर,जज भए सकैत अछि। किछु संभव अछि। तेँ हम सभ बातकेँ बिसरि पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहैत छलहुँ। दिन-राति परिश्रमपूर्वक पढ़ाइमे लागल रहलासँ परीक्षाफल बहुत उत्तम होइत चल गेल। सभदिन प्रथमश्रणीमे सफल होइत गेलहुँ।

हमर मामाकेँ एहिबातसँ बहुत प्रशन्नता रहैत छलनि जे हम एतेक मनोयोग पूर्वक अपन काजमे लागल रहैत छी। महराज सेहो हमरा बारेमे उत्सुकता रखैत छलाह। जखन करवनो हमरा नीक परीक्षाफल होइत महराज अपना ओहिठाम बजबितथि आ नानाप्रकारक पुरस्कार दितथि। एहिसँ हमर आत्मसम्मान वढ़ैत गेल। हम निश्चय कए लेलहुँ जे निरन्तर प्रयाससँ पराकाष्ठा धरि पहुँचि कए रहब।

एतेक अभाव ओ कष्टमे हम जीबाक अभ्यस्त रही जे सभ किछु हमरा अपन औकातसँ फाजिले भेटि रहल छल। कालेजमे हमर व्यवहार ओ काजसँ शिक्षक लोकनि बहुत प्रभावित रहथि । सहपाठी लोकनिमे हमरा बहुत यश छल। बेर-कुबेर कतेको विद्यार्थीकेँ अपन खर्चौटामेसँ मदति कए दिऐक। जेकरा जे संभव छल से मदति कए दिऐक।

एहने एकटा विद्यार्थी छलि चंपा। जेहने देखए-सुनएमे पवित्र तेहने पढ़ाइमे चौकस। पारिवारिक स्थिति नीक नहि छलनि। तेँ कतेकोबेर कालेज नहि आवथि। पुछितिऐक तँ चुप रहि जैतथि। एहिना एक बेर मास दिन कालेज अएनाइ बंद कए देलथि। ककरोसँ कोनो समाचार नहि भेटए जे आखिर बात की अछि? किएक ओ नहि आबि रहल छथि। ककरोसँ खोलिकए गप्पो करबामे संकोच होइत छल।

एकदिन साँझमे भगवतीक दर्शन हेतु गेल रही। दर्शन कए बाहर निकलि कए प्रसाद सड़िअबैत रही की दूटा बेस जुआएल बानर हमरा

दिस दौड़ल। जाबे किछु बुझबै ताबत हाथमेसँ प्रसादक पोटरी छिनि कए ओ भागि गेल। एकटा बानर पोटरी लेने भागि रहल छल आ दोसर ओकर पाछा-पाछा दौड़ रहल छल। हम अबाक ओकरा दिस देखि रहल छलहुँ कि किओ चिकरल-

"श्रीकांत..!

पाछू उनटि कए देखैत छी तँ चंपाकेँ हँसैत देखलहुँ। मास दिनक बाद ओकरा देखलाक बाद मोनमे बहुत प्रसन्नता भेल। पुछलिऐक-

"कालेज किएक नहि आबि रहल छिही? की बात छैक?"

मुदा ओ किछु नहि बाजलि। हमही पुछलिऐक- "घरमे सभ ठीक-ठाक छौक ने?"

एहि प्रश्नसँ ओ किछु परेसान भए गेलि। फेर नहूँ-नहूँ आगा बढ़ैत कहए लागलि-

"तूँ बूझिए कए की करबह?"

"से की? जहन किछु कहबे नहि करबिही तखन बूझबै कोना?

एतबे गप्प भेल छल की ओ बानर कतहुँसँ फेर आबि गेल आ चंपा पर झपटल। जाबे ओ सम्हरितए, जाबे किओ किछु बुझितैक ताबे ओ चंपाकेँ कै हबक्का मारि चुकल छल।

चंपाक दहिना टांगसँ खून बल-बला रहल छल। ओ जोर-जोरसँ कानए लागलि। बहुत गहींर काटि लेने रहैक। ओकरा चिकरैत-भोकरैत देखि चारू कात कै गोटे जमा भए गेल, मुदा ककरो किछु नहि फुराइक। हम ओकरा उठौने-पुठौने मंदिरक हातासँ बाहर ठाढ़ रक्सापर रखलहुँ आ कहुना कए ओकरा अस्पताल पहुँचेलहुँ।❑

१८

कुकुर कटबाक चौदह दिन धरि चौदहटा नमगर-नमगर सुइआ चंपाकेँ लागल। ओ परेसान भए गेलि। सौंसे पेटमे गेंठीसभ उगि गेलैक। सीसीमे गरम पानि भरि-भरि ओकर माए दिनभरि ओहि गेठीसभकेँ सेकैत रहैत छलैक। कहुना कए सुइआसभ लागल आ ओकरा कुकुर कटबाक कारण भेल घाव सेहो ठीक भेल। हमरा उमीद रहए जे आब चंपा कालेज आएत मुदा से नहि भेल। पन्द्रह दिन आओर बितल। जखन ओ तइओ कालेज नहि आएलि तँ हमरा नहि रहल गेल। ओहि दिन कालेजसँ लौटति काल हम सोझे ओकर घर चलि गेलहुँ।

गुमती लग ओकर घर छल। घर की छल फूसक घरमे कहुनाक फटक लागल छल। कहुना कए ओ सभ ओहिमे रहैत छल आ जीबिओ रहल छल। एक तरफ महराजक बड़का-बड़का देबाल, बड़का-बड़का पोखरि,चारूकात पसरल नाना प्रकारक महलसभ आ एकदिस एकरसभक घर, जे सभसाल कै बेर कए खसि पड़ैत छल। बरखा भेलापर तँ एहि घरक हालत देखए बला रहैत छल। जतेक पानि बाहर खसैत छल ताहिसँ बेसी ओहि घरमे खसैत छल।

ओहि खोपड़ीमे ओकर माए आओर ओ अपने रहैत छलि। पिताक बारेमे चंपाकेँ किछु जानकारी नहि रहैक। की भेलैक, केना भेलैक से चम्पा के किछु नहि बूझल छैक। कै बेर ओ अपन माएसँ एहि विषयपर चर्च करए चाहलक, मुदा ओ बात आगा नहि बढ़ए दैक। किछु बात तँ रहल होएतैक जे ओकर माए ओकर पिताक चर्चो नहि करए चाहैत अछि? ओकर मोनमे ई बात रहि- रहि कए उठैत रहैत छलैक।

चंपाक घर हम पहिल बेर गेल रही। फटकिएसँ ओकर घरक हाल देखि कए हमरा आगाँ बढ़बाक साहस नहि भेल आ हम चोट्टे घुरि गेलहुँ। आब बुझाएल जे ओ सदरिकाल गुम्म किएक रहैत छलि। तथापि ओ सौंसे किलासक आकर्षणक केन्द्र छलि। जेहने वुद्धिक विलक्षण तेहने देखबामे। जे किओ तकैत से तकिते रहि जाइत। ओना कै गोटे ओकरा संग संपर्क बढ़ाबए चाहलक मुदा ओ ककरो घास नहि दैक। सभकेँ होइक जे ई बड़ घमंडी स्वभावक अछि। मुदा से सत नहि छल।

आश्चर्यक बात छल जे ओकरा दुनूक गुजर कोना भए रहल छल। ककरोसँ कतहु किछु मंगैत किओ ओकरासभकेँ नहि देखलक। जाबे चंपा नेना रहए ओकरा कोनो बातक ने जानकारी रहैक ने फिकिर। आब ओ छेटगर भए गेल छलि। कालेजमे पढ़ैत छलि। तेँ समाजक प्रभाव ओकरापर होएब स्वभाविक छल।

एकदिन दूपहर राति कए ओ सुतल रहए कि फट्टक खुजबाक आबाज भेलैक। ओकरा बहुत दिनसँ किछु-किछु बात मोनमे घुमि रहल छलैक। समाधान किछु फुराइक नहि। आबाज सुनि ओ अन्ठा कए पड़ल रहलि। ताबतेमे फट्टक खुजल। ऐकटा बेस नमगर-पोड़गर व्यक्ति ओहिठाम आएल। ओकर माए तैयार बैसल छलि जेना ओकरा पहिनेसँ सभबातक आहट होइक। ओकर माए ओहि आदमी संगे बाहर निकलल आ कतहुँ चंपत भए गेलि। आइ पहिलबेर चंपा एहि दृश्यकेँ अपने देखलक। राति भरि ओ असगरे ओहि घरमे पड़ल रहल। ओकर मोनमे कतेको प्रश्न घुमैत रहल। भोर होबएसँ पहिने ओकर माए फेर ओहिठाम आबि गेलि आ दबल पैरे अपन ओछाओन पर पड़ि रहल जेना किछु भेले नहि होइक।

चंपा भरि राति जगले रहि गेलि। भोर भए रहल छलैक। चारूकात लोकसभ अपन-अपन दिनचर्यामे लागि गेल छल। जाढ़क मासमे भोरक

रौदक आनंद लेबाक हेतु लोकसभ अपन-अपन घरक आगाँ पटिआपर बैसल चाहक संगे मुड़ही खा रहल छल मुदा चंपा अपन ओछाओने पर पड़ल छलि। ओकर माएकेँ बहुत आश्चर्य होइक जे ई आइ एना किएक पड़ल अछि। कालेज जेबाक समय भए गेल छलैक। आखिर ओकर माएकेँ नहि रहल गेलैक।

"चंपा, चंपा" -आबाज लगओलक। मुदा चंपा कोनो सुतल छलि जे उठति? ओ तँ जगले छलि,भरि राति टकटकी लागल रहलैक आ जे देखलक से बूझबामे लागल छलि। ओकर माए कतबो आबाज देलकैक मुदा ओ टस सँ मस नहि भेलैक। कामिनी अपन बेटीक ई हाल देखि बहुत चिंतित भए गेलि मुदा करितए की?सुतल व्यक्तिकेँ तँ अहाँ जगा सकैत छी मुदा जागल के की जगेबैक?

ओहि दिन चंपा कालेज नहि गेलि। दस बजे ओछाओन परसँ कहुना उठि स्नान केलक आ चुपचाप कतहुँ निकलि गेलि। माए पुछबो केलकैक- "कतए जा रहल छैं?

मुदा ओ किछु नहि बाजलि। दिनभरि एमहर-ओमहर बौआइत रहलि आ साँझ भेने घर आबि गेलि। ओकर माए बहुत चिन्तित रहए। बहुत प्रयास केलक मुदा चंपा किछु बाजल नहि। राति भेल। कनी-मनी भोजन कए ओ सुति रहबाक ढ़ोंग केलक। ओकरा ओहि राति किछु नहि देखैलैक। पड़ले-पड़ल पता नहि ओ कखन सुति रहलि।

एहि प्रकारेँ चंपा कालेज गेनाइ छोड़ि देनि छलि। ककरो कोनो बातक थाह नहि चलि रहल छलैक जे ओ एना किएक कए रहल अछि ने ओ अपने किछु ककरो कहैत छलैक। मुदा ओ बहुत परेसान छलि। माएकेँ किछु कहबाक साहस नहि भए रहल छलैक। एक राति एहिना ओ

भगल कए सुतल जकाँ रहए कि माए कैं उठैत देखलक। किओ बेस नमगर-पोरगर व्यक्ति ओकरा उठा लेलक आ ओतएसँ बिदा भए गेल। चंपाकैं नहि रहल गेलैक। ओ पाछा-पाछा बिदा भेल। कनिक कालक बाद एकटा सुरंग देखएमे आएल। कामिनी ओहि आदमीक संगे सुरंगमे पैसि गेलि। चंपा सेहो ओकर पछोर धेने-धेने चलैत रहलि। किछुकाल चललाक बाद एकटा तहखाना देखएमे आएल। ओकर गेटपर एकटा द्वारपाल ठाढ़ छल। कामिनी कैं देखिते ओ फाटक खोलि देलक। ओ दुनू व्यक्ति आगा बढ़ि गेल। चंपा ई दृश्य देखितहि चोट्टे घुरि गेलि। चंपा कहुना कए गुमती लग पहुँचलि। ओतएसँ सटले चंपाक घर छलैक। अपन घर देखि चंपाकैं जान-मे-जान आएल।

भोर भए रहल छल। चिड़इ-चुनमुन अपन खोंतासँ उड़ि कए एमहर-ओमहर करए लागल छल। जाढ़क समय छलैक। महराजी भगता आ कालू भगता मंत्र-तंत्र कए लौटि रहल छलाह। चाहक दोकान पर भफाइत चाह देखि कए चाह पीबाक इच्छा भेलनि। चाह पीबैत-पीबैत कालूक ध्यान निशापर पड़लैक। ओ ओहि समय गुमती पारकए अपन घर दिस बढ़ि रहल छलि। ओ चंपाक सुन्दरतासँ अत्यंत मोहित भए बड़ीकाल धरि एकटक ओकरा देखिते रहि गेल।

कालू लंपट छलहे। ओकर इच्छा भेलैक जे चंपासँ किछु गप्प-सप्प करी। ताहि हेतु महराजी भगता तैयार नहि भेलाह। कहलखिन-

“बेटी ककरो होइक, हमरा लोकनिक कर्तव्य अछि जे ओकर रक्षा करी।"

एतबा इसारा पर्याप्त छल। कालू चुप-चाप महराजी भगताक पाछा-पाछा बिदा भेल।❑

१९

कालू घर पहुँचल तँ पता लगलैक जे आइ महराजक ओतए बैसारमे हुनका कालू संग जेबाक हेतु आदेश भेल अछि। महराजक बैसारक नामेसँ महराजी भगताक पेटमे हर बहए लागल।

"की बात छैक? हमरा किएक बजाओल गेल?" -से सभ सोचए लगलाह। ताबतेमे महराजक सचिवक फोन सेहो आबि गेल- “अजुका बैसारमे अहाँ आबि रहल छी ने? -महराजक सचिव बजलाह।

" अवश्य आएब।"

धराधर स्नान, ध्यान कए महराजी भगता बिदा भेलाह। ताधरि कालू नहि आएल छल। गप्प भेल रहैक जे कालू महराजी भगताकेँ संग करैत बैसारमे जएताह। मुदा ओ समयपर तैयार नहि भए सकलाह। महराजक नामेसँ हुनकर पेट खराप भए गेलनि। कैटा दस्त भेलनि। जहाँ बिदा हेबाक प्रयास करथि कि पेट गुड़गुड़ाए लागनि। आब की होएत? कहुना बिदा भेलाह। विलंब तँ भइए गेल रहनि। ताबते महराजी भगताक फोन आबि गेल ।

"अहाँ आगा बढ़ू, हम सोझे ओतहि पहुँचि रहल छी।" -कालू फोनपर बाजल।

महराजी भगता तँ बिदा भइए गेल रहथि। महराजक महल लगमे पहुँचलाह तँ देखैत छथि जे कालू दौड़ कए केम्हरो जा रहल अछि। इसारासँ किछु कहबाक चेष्टा कए रहल छथि। महराजी भगता छगुन्तामे रहथि जे एकरा की भए गेलैक, कतए जा रहल अछि आ की कहए चाहि रहल अछि?खैर! ओ एसगरे महराजक महलमे पहुँचलाह।

महराजक महल सजल धजल छल। सिपहसलारसँ अपन-अपन स्थानमे बैसि गेल रहथि। राजमंत्री सेहो पहुँचि गेल रहथि। दूटा कुरसी खाली छल। एकटापर महराजी भगता बैसि गेलाह आ कालूक बाट ताकए लगलाह। मोनमे चिंता रहनि जे जँ कालूकेँ आओर देरी भेलैक तँ आइ ओकर जान बचनाइ मोसकिल छैक।

महराजक आगमनक सूचना देल जा रहल छल। समस्त सभासद लोकनि सावधानक मुद्रामे आबि गेल रहथि कि एकटा व्यक्ति धरिआ सरिअबैत धरफराएल सभास्थलमे प्रवेश कए रहल छलाह। महराजी भगता ओमहरे ताकि रहल छलाह। देखितहिँ इसारा देलखिन आ ओ व्यक्ति महराजी भगताक बगलमे खाली कुरसीपर बैसि गेलाह। महराजी भगता तामसे भेर छलाह। मुँह लाल भए गेल रहनि। होनि जे ओकरा कंठ पकड़ि कए ओतएसँ फेकि दी मुदा किछु नहि कए सकलाह। महराज प्रवेश कए रहल छलाह। तैओ ओ बड़बड़ेलाह- “कालू... ।"

महराजक सिपहसलार सभ चिचिआ उठल-

“सावधान! महराजाधिराज! प्रवेश कए रहल छथि।”

सभ किओ ठाढ़ भए गेलाह। पंडित लोकनि महराजक सम्मानमे श्लोकक पाठ करए लगलाह। महराज नहूँ-नहूँ आगा बढ़ि रहल छलाह। पाछूसँ एकटा सिपहसलार बड़का पंखा हौंकि रहल छल। महराजक शोभा तँ देखैत बनैत छल। ओ अपन आसन ग्रहण केलाह। चारूकातसँ लोकसभ बाजि उठल- “महराजाधिराजक जय हो" तकरबाद राजक गबैआसभ मंगलस्तुति गओलथि। महराज मंद-मंद मुस्कान दए रहल छलाह। रतुका भांगक असर गेल नहि छल तथापि अपनाकेँ सम्हारने छलाह। सभसँ पहिने राजमंत्री बजलाह-

"महानुभाव लोकनि! महराजक आज्ञा हो तँ आजुक कार्यवाही

प्रारंभ हो।"

महराज बजलाह- "एवमस्तु।"

राजमंत्री उठि कए आजुक सभाक कार्यवाही प्रारंभ केलाह। ऐतबहिमे ठनका जकाँ गरजैत आकाश मार्गसँ कथुक प्रवेश भेल। महराज सकदम छलाह। मंत्रीगण एक-दोसर दिस देखए लगलाह। राजपंडित महराजी भगतासँ पुछलाह- "ई की भए रहल अछि?

"किओ यमपाश फेकलक अछि। बहुत अशुभ संकेत अछि।"

-महराजी भगता बजलाह। कालूकेँ तँ जेना बुद्धिए हेरा गेल रहनि। पहिलबेर महराजक ताम-झाम देखि रहल छलाह। महराजक दिस तकैत राजपंडित बजलाह- "श्रीमान! लगैत अछि यमलोकसँ यमदूतसभ सभास्थलकेँ घेरि लेलनि अछि।"

"कारण?" -महराज बजलाह।

से तँ महराजी भगते कहताह" -राजपंडित बजलाह।

ताबतमे तीन-चारिटा यमदूत उपस्थित भेल। महराजकेँ किछु देखा नहि रहल छलनि। मुदा महराजी भगता सभ देखि रहल छलाह। ओ यमदुतसभसँ प्रश्न केलखिन- "अहाँसभक की समस्या अछि आ एहि सभामे किएक अएलहुँ अछि से स्पष्ट करू?"

"हमसभ यमराजक जासूस छी। यमलोकमे मखनाकेँ गिरफ्तार करबाक आदेश भेटल अछि मुदा ई तरह-तरहक फरेब कए बचबाक प्रयास कए रहल छल। बहुत मोसकिलसँ एकरा पकड़ल गेल अछि। आब ई कहि रहल अछि जे ई जे किछु केलक से एकरा बिसरा गेल अछि। एकरा पासमे एखनो यमपाश अछि जे ई महराजक महलमे कतहुँ नुका

देने अछि। एही बातक तहकीकात करबाक हेतु हमसभ एतए आएल छी। “

"मामला तँ बहुत गंभीर थिक। सभकाज छोड़ि पहिने एकरे समाधान कएल जाए" -महराज बजलाह।

“समाधान हमरा लोकनिक हाथमे नहि रहि गेल अछि महाराज!"

“से किएक?'

"ई ने आब जीबैत अछि ने मृत। एकर आत्मा बीचेमे लटकि गेल अछि?"

“से केना भेलैक?"

"ई मरलाक बाद यमलोकक रस्तामे हेराफेरी केलक जाहिसँ एकर संचिकामे सभटा उल्टा-पुल्टा भए गेलैक। आब ई देखार भए गेल अछि। यमलोकमे एकरा दंड देबाक एलान भए गेल अछि मुदा समस्या अछि जे एकरा पकड़ल कोना जाए? यमपाशसँ ई कब्जामे नहि आबि रहल अछि।"

"तखन की होएत?"

"कालू ओकर भाए छैक। इएह ओकरा पकड़ा सकैत अछि।"

"कालू कहाँ अछि?"

"जी सरकार !" -कालू बाजल।

तूँ तुरन्त एहि समस्याक समाधान करह नहि तँ तोरा फाँसी दए देल जाएत।"

महराजी भगता कालूकेँ चुप रहबाक इसारा केलक। कालू डरे थर-थर काँपि रहल छल। राजमहलक एक कोनमे नुकाएल मखना सभटा

देखि रहल छल। ओ गरजैत-फरजैत यमदुतसभ पर आक्रमण कए देलक। महराज किछु बुझितथि ताहिसँ पूर्वे हुनकर सिपहसलार लोकनि हुनका लेने चलि गेल। एहि तरहेँ राजसभा अनायासे विसर्जित भए गेल।❑

२०

महराज भांगक निशामे बुत्त छलाह। ताहि हालतमे हुनका राजसभामे किएक आओर के अनलक? एहि विषयपर बहुत घमर्थन भेल। सभ एक-दोसरकेँ नाम लए रहल छल। अन्तमे राजमंत्री आगू बढ़लाह आ कहलखिन- “आब एहि बातपर घमर्थन करबाक कोनो औचित्य नहि अछि। जे काजक गप्प अछि से करू।"

'एकदम वाजिब बात कहि रहल छथि। सभ किओ मखनाकेँ पकड़ेबाक जोगार करू नहि तँ कालूकेँ जान नहि बाँचत।" -राजपंडित बजलाह।

"मुदा ई ककरो बशमे नहि अछि। ओकर एँड़ी उल्टा छैक नेसे नहि देखाइत अछि? ओकरा कोना आ केँ पकड़त?" -महराजी भगता बजलाह। बहुत कालधरि एहि विषयपर चर्च होइत रहल। ओतए मखना छद्मरुपसँ हवामे विद्यमान छल आ मोने-मोन हँसि रहल छल। समस्या बढ़ले जा रहल छल, कारण यमदूतसभ चारूकातसँ सभ महलसभकेँ घेरि लेने छल। सभक हाथमे यमपाश छल। ओ सभ रहि-रहि कए महराजी भगताकेँ धमकबैत छल-

"तोहर महराजक प्राण लेने बिना आपस नहि जाएब। जौँ हुनकर नीक चाहैत छह तँ मखनाकेँ आपस करह।"

"मखनाकेँ पकड़ब हमरासभक वशमे नहि अछि।" -महराजी भगता बाजल।

"से तूँ जानह आ तोहर काज जानह। हमसभ तँ यमराजक आज्ञाक अधीन छी। जे ओ कहताह से करब। आखिर मखना अछि तँ महराजेक प्रजा। तखन ओकर जिम्मा ककर होएत? तूँही बाजह?"

-यमदूत कहलक। एतबा कहि ओ यमपाश जोरसँ घुमा देलक। चारूकात हाहाकार मचि गेल। जकरे-तकरे मोन खराप होबए लगलैक। महराज सेहो बेहोश भए गेलाह। महराजकेँ इलाज हेतु राजवैद्य बजाओल गेलाह। ओ कतबो किछु करथि महराजक हालत खरापे भेल गेलनि।

"आब की होएत?” -राजपंण्डित बजलाह।

सूर्यास्त लगीच छल। यमदूतसभक धैर्य जबाब दए रहल छल। ओ सभ यमराजकेँ फोन लगओलक-

"सरकार! मखनाकेँ पकड़ब मोसकिल लागि रहल अछि?"

"किएक?"-यमराज बजलाह।

मखना बहुत पिछ्छर भए गेल अछि।" -यमदूतसभ बजलाह। ताबे महराजी भगता कालूक मूल संचिका लेने अएलाह। संचिका देखि यमदूत बहुत प्रशन्न भेलाह आ तुरन्त ओकरा अपना कबजामे लए लेलथि। यमदूतसभ यमराजकेँ फोन केलक।

"सरकार! कालूक मूल संचिका भेटि गेल मुदा यमपाश अखनो नहि भेटल अछि, ने मखना काबूमे आएल अछि।'

"चिंता नहि करह। संचिका लए चलि आबह मुदा महराजकेँ सख्त चेतौनी दए दहक जे मास दिनमे मखनाकेँ हमर दरवारमे हाजिर करथि अन्यथा हुनकर भगवाने मालिक।" -यमराज बजलाह।

यमराजक आज्ञा पाबि यमदूतसभ ओहि संचिकाकेँ अपन कब्जामे लेलक आ यमलोक बिदा भए गेल।❑

२१

महराजक दरबारमे हाहाकार मचि गेल। यमदूतसभ जाइत-जाइत जे चेतौनी देने गेल ताहिसँ महराजक निन्न उड़ि गेलनि। राजपंडित, महराजी भगता आ राजमंत्रीक समिति बनाओल गेल जे एहि विषयमे तीन दिनक भीतरमे अपन विचार देत जे एहि संकटसँ कोना पार पाओल जाएत। कालू भगताकेँ बजाओल गेल आ ओकरा सख्त निदेष देल गेल जे कोनो हालतमे यमपाश आ मखनाकेँ हाजिर करए। ताहि हेतु ओकरा चौबीस घंटा समय देल गेल। कालूक प्राणपर संकट छल से ओ नीकसँ बूझि रहल छल मुदा करए की?

समस्या बहुत गहींर भए गेल छल। महराजी भगता यमपाशकेँ ताकएमे लागि गेलाह। समस्त मंत्र-तंत्रक दिन-राति प्रयोग करए लगलाह। एकदिन एहिना महराजी श्मशानमे मंत्र फूकि रहल छलाह कि ध्यानमे लोटना अएलनि।

"ई के अछि?वारंबार किएक ध्यानमे आबि रहल अछि।"

-महराजी भगता सोचथि। जहन कोनो समाधान नहि फुरेलनि तँ ओ हमर मामा लग गेलाह। मामा आ हम आपसमे पढ़ाइ-लिखाइक बारेमे गप्प कए रहल छलहुँ। ओही क्रममे चंपाक गप्प सेहो उठि गेल। मामा कहलाह- “तूँ चंपाक चिंता नहि करह। हम महराजसँ एहि विषयमे गप्प करब जाहिसँ ओकरा मदति भेटि जाइ" -हुनकर बातसँ बहुत प्रशन्नता

भेल। चाह खतम नहि भेल छल। गप्पो चलिए रहल छल कि महराजी भगता पहुँचलाह। ओ बहुत चिंतित लगैत छलाह। मामा बजलाह- “आउ, आउ। नीके छी ने?"

की नीके रहब?दिन-राति चिंतामे समय बीति रहल अछि।"

"से की?"

"मखना काबूमे नहि आबि रहल अछि। आइ पूजामे लागल रही कि एकटा युवक ध्यानमे देखाएल। ओकरा हम चिन्हि नहि सकलहुँ। पता नहि के अछि? किएक ध्यानमे आएल?" -महराजी भगता बजलाह। फेर अपन हाथसँ कागजपर ओहि व्यक्तिक फोटो बना देलथि। फोटो देखिते मामा बजलाह- “ई तँ लोटना अछि।"

"के लोटना?" -महराजी भगता बजलाह।

राजमंत्रीसँ लोटनाक हुलिआ भेटलाक बाद महराजी पुलिस ओकरा ताकएमे लागि गेल। ओ टीसनक प्लेटफार्मपर चाह-पानक दोकान करैत छल। एकदिन भोरे टहलैत रहए कि ओकरा दू हाथक एकटा बेस भरिगर डंटा आकाशसँ खसैत देखेलैक। ओ तँ भागक तेज छल नहि तँ ओ डंटा ओकर मुड़िएपर खसि पड़ितैक। ओ डंटाकेँ अपन आलमीरामे राखि देलक, कारण ओहिमे किछु विचित्रता छलैक। रातिकए चमकए लगैत छलैक। असगर भेलापर ओहिमेसँ विचित्र ध्वनि निकलैत छलैक। लोटनकेँ किछु नहि बुझेलैक जे आखिर ई की अछि?तेँ ओ ओकरा वंद कए राखि देलक।

महराजी पुलिस संगे सदल-वल महराजी भगता लोटनाक राजपुरा डेरापर रातिमे पहुँचल। ओ तँ सकपका गेल। महराजी भगता कहलखिन- “तोरालगमे यमपाश छौ, ओकरा लेने आबै नहि तँ तोहर मृत्यु निश्चित अछि।

“हमरा एकटा डंटा किछु दिन पहिने भेटल छल। ओ की अछि से हमरो नहि बूझल अछि। अहाँ कही तँ लेने आबी।"

"लेने आबह।"

ओ आलमारीमे राखल डंटा लेने आएल। डंटा देखिते महराजी भगता हँसए लगलाह। इएह यमपाश थिक। एकरा घरमे राखब अशुभ थिक। तेँ हम एकरा लेने जाइत छी ।"

"ठीक छैक।" -से कहि ओ यमपाश महराजी भगताक हाथमे थम्हा देलथि। मुदा ओकर मोनेमे गुन-धुन करैत रहलैक जे आखिर महराजी भगता एहि डंटा लए की करताह? महराजी भगता ई बात तारि गेलाह आ ओकरा अपना संगे-संगे चलबाक हेतु कहलखिन।

यमदूतसँ कनिके दूर पर छल कि महराजी भगता हाक देलकैक आ अपन दहिना हाथमे यमपाश हिला-हिला कए देखाबैक मुदा यमदूतसभ घुरल नहि। ओ सभ गेल से गेल। आब की करी" -महराजी भगता मोने-मोन सोचलाह। सबाल ई रहैक जे यमदूतकेँ किओ किएक बजाओत? भने फटकी चलि गेल।

प्रात भेने समितिक बैसारमे महराजी भगता यमपाश आ लोटनाक संगे उपस्थित भेलाह। यमपाश देखिते राजपंडितक हुलिआ खराप होबए लागल। डर भेलनि जे कहुँ ई यमपाश चालु भए गेल तखन की होएत? हुनकर हाल देखि राजमंत्री पुछलखिन-

“की बात छैक पंडितजी?"

पंडितजी गुम्म भेलाह से किछु बजबे नहि करथि। महराजी भगता लोटनाकेँ डंटाक भेटबाक विज़यमे पुछलखिन। लोटनाकेँ राजमंत्री नीकसँ चीन्हि गेल रहथि मुदा ओ हुनका नहि चीन्हि सकलनि। खैर! जे

भेल-से-भेल। समिति ई निर्णय केलक जे कालू भगता यमपाशकेँ यमलोक पहुँचेबाक जिम्मा लेथि तखने हुनकर जान बँचि सकैत अछि अन्यथा ओ जानथि आ हुनकर काज जानए। " आब कालू लग विकल्पे की छल? ओ यमपाश लए लेलक आ एहि प्रयासमे लागि गेल जे कहुना ओकरा यमलोक पहुँचा दिऐक।

प्रातः काल महराजी पोखरिक मोहारपर ओ बैसल छल। मोने-मोन मखनाकेँ आवाहन केलक। देखिते, देखिते मखना हाजिर भए गेल।

"की बात छैक कालू भाइ? किएक गोहरेलह?"

"ई यमपाश तोरे छह। एकरा लएह आ कोनो उपायसँ एकरा यमराजकेँ आपस कए दहक नहि तँ हमर जान गेले बूझह।"

“से की?"

"जे कहैत छिअह से सुनह, खाली बहस केलासँ किछु नहि होएत। समय बहुत कम अछि।"

“ठीक अछि। लाबह यमपाश।"मखना यमपाश लेलक आ ओकरा आगा-पाछा करए लागल। किछु-किछु कोडवर्ड दए ओकरा सक्रिय करबाक प्रयासमे लागि गेल। किछु, किछु करैत छल कि ओ एकहिबेर चिचिआ उठल-

"मोन पड़ि गेल। कोडवर्ड मोन पड़ि गेल।"मखनाक यमपाश सक्रिय भए गेल छल। आब की होएत? ई समाचार तुरंत यमराज केँ भेटलनि।

"मखनाक हाथमे यमपाश सक्रिय भए गेल। आब की करब?"- सभ सभासद गुम्म पड़ि गेलाह।❑

२२

मखना सोचलक जे सभ झंझटक जड़ि यमराजे थिक। किएक नहि, सभसँ पहिने एकरे साफ करी आ तकर बाद निश्चिन्तसँ यमलोकपर राज करी। बात तँ लाख टकाक रहैक। बहुत आगूक योजना बनओलक। दोसर बिचार मोनमे अएलैक जे राजपुरामे महराजक सभचीज बनले छनि, ओकरे कब्जिआ लेल जाए। महराजक ऊपर यमपाश फेकि हुनके सुडाह कए देल जाए। बाह रे मखना! केहन लाजबाब माथा पओने अछि। मरिओक सभकेँ नचा रहल अछि।

मखनासंगे समस्या रहैक जे ओ बेसी पढ़ल-लीखल नहि रहए। बेसी उठा-पठक कएल नहि होइक। रहल यमलोक से तँ ओतए यमराजक अधिपत्य छनि। हुनकर अपन सेना छनि,पुलिस छनि, अस्त्र-शस्त्र छनि। ओहिठाम जवरदस्त झंझट भए सकैत अछि। इएह बात सभ ओ सोचैत रहलाह।

महराज तँ बेसी काल बेहोशे रहैत छलाह। छप्पन प्रकारक भोग लगैत छल। जे खेला से खेला नहि तँ हुनकर सिपहसलारसभ ओकरा राजप्रसाद बूझि बहुत आनन्दसँ पबैत छल। भोजन करितहि अपन महलमे टगि जाइत छलाह। एकटा-दुटा रानी रहनि तहन ने। कैटा तँ बाटे तकैत रहि जाइत छलीह। महराज ऐश-मौज नहि करताह तँ के करत? अहीँ कहू? से ओ कए रहल छलाह।

मुदा जहिआसँ यमदूत धमकी दए गेल हुनकर माथा बेचैन रहैत छलनि। जानक डर तँ सभकेँ होइत अछि। राजपंडितसँ लए कए राजमंत्री धरि सभ परेसान छलाह। आब की होएत?

देखैत-देखैत मासमे सँ पचीस दिन बित गेल। मखना पकड़ल नहि जा सकल। महराजक हालत खराप भेल चल जा रहल छल। मुदा असली संकट तँ मखनासँ आबि गेल छल जकरा हाथमे यमपाश फेरसँ सक्रिय भए गेल छल। आओर ओ आदमिओ छल खुराफाती। कहीं महराजेकेँ ने लए बैसए?

मास दिनमे आब एक्के दिन बाँचल छल। महराजक दरबारमे सभ परेसान छल। मखना काबूमे नहि आएल। यमलोकसँ फोन-पर-फोन आबए लागल। हालत तँ ई भए गेल जे महराजकेँ आब फोनो छुबामे डर होइत छलनि। महरानीक संगे भोरे चाह पीबि रहल छलाह कि आकाशवाणी भेल- “मास दिनक अवधि आइ साँझमे समाप्त भए रहल अछि। मखनाकेँ यमलोक जँ नहि पठा सकब तखन अपनेकेँ ओतए जाए पड़त।"

एतबा कहि आकाशवाणी बंद भए गेल। महराज थर-थर काँपि रहल छलाह। महरानीकेँ किछु बूझेबे नहि करनि जे आखिर की बात भेलैक जे महराजक ई हाल भए गेल। महरानी चाह छोड़ि बाहर दौड़लीह। बरामदामे राजपंडित मंत्र पढ़ैत मंदिर दिस जा रहल छलाह। हुनका अपसिआँत देखि पुछलखिन- “की बात?"

"महराजकेँ यमलोकसँ आकाशवाणी भेलनि अछि।"

"की कहलकनि?"

"अपने अंदर आबिकए देखि लिअ। महराज बहुत परेसान छथि।"ताबतेमे चारूकात आपत्तिकालीन घंटी घना-घन बाजए लागल। यमलोकक दूतसभ अपन-अपन स्थान ग्रहण कए चुकल छल। महराजकेँ छातीमे भयानक दर्द उठलनि आ ओ बाप-बाप चिचिआए लगलाह।

चारूकातसँ जे जतहि छल से पहुँचि गेल। महराजकेँ घेरि लेलक। महराजी भगता राजपंडितक संग किछु मंत्रणा करैत छलाह, ताबतेमे राजमंत्री सेहो ओतए पहुँचि गेल।

यमपाश भेटि गेलाक बाद मरवनामे अद्भुत शक्तिक जागरण भए गेल। आब तँ यमदूतोसभ ओकरा लगीचमे अएबासँ डरा रहल छल आ महराजी भगताक तँ कथे कोन? ओ तँ अपन जान लेल प्रार्थना कए रहल छल। जोर-जोरसँ मृत्युंजय जप करए लागल।

मरवनाक हाथमे यमपाश देखि कए यमराज बहुत परेसान भए गेलाह। सोचलाह जे किएक नहि एकरासँ सोझे हिसाब-किताब कए ली। पुछलखिन- “मरवना तूँ की चाहैत छह?"

"पहिने अपन नेत शुद्ध करबह तखने किछु गप्प करबाक फएदा छैक।"

""हम जे बाजब ओहि पर कायम रहब।"

"तकर की विश्वास?"

"तोरा जेना विश्वास हो सएह कएल जाए।"

"रेखाकेँ बजाउ। ओ कहतीह तखने हम मानब। अहाँक कोन ठेकान?"

यमराज रेखाकेँ मोबाइल फोनपर फोन केलाह।

"की बात छैक? जखन-तखन फोन कए दैत छी?" रेखा कहलखिन।

“हालात तेहने भए गेल जे फोन करए पड़ल।”

"की बात छैक?"

"मरवना बजा रहल अछि।"

“ओ कतए अछि?"

“यमलोक आ मृत्युलोकक बीचमे। "

"ऍँ! से कोना भेल?"

ओ सभ छोड़ू। काजक गप्प करू" -से कहि यमराज मखनाकेँ रेखासँ सोझे गप्प करा देलथि। मखनाक खुशीक अंते नहि छल। ओ बाजल- “यमराज अपने महान छी। जँ अपने हमर एकटा बात मानि ली तँ हम अहाँक जान बकसि देब।"

"खोलि कए बाजह जे की चाहैत छह?"

"रेखाकेँ हमरा सुंझा दिअ आ चैनक बंसी बजाउ।"

महराज तंग रहबे करथि। सोचलाह जे जान बाँचत तँ फेर कोनो ओरिआन भए जए जाएत। कहलखिन- “एवमस्तु।"

“एकटा बात आओर"

“कहह।"

"यमदूतसभ हमर यमपाशसँ फराके रहथि।"

"तकर माने की?"

"माने साफ अछि जे हम जकरापर यमपाश चलाबी तकरासँ अहाँ लोकनि फराके रही।"

“एहि तरहेँ तँ व्रह्माक विधाने फेल भए जाएत। तूँ एना तँ नहि कए सकैत छह।"

"एकटा समाधान भए सकैत अछि।"

"की?"

"महराजक क्षेत्र हमरा सुंझा दिअ। एहि क्षेत्रक ब्रह्माक कागज-

पत्तरसभ हमरे लग रहत। सारांश जे हिनका लोकनिक मृत्युक हिसाब-किताब सोझे राजपुरा मुख्यालयसँ नियंत्रित होएत।"

"की बात करैत छह? एकहुटा कागज सोझ रहत? एहिठाम तँ तोरा सन-सन कतेको विद्वान घूमि रहल छथि।"

"देखू, बातकेँ बतंगर नहि करू। जँ अहाँकेँ जान बचेबाक अछि तँ हमर बात मानहि पड़त, नहि तँ हम नहि जानी... ।"

यमराज फेर बजलाह- “एवमस्तु।"

मरवना मोंछ पिजओलक आ यमपाश लहरबैत आगा बढ़ि गेल। यमराजोकेँ जान-मे-जान अएलनि।" केहन-केहन फेरल लोक होइत अछि औ बाबू! यमराज मोने- मोन सोचैत अपन महलमे विश्राम हेतु चल गेलाह।❑

२३

ओहि दिन हम मामा संगे गप्प करैत रही। ओ कहलाह जे चंपाक संबंधमे महराजसँ गप्प भेल रहनि। ओ ओकरा मदति करबाक हेतु तैयार छथि। पढ़ाइ-लिखाइक सभटा खर्चा महराजक तरफसँ होएत। ताहि हेतु जरूरी आदेश सेहो कए देल गेल अछि। हम तुरंत फोनसँ चंपाकेँ एकर जानकारी देबए चाहलहुँ। मुदा ओकर फोन लगबे नहि करैक। लगातार “फोन बंद अछि" -बजैत रहैक। आब की भेल?

हमरा चिंता जोड़ पकड़लक। तुरंते ओकर घर दिस बिदा भेलहुँ। कोनो एक्का भेटबे नहि करए। पैरे चलैत-चलैत चौक धरि पहुँचि गेलहुँ। संयोगसँ एकटा तिपहिआमे एकटा जगह खाली रहैक। तुरंत ओहिमे बैसि गेलहुँ। रस्ते-रस्ते ओकर फोन लगेबाक सेहो कोशिश करैत रहलहुँ। कथी

लेल फोन लागत। देखिते-देखिते गुमती लग पहुँचि गेलहुँ। तिपहिआबला टाहि देलक- “गुमति, गुमति" तँ हमर ध्यान ओमहर गेल। तिपहिआबलाकेँ किराया दए झपटि कए चंपाक घर दिस बिदा भेलहुँ। ओतए गेलहुँ तँ चंपाक कोनो अता-पता नहि छल। किओ-किओ कहलक जे महराजी भगता आएल छल आ ओकर खोपड़ीकेँ तोड़ि देलक। हम पुछलिऐक- “आ चंपा कहाँ गेल?" किओ कोनो निजगुत बात नहि कहलक। तामसे मोन भेर भए गेल। मोन होइत छल जे महराजी भगताकेँ ओतहि नरेठी दावि दी। तुरंत मामाकेँ फोन लगेलहुँ। मामा हमर तामसकेँ तारि गेलाह। कहए लगलाह-

"एतेक परेसान किएक छह?"

'"महराजी भगता केहन जुलुम केलक अछि से नहि बुझा रहल अछि?"

"से तँ बूझि रहल छी मुदा तमसेलासँ तँ किछु नहि होएत। बनितो काज विगड़ि जाएत। पहिने पता तँ कए ली जे बात की छैक? तूँ परेसान नहि होअ। एहिठाम आबि जाह। ताबे हम पता लगबैत छी जे बात की छैक।"

“ठीक छैक। हम आबि रहल छी।" -से कहि हम फोन राखि देलहुँ आ तुरंत एकटा एक्कापर एसगरे मामाक घर दिस बिदा भए गेलहुँ।

महराजी भगता होउक,की महराजी पंडित-सभ तँ महराजेक इसारापर काज करैत अछि। ई सभ एहन व्यक्ति नहि छथि जे अपने मोने किछु करथि। तेँ राजमंत्रीकेँ अंदाज रहनि जे एहू मामिलामे कतहुँ-ने-कतहुं महराजक घालमेल जरुर होएत आ जँ से बात अछि तँ ओहि लफड़ामे के पड़त? अड़रीक खेतमे प्राण के देत?बात खाली चंपेक नेने छलैक, ओकर माए लए कए सेहो हम बहुत परेसान रही। आखिर ओ

कतए गेलीह,जीवितो छथि कि नहि? एतबा तँ अनुमान भए रहल छल जे चंपाक परेसानीक मूल कारण ओकर माए छथि। मामा एहि मामलामे बेसी रुचि नहि लेबए चाहैत छलाह कारण जँ महराज तमसा गेलाह तँ भगवाने मालिक।

हम एक्का बलाकेँ पाइ देलिऐक आ दौरले मामा लग पहुँचि गेलहुँ। मामा जलखै कए रहल छलाह। हमरो आग्रह केलाह मुदा हमरा तँ भूख-पिआस सभ खतम छल। जाबे चंपाक हाल नहि बुझाइत अछि ताबे हमरा चैन कतएसँ होइत। ई बात मामा सेहो बूझि रहल छलाह। तेँ हमरा ओतए पहुँचितहि महराजी भगताकेँ फोन केलाह। महराजी भगता जबाब देलकनि- “हम अहीँ ओतए आबि रहल छी। सामना-सामनी बात होएत तँ बेसी नीकसँ बुझबैक। मामाकेँ अन्दाज लागि गेलनि जे किछु गहींर बात छैक जे ओ सभ लग नहि बाजए चाहैत छथि।

महराजी भगता कनीके कालमे आबि गेलाह। ओ बेस चिंतित लागि रहल छलाह। अपने बाजए लगलाह- “ई कालू भगताकेँ अपने एतए आनि नीक नहि केलहुँ। ओ तँ महाचौपट आदमी अछि। रनिवासक महिलासभकेँ डिठिऔने रहैत अछि। जासूससभ महराजकेँ सूचना दए देलकनि अछि। कखनो ओकर जान जा सकैत छैक। हम ओकरा बुझेबाक बहुत प्रयास केलहुँ मुदा ओ अपन चालिसँ लाचार अछि। आब अहीं कहु जे की कएल जाए? आइ-ने-काल्हि ई मामला अहाँ लग अएबे करत? किएक ने पहिने अहाँक जानकारीमे दए दी। सएह सोचि कए हम अहाँकेँ सभ बात कहब उचित बुझलहुँ।"

"मुदा बात की छैक?"

"अरे एकटा-आधटा बात रहए तहन ने ओ कहि दी आ मामला सलटि जाए। ई आदमी तँ महाघनचक्कर लागि रहल अछि, जतहि कोनो

सुन्दर महिला देखैत अछि, एकर सुधि-बुधि खतम भए जाइत अछि।"

"ऐँ! एहन बात छैक?"

"आओर की, नहि तँ हमरा कुकुर कटने छल जे भोरे-भोर अहाँकेँ तंग करितहुँ।"

"ओ बात तँ बहुत गहींर बुझा रहल अछि। मुदा समाधान की होएत?"

"हम तँ एकरासँ तंग भए गेल छी। ऊपरसँ एकर भाए- मखना से बहुत शक्तिमान भए गेल अछि। ओ यमराजकेँ ततेक डरा देलक जे राजपुराक मृत्यक हिसाब-किताब सभटा ओकरे हाथमे सुन्झा देलखिन।"

"महराजकेँ एकर छिज्जाक जानकारी छनि कि नहि?"

"एहन कोन बात छैक जकर जानकारी हुनका नहि होनि। डेग-डेगपर तँ जासूस लागल अछि। ओहो रनिबासमे। ओहिठाम तँ महराजक खास जासूससभ दिन-राति लागल रहैत अछि।"

"तखन महराज एकरा बकसने कोना छथि?"

"महराजकेँ भांग पिबासँ होश होनि तखनने किछु आओर सोचताह? जहिए भक टुटलनि ई गेल घर अछि। अपने तँ जेबे करत, हमरो लए जाएत?"

"से कतहुँ भेलैक अछि ?"

"देखैत रहबैक। एहिठाम कोनो हिसाब-किताब नहि रहैत छैक जे महराज ककरा पर विगड़ि जेताह। तामस हेबाक काज।'

“बड़ संकट बुझा रहल अछि।"

"तेँ ने हम दौड़ले अहाँ लग अएलहुँ जे अहाँ बुझनिक लोक छी, किछु समाधान निकालब। `'

"हम की समाधान निकालब? ओकरा अपन भगतैक बहुत दाबी छैक। ऊपरसँ मरखना से सशक्त भए गेल अछि।"

से सभ सुनि मामा बहुत चिंतित भए गेलाह। फेर कहलखिन-

“अखन टटका समस्या ई अछि जे श्रीकांतक कालेजक संगी चंपा कै दिनसँ नहि भेटि रहल छनि। ओकर माए से निपत्ता छैक।"

मामा बाजिए रहल छलाह कि महराजी भगता लपकि लेलाह- “चंपाक माए महराजक खास छैक। एमहर किछु दिनसँ ओ किछु चक्करमे पड़ि गेल छथि जे जानकारी महराजकेँ जासूस सभ देलक, तकरबादेसँ ओ निपत्ता अछि।"

“आ चंपा कतए अछि?"

"कालू भगता चंपाकेँ तंग करैत छलैक। से जानकारी केना-ने-केना महराजकेँ भेलनि। ओ ओकरा महिला छात्रावासमे रखबा देलखिन अछि।"

हमरा नहि रहल गेल।

"एकर माने जे महराजकेँ सभबातक जानकारी छनि?" -ओ पुछलक।

“तोरा की बुझाइत छह। राज-पाट ओहिना नहि चलैत छैक?”

"मुदा चंपा कोन छात्रावासमे छथि?"

"से महराजसँ के पुछत?"

"ककरो तँ बूझल हेतैक?"

"तोरा एतेक परेसानी कथीक छह?"

"इहो कोनो बात भेलैक? हमर कालेजक संगी अछि। एकहि किलासमे पढ़ैत अछि। तखन चिंता कोना ने होएत?"

बाता-बाती बढ़ैत देखि मामा बीचमे पड़ि गेलाह।

"कतहुँ छैक, ठीक छैक ने। एतबे बहुत नीक बात।"

मामा बजलाह। हमहु चुप भए गेलहुँ।

ताबतेमे कालू भगता कतहुँ सँ घुमैत-फिरैत आबि गेल। महराजी भगता ओ राजमंत्रीजीकेँ प्रणाम केलक। आ पुछि बैसल-

"की हाल छैक श्री कान्त?"

हम किछु नहि बाजि सकलहुँ।❑

२४

सभहक समय उदयास्त होइत अछि, सएह कालू भगताक संग सेहो भए रहल छल। एक समय महराज ततेक तमसा गेल रहथिन जे लागैक जे ओ गेल। मुदा आब? आब तँ ओकर भाए सर्वशक्तिमान भए गेल छैक। जानक भए ककरा ने होइत अछि? आ तकर कमान आबि गेल रहैक मरवनाक हाथमे।

महराजी भगता होथि चाहे महराजी पंडित सभ चिंतित छलाह। महराजकेँ तँ बकोर लागल छल। बिना दंडक भयकेँ राज-काज चलत कोना? ककरो जे ओ फाँसीक दंड देथिन से चलत कोना। यमपाश तँ मरवनाक हाथमे छल। एहि विषयपर मंत्रणा हेतु राजसभा बजाओल गेल। भोरे एगारह बजे महराजकेँ तैयार कराओल गेल। नहा-सोना कए राजकीय वस्त्र पहिर महराज सभामंडप बिदा छलाह कि तरमरा कए खसलाह। चारूकात हरकंप मचि गेल। सभ जहाँ-तहाँ दौड़ रहल छल।"की भेल,की भेल? सभ एक-दोसरकेँ पुछि रहल छल मुदा ककरो

एतेक पलखति नहि रहैक जे दोसरकेँ जबाब देत। चारूकात लगैत छल जेना बिड़रो मचि गेल।

मखना तँ राजक हातेमे अपन मुख्यालय बना लेलक। छोटसँ पैघ सभबातक ओकरा जानकारी भेटए लागल। जएह यमपाश देखए सएह डरा जाइत छल । हालत तँ ई भए गेल जे बिना कोन प्रयासकेँ मखना राजपुराकेँ हथिअओने जा रहल छल।

सिपहसलारसभ महराजकेँ उठा-पुठाकए अस्पताल लए गेल। ओहिठाम पहुँचितहि महराज चिकरए-भोकरए लगलाह। बैद अएलाह। उन्टा-पुन्टा कए देखलखिन, फेर कहैत छथि- “महराजक तँ दहिना जांघक हड्डी टुटि गेल अछि। हिनकर हालत नाजुक अछि।'औ बाबू!ओ एतबे बाजल छलाह कि दूटा मुस्टंड ओहि बैदकेँ नरेठी पकड़लक आ लेने-लेने हातासँ बाहर लए गेल। आब बाजह- “महराज ठीक हेताह कि तूँ अपन जान एतहि देबह?"

ताबतेमे मखना भभाकए हँसि देलक। ओ बाजल-

"आब तोहरसभक खेल खतम अछि। आब चाबुक मखनाक हाथमे अछि। बिसरि जाह ओ जमाना। महराजक जुलुम आब नहि चलत।"

से ओ बजले छल कि सिपहसलारसभ बैदकेँ ओतहि छोड़ि इएह-ले वएह-ले भागल।

महराजक ओहिठाम कोर कमीटीक बैसार भेल। महराज अपने तँ रहथि नहि, तथापि राजमंत्रीजीक अध्यक्षतामे कार्यवाही प्रारंभ भेल। सभसँ पहिने सुरक्षासँ जुड़ल मामलापर विचार भेल। ई कोन बात भेल जे महराजक हड्डी चूर-चूर भए गेल आ सभगोटे असहाय भए देखैत रहि गेल। महराजी भगता आ राज पंडित एक-दोसर दिस तकैत रहलाह।

सुरक्षा अधिकारी बजलाह- "ई कोनो तरहेँ सुरक्षाक चूक नहि अछि। सभठाम चाक-चौवंद व्यवस्था अछि, रस्तोमे कोनो एहन पिछ्छर वस्तु नहि अछि जे महराज एना भए कए खसि पड़ितथि। जरूर कोनो दैवी प्रकोप अछि।"

"जँ से अछि तँ महराजी भगता कए की रहल छथि? -राजमंत्री बजलाह।

"ई बड़का संकटक समय अछि। एखन आपसी वाद-विवाद उचित नहि।" -राजपंडित बजलाह।

मुदा समाधान तँ हमहीसभ करबैक। महराजक प्राण संकटमे देखितो हमसभ चुप तँ नहि रहि सकैत छी?-राजमंत्री बजलाह।❑

२५

महराज दर्दसँ परेसान छलाह। बैदक औषधिक किछु असर नहि भए रहल छल। अंग्रजी दबाइ देल जाए कि नहि से निर्णय राजपंडितसँ पुछि कए हेबाक रहैक। ताहि हेतु हुनकासँ राजमंत्री विचार-विमर्ष करबाक हेतु बजओलखिन। दुनूगोटे घंटो मंत्रणा करैत रहलाह मुदा किछु निकलि कए नहि आएल। पंडितजीकेँ सक रहनि जे महराजपर कोनो अदृश्य शक्तिक प्रकोप अछि। मुदा तकर निवारणक कोनो उपाय नहि बुझाइन।

एमहर गाम-गाम ई समाचार पसरि गेल। चारूकातसँ लोकसभ महराजक जिज्ञासामे आबए लगलाह। पुरवारि गाम तँ राजपुरासँ सटले छल। एहि गामक वच्चा, युवक, वृद्ध सभ बिदा भेल। ओकरसभक

देखसीमे पछबारि गामक लोक बिदा भेल। रस्तामे जे जतए भेटैत गेल से संग लागि गेल। महराजक बिमारी नहि भेल,एकटा तमस्सा भए गेल।

लोकसभ रस्तामे गप्प करैक" महराज अपन पापक फल भोगि रहल अछि?"

“से की?'-दोसर बाजल।

"गरीबसभक जमीन-जायदाद कौड़ीक भाव नीलाम करबा दैत छैक। कतेको घर उजड़ि गेल। कतेको लोक जिला-जबार छोड़ि परदेश चल गेल। आखिर तकर पाप तँ लगबे करतैक।"

"बात तँ तूँ लाख टकाक कए रहल छह? महराजकेँ एतेक संपत्ति अएलैक कतएसँ? लोकेकेँ लुटलकैक ने?"

"हे बेसी फर-फर नहि करह। चारूकात जासूस सभ पसरल अछि। व्यर्थमे मारल जेबह।"

"तँ की? लोक उचित-अनुचित बजबो नहि करतैक। ई जे बड़का-बड़का महलसभ ठाढ़ छैक से कतए सँ बनलैक। हमरे-तोरे पसिनाक कमाइसँ ने?"

लोकक हुजूम आगा बढ़िते जा रहल छल। ताबतेमे कनीक हटिकए किछु हल्ला भेलैक।

ई कोनो उत्सव नहि छलैक जे गामक-गाम लोक उलटि जाए। मुदा लोककेँ की कहल जाए?सभकेँ महराजमे ततेक जिज्ञासा छलैक जे रोकने नहि रोकाएल। सुरक्षा अधिकारीसभ बैसार केलक आ राजक हातासँ पहिने सभकेँ रोकि देल गेल। ओहिमेसँ किछु गोटे सही मानेमे महराजक शुभचिंतक छलाह। ओ सभ काली!काली! सुमरए लगलाह। महराजपर संकट गहींर भेल जा रहल छल। कोनो इलाज सँ फएदा नहि

भए रहल छल। ओमहर मखना निचैन छल। ओकर तँ दुनू हाथमे लड्डु छलैक। जँ महराज हारि मानि लेलाह तँ ओकर राजपुरा राजपर प्रच्छन्न अधिपत्य भए जाएत,जँ से नहि भेल तँ महराज ओहिना बेकार भए जाएत किंबा अकालमृत्युक शिकार भए जेताह ।s

मखनाक बढ़ैत प्रभुत्वसँ महराजे नहि यमराजो चिन्तित रहथि मुदा ओ तँ बाजी हारि गेल छलाह। ततेक फुर्तीसँ मखना अपन जाल-पोल बढ़ओलक जे यमराजकेँ कोनो उपाय नहि फुरेलनि। हुनका तँ अपने प्राण संकटमे छल। वाहरे बहादुर! तेहन-तेहन दिमाग अपना ओहिठाम भेल अछि जे राजपुरा के कहए,एहि लोककेँ के कहए, यमलोक धरि अपन लोहा मना कए रहल।

आब जखन राजपुराक सभगोटेक जीवन-मृत्यु मखनाक हाथमे आबि गेल छल तँ ओकरा एकटा अपन सचिवालयक आवश्यकता बुझेलैक। ताहि उपयुक्त समयक प्रतीक्षा कए रहल छल। ओहुना मखना काबिल लोक छल। ओकर उद्येश्य महराजकेँ मारब नहि रहैक, ओ तँ मात्र अपन प्रभुत्वसँ महराजकेँ अवगत करा देबए चाहए छल। ई तँ महराजक सिपहसलारसभक मूर्खता छल जाहि कारणसँ महराजकेँ एतेक जोर धक्का पड़ल। मुदा आबो किओ हुनका सही सलाह नहि दए रहल छल। महराजक सही इलाज तँ मखना लगमे छल।

मुदा मखना निश्चिन्त छल। ओ सोचलक- “आखिर कतए जेताह? सभसँ गड़वड़ी ई भेल रहैक जे मखना राजेक हातामे अपन बासा बना लेने छल। यद्यपि मखनाकेँ करवनो कए महराजपर दया अबैक मुदा फेर सोचए लगैत छल जे ई आदमी लोककेँ बहुत परेसान केने अछि। गरीबसभक माल-जाल कनी-मनी बकिऔताक चक्करमे नीलाम करा कए कतेको लोकक घर उजारि देने अछि। से सभ सोचैत-सोचैत मखना ततेक

जोरसँ भभाकए हँसल जे ओकर प्रतिध्वनि सौंसे राजक हातामे सुनाएल।

एतेक भयानक हँसी के हँसल?ई मनुक्खक आवाज तँ नहि लागि रहल अछि। मामा बजलाह।

"छलैक तँ ठीके भयानक।" -हम कहलिअनि।

महराजक ओहिठाम पता ने की-की भए रहल अछि?"

"कारण?"

की कहल जाए?सभ अपन-अपन चक्करमे लागल अछि। महराज तँ नाम मात्रक छथि। ऊपरसँ दिन-राति पीने बुत्त रहैत छथि।"

"तखन राज-काज केना चलैत अछि?"

"एकरा कहबहक राज-काज चलब? कहुनाकँ घिचा रहल अछि। जकरा जम्हरे देखू अपन सुतारमे लागल अछि। हमरा तँ कखनहुँ कए मोन उबिआइत अछि जे एहिसभसँ निकलि जाइ, मुदा महराजकेँ मनाओत के?"

मामासंगे चाहपर गप्प-सप्प भए रहल छल। ओहीक्रममे कहलाह जे चंपाक कालेज जेबाक सभटा बंदोवस्त ओ स्वयं कए देलाह अछि। आब ओ काल्हिसँ कालेज जाएत। एहि शुभ समाचारसँ हमर मोन गद-गद भए गेल। मामा छलाह पारखी लोक। ओ हमर मोनक बात बूझि गेलाह आ कहए लगलाह- “सभ काज बिसरि अपन पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहह। एमहर-ओमहरमे समय नहि बिताबी।"

मामाक कहबाक तात्पर्य हम बुझलहुँ। मामासंग गप्प-सप्प चलिए रहल छल कि महराजी भगता राजपंडितक संग मामालग पहुँचलाह। महराजक स्वास्थक विषयमे चर्चा प्रारंभ भेल।

“महराजक स्वास्थमे किछु सुधार नहि अछि। महरानी लोकनि

बहुत चिंतित छथि। जँ हुनका किछु भए गेल तँ हमरा लोकनिक भगवाने मालिक।" -राजपंडित बजलाह।

"बात एकदम सही अछि। सभ अपन-अपन चक्करमे लागल अछि आ ओमहर महराज दिन-राति अपन कक्षमे दहाड़ि पारि रहल छथि।"

-महराजी भगता बजलाह।

"बात जे होइक मुदा एतबा तँ बुझा रहल अछि जे एखन धरि कएल गेल प्रयास कारगर नहि भेल।" -राजमंत्री बजलाह।

"मुदा कएल की जाए? एनामे तँ हमसभगोटे नपा जाएब।"

-राजपंडित बजलाह। सभगोटे अपने जान हेतु झखि रहल छलाह। महराजसँ बेसी चिंता हुनकासभकेँ अपन रहनि। राजपंडित बजलाह- “राजबैदकेँ बजाओल जाए।"

राजबैदकेँ समाद गेल। ओ धरफराएल ओतए पहुँचलाह।

"महराजक की हाल छनि?" -राजमंत्री बजलाह।

"किछु सुधार नहि अछि।"

"तखन?” -राजपंडित बजलाह।

"हमरा हिसाबे तँ हिनका इलाजक हेतु लंदने लए गेल जाए। ओहिठामक डाक्टर हिनकर कै बेर पहिनहुँ इलाज केने अछि। की पता ओ एहूबेर सफल होथि?" -राजबैद बजलाह।

"सही राय दए रहल छथि। एकरा शीघ्र लागू कएल जाए"-राजमंत्री बजलाह।❑

२६

आपसी विचार-विमर्षक वाद महराज अपन सिपहसलारसभक संगे इलाज करबाक हेतु लंदन जेबाक हेतु बिदा भेलाह। ताहि हेतु एकटा विशेष वायुयानक व्यवस्था कएल गेल। संगमे के के जेताह? एहि विषयमे कतेको दिन घमर्थन होइत रहल। महराजक अनुपस्थितिमे किओ तँ चाही जे राज-काज चलैत रहए। ताहि हेतु रानी साहिबा एतहिं रहि गेलीह। हुनकर सहयाता हेतु राजमंत्रीकेँ रहब जरूरी छल, से ओहो रहि गेलाह।

महराजी भगताक ओहिठाम कोन काज?तखन जेताह के सभ? असलमे जेबाक मोन तँ सभके रहैक। इलाजक नामपर मुफ्तमे लंदन भ्रमण भए जाइत। राजवैद्य, राजपंडितक अतिरिक्त बीस गोटे आओर महराजक सहायताक हेतु बिदा भेलाह। हुनकासभकेँ लंदनमे रहबाक हेतु होटलमे व्यवस्था कएल गेल। महराज अपने खास-खास लोककसंगे अस्पतालेमे रहताह। राजपंडितसँ दिन तका कए सभगोटे शुभ-शुभ कए लंदन बिदा भेलाह। कनीके कालमे विशेष विमान राजपुरा हवाइअड्डासँ उड़ि गेल। सभगोटे बजलाह- “जय गणेश!”

जहाजपर बैसि अपन राज-पाटपर सँ उड़ैत काल महराजक मोनमे कतेको तरहक प्रश्न उठि रहल छल। पानिमे दहाइत फूसक घरसभ की हमरे लोकक अछि? बाढ़िसँ दहाएल कोशीकातक लोक बान्हपर बैसल चिड़ैसन लगैत छल। महराजक मोनमे कै बेर आत्मग्लानि होइत छलनि। महराजी हातासँ बाहरक भयावह दृश्य देखि ओ चिंतामग्न रहथि। हुनकर आत्मा कै बेर पुछलक-

“हे प्रजापालक! की देखि रहल छी? ई अहींक लोकवेद छथि, विपन्न, अशिक्षित,..। 'मोने-मोन कहलथि- “हमर दुर्भाग्य, आओर की

भए सकैत अछि?ताबतेमे कोनो गामसँ विद्यापतिक गीतक मधुर संगीतपर नचैत-गबैत लोकसभ देखेलनि। एहनो हालतमे ई लोकनि अपन संस्कार-संस्कृतिसँ कतेक सिनेह करैत छथि? मोनमे बहुत बातसभ अएलनि। हमर लोकसभक जीवन यात्रा ठमकि गेल ताहि हेतु हमही जिम्मेवार छी। एहि तरहेँ महराजक आत्मा ओ देहमे जवरदस्त संघर्ष बजड़ि गेल। इएह सभ सोचैत-सोचैत आँखि लागि गेलनि। जहाज तेजीसँ मिथिलांचलसँ आगा वढ़ि गेल।

हवाइ जहाज राजपुराक सीमासँ वाहर भेले छल कि चमत्कार भेल। महराज अपनेसँ उठिकए जहाजमे लघुशंका करए गेलाह। ओतएसँ आवि कए अपनेसँ बैसिओ गेलाह। ई तँ कमाल भए गेल?" -महराजी बैद बजलाह।"

जे भेल से भेल बेसी हल्ला नहि करू। महराजक मोनक कोन ठेकान? कहीं उल्टे ने पड़ि जाए" -राजपंडित बजलाह। महराज तँ एकदम स्वस्थ लगैत छलाह। सभसँ गप्प-सप्प करए लगलाह। इहो पुछलखिन-

"हमसभ कतए जा रहल छी?"

"लंदन जा रहल छी श्री मान !" -राजबैद बजलाह।

“किएक?" -महराज पुछलखिन। आब के जबाब देत? राजमंत्री छलाह नहि । आओर लोकसभ महराजसँ धखाइत छलाह।

ताबतेमे महराज ठहाका पाड़लाह। हुनका संग दैत तमाम सिपहसलारसभ सेहो हँसल।

"हमसभ कतए जा रहल छी?" -महराज फेर पुछलखिन।

"लंदन सरकार!" राजबैद बजलाह।

"किएक? ओतए कोनो बैसार अछि की?" -महराज पुछलखिन।

आब की होएत?सभ परेसान छलाह। ताबे रानीक फोन अएलनि। ओना जहाजपर फोन करब उचित नहि तथापि चालकदल एकर ओरिआन केलथि जाहिसँ मामला सम्हरि जाए।

"कोना छी?-रानी पुछलखिन।

"किएक? हमरा की भेल अछि? हम तँ केहन बढ़िआ छी?"

"अच्छा, एहिसँ नीक की भए सकैत अछि?"

"तखन लंदन किएक जा रहल छी? घुरि आउ।"

"नहि, नहि किछु दिन रहिए कए लौटनाइ ठीक होएत। जहाज लंदन पहुँचएबला अछि।"

"बादमे गप्प करब।"- फोन कटि गेल।❑

२७

ओमहर महराज इलाजक हेतु लंदन गेलाह आ एमहर रानी मौज-मस्तीमे लागि गेलीह। जहिआसँ हरि राजमंत्री बनलाह तहिआसँ हुनकर बेसी समय रनिवासेमे वितैत छल। करितथि की?रानीकेँ अवहेलना करक परिणाम जनैत छलाह। फेर ओहो कोनो लोहाक बनल तँ नहि छलाह। रानी देखबामे अद्भुत सुन्दरि रहथि। गोर-नार पाँच हाथक।

तहिना राजमंत्री सेहो बेजोड़ छलाह। नमगर-पोरगर,गोर-नार, ककरो देखि कए मोन होइतैक जे देखितहि रही। तेँ पहिने दिनसँ रानीक ध्यान हुनकापर अटकि गेलनि। कोनो-ने-कोनो काजक बहाना बना हुनका अपन बासामे बजा लितथि। बहुत मोसकिलसँ राजमंत्री ओहिठामसँ निकलबाक जोगार करथि। मोनमे हरदम अदंक रहैत छलनि

जे जँ महराजक जासूस उल्टा-पुल्टा हुनका कहि देलक तँ गेल महीष पानिमे पड़रु समेत। मुदा रानीकेँ कथुक डर-भर नहि रहनि। ओ निधोख राजमंत्रीक संग रंग-रभसमे लागल रहैत छलीह। ई समस्या क्रमशः बढ़िते गेल।

ओना एहन घटनासभ घटित होएत से ओ कहिओ नहि सोचने रहथि। मुदा से भए रहल छनि। रानीक राजमंत्रीक प्रति आकर्षण बढ़िते जा रहल छलनि। राजमंत्री कै बेर गोहार लगौलथि जे हुनका बकसि देल जाए, मुदा रानी आओर जोर-सोरसँ हुनका धेने चलि गेलीह। राजमंत्री सोचथि जे हुनकर तँ भगवाने मालिक। जहिए महराजकेँ पता लगलनि तहिए हुनकर प्राणहन्त कए देताह। एक राति रानीसँ कहलखिन- “आब हमरा एहिठामसँ छुट्टी देल जाए।"

रानी बिगड़ि गेलखिन। कै दिन गप्प नहि केलखिन। राजमंत्री बेस मोसकिलमे पड़ि गेलाह। एहि कात खधिआ तँ ओहि कात खत्ता। केमहर जाथि। सोचलाह- “जखन जान जेबेक अछि तँ एहिना ऐश-मौज करिते चलि जाइ, सएह नीक। फेर अपन हाथमे अछिए की?" जहिआसँ महराज लंदन गेलाह तहिआसँ रानी आओर बिरदावन भाजए लगलीह। राजमंत्रीक चौवीस घंटा रनिवासेमे रहए पड़नि। कनिको काल जँ एमहर-ओमहर भेलाह कि तुरंत बजाहटि भए जानि। कहबी छैक जे –

खैर खून खासी खसी, बैर प्रिति मधुपान

रहिमन ये सब ना छुपे जाने सकल जहान।।

गाहे-बगाहे ई बात गल-गलाए लागल। चौकीदारसभ साकंक्ष भए गेल। जासूससभमे सहो एहि बातक चर्च होबए लागल जे किछु-ने-किछु गड़बड़ अछि। मुदा रानीक बात छल। बिलाड़िक गलामे घंटी बान्हत के?फेर महराजो तँ छलाह सएह। अपने कतेको रानी-पटरानी आ की-की

ने रखने छलाह। ऊपरसँ दिन-राति पीने बुत्त रहैत छलाह। होश रहितनि तखनने किछु किओ कानोमे दितनि। आ कानमे देने की होइतैक? भए सकैए उल्टे कहीं फाँसी ने चढ़ि जाए। तेँ जतहि जे देखलक, सुनलक तकरा ततहि झपने रहल।

रानीक प्रेम प्रसंग करमान चढ़ैत गेल। राजमंत्रीक रनिवासमे आवागमन बढ़िते गेल। एकराति राजमंत्री रानीकेँ कहलखिन- “हमरा अपन भातिजसभक उपनायनमे गाम जेबाक अछि।"

"जेबाक कोन काज छैक, जे चीज-वस्तु पठेबाक मोन हो से पठा दिऔक।"

"एहनो कहीं भेलैक अछि? हमरासभ बारि देत। जेबै कोना नहि?"

"कहिआ छैक उपनायन?"

"एखन दस दिन बाँकी छैक। मुदा आर-आर विधसभ होइत रहैत छैक। तेँ हम सोचैत छी जे जतेक जल्दी होइक ओतए पहुँचि जाइ।"

रानी हँसए लगलखिन आ कहलखिन-लगैए अहाँकेँ हम पसिंद नहि छी।"

"एहनो कतहुँ भेलैक अछि। मुदा..."

"मुदा की? फरिछा कए बाजु।"

"जँ महराजकेँ पता लगलनि तँ हम गेल घर छी?"

एतेक नहि डराउ। गाम जाउ मुदा जल्दिए चलि आएब।"

"जे अहाँक आज्ञा।"

रानी राजमंत्रीकेँ नानाप्रकारक गहना, चीज वस्तुसँ भरि देलखिन। गाममे जखन ओ उपहार अपन भौजीकेँ देलखिन तँ ओ देखितहि रहि गेलीह।❑

२८

महाजक जहाज लंदन पहुँचए बला छल। जकर इलाज करेबाक हेतु एतेक पैघ काफिला चलल छल सएह दन-दन कए रहल छलाह। से देखि सिपहसलारसभ उदास रहथि। मुदा राजबैद सम्हारलनि-

"महराजक हालतमे सुधार अवश्य छनि मुदा ई जानब जरूरी अछि जे आखिर एना भेलैक किएक? आ की पता फेरो ने एहन भए जाए। कहीं हमसभ आपस राजपुरा चलि जाइ आ ओहिठाम फेर वएह हाल ने भए जाइक। राजबैदक बातसभकेँ पसिंद पड़लनि। महराज स्वयं तुरत-फुरतमे किछु निर्णय लेबाक अभ्यस्त नहि रहथि। हुनका तँ चाही राजमंत्रीक सलाह। से राजमंत्री लगमे रहथिन नहि। राजमंत्रीकेँ वारंबार फोन जाए लगलनि। ताबे ओ अपन गाम भातिजक उपनायनमे सामिल हेबाक हेतु चलि गेल छलाह। कै बेर फोन लगबो नहि करैक मुदा महराजकेँ शंका होबए लगलनि जे राजमंत्री हुनकर फोनकेँ जानि कए टरका रहल छथि। किछु-किछु आओर शंका तँ पहिने सँ रहबे करनि।

महराजकेँ नीक अस्पतालमे भर्ती कराओल गेल। डाक्टरसभकेँ कतहु कोनो गड़बड़ी नहि भेटि रहल छलैक तथापि राजबैद कहलखिन जे किछु दिन हिनका जाँच-पड़तालमे राखल जाए जाहिसँ पता तँ लागैक जे एना भेलैक किएक?" सएह भेल। महराज अस्पतालमे भर्ती भए गेलाह। हुनकर सिपहसलारसभ होटलमे ठहरलथि। महराज रहितथि तँ कनी-मनी संकोचो रहितैक। सभ निश्चिन्त भए दिन-राति जे-जे मोन होइत छल करैत छल। महराज बेचारे छटपट करथि जे कखन अस्पतालसँ हटि कए होटलमे जाइ आ आनंद मनाबी।

भोरे जखन डाक्टरसभ हुनका देखए आएल तँ कहलखिन- "हमरा एहिठाम मोन नहि लागि रहल अछि।

“की हम होटलेसँ इलाज करा सकैत छी?”

ओसभ तँ चाहिते रहए सएह। कहलक- “किएक ने?" महराज ओहिठामसँ फारकती भेटितहि होटलक विशिष्ट कक्षमे पहुँचि गेलाह।❑

२९

महराजक लंदन बिदा होइत काल हुनका संगे के जाएत आ के नहि जाएत तकर निर्णय महराज स्वयं केलथि। एहि कारणसँ ओ आब ककरो किछु कहिओ नहि सकैत छलाह। आब हुनका चिंता होनि रानीक। राजमंत्रीक सलाहक से प्रयोजन होनि। महराजकेँ तँ कोनो रोग रहनि तखनने ओ जाँचमे पकड़ाइत। सभ ठीके रहैक। तखन सभगोटे मीलि कए रमन-चमनमे लागि गेलाह। महराजक हेतु तँ कैटा सूट आरक्षित छल। करवनो एमहर करवनो ओमहर। एहि तरहेँ पन्द्रह दिन बीति गेल। होटलक खर्चा कड़ोरमे पहुँचि गेल। महराजक खजांचीकेँ फोन भेल जे ओ होटलकेँ भूगतान करथि। खर्चाक हिसाब सुनि हुनका अदंक लागि गेल। ओ भागल-भागल रानी लग पहुँचलाह। रानी की करितथि? खर्चा देखि कए गुम्म पड़ि गेलि। महराजकेँ फोन लगेलीह-

"अहाँ सभटा ओतहि नष्ट कए लेब की?"

"की भेलैक?"

"होटलक बिल देखलिऐक अछि?"

"ई हमर काज अछि की?"

से सुनितहि रानी तमसा कए फोन राखि देलीह।

महराजक संगे हुनकर तमाम सिपहसलारसभ खूब ऐश-मौज केलक। आब बिल तँ देबैक रहैक, से महराज देलखिन। कड़ोरोमे बिल भेलैक। आ सभटा महराजक इलाजक नामपर। प्रात भेने पूरा काफिला आपस स्वदेश बिदा भेल। ताहि हेतु एकटा हवाइ जहाजमे एकहिठाम जगह आरक्षित कएल गेल जाहिसँ महराजक सेवामे कोनो त्रुटि नहि रहि जाए। सभगोटे अपना भरि सतर्क रहथि जे एतेक खर्चा केलाक बाद हुनका माथमे कतहुसँ चिंता नहि होनि।

जहाज उड़ि गेल। सभगोटे बहुत संतुष्ट रहथि। गप्प-सप्प होइत रहलैक। महराज कखन की मांगि देताह,ताहि हेतु सभगोटे बेरा-बेरी महराजेक लग-पास रहथि। जौं-जौं जहाज राजपुरा दिस भेल महराज किदनि-किदनि बकए लगलाह। आहि रे बा! ई की भेल?महराजक हालत क्रमशः गड़बड़ाइते चलि गेल।

राजपंडित आ राजबैद आपसमे मंत्रणा केलाह।“आब की जबाब देबनि रानीकेँ?” -राजपंडित बजलाह।

"जे छैक, से छैक? एहिमे हम अहाँ की कए सकैत छी?जाहि बिमारीक इलाज हेतु गेल रहथि से तँ ठीक भए गेलनि ने?" राजबैद बजलाह।

राजपंडित गुम्म रहथि।

"जे भावी।" -राजपंडित बजलाह।

जँ-जँ जहाज मरखनाक प्रभाव क्षेत्रमे आबि रहल छल, त्यों-त्यों महराजक नव उकबासभ भेल जा रहल छल। हुनकर सोचबाक,बुझबाक क्रम गड़बड़ा रहल छल। खने किछु बाजए लगितथि,खने किछु। बेसीकाल अपनेसँ प्रलाप करितथि। ओ अपनेसँ गप्पो करथि आ अपने

जबाबो करथि। सिपहसलार सभ तँ छगुन्तामे छलाह जे ई कोन नव उकबा भेल। महराजकेँ कोनो ग्रहक फेरी लागि रहल अछि" -राजपंडित बजलाह।

"फेरी तँ अपनासभकेँ लागल अछि। -राजबैद बजलाह।

"हड़बड़ेबाक काज नहि छैक। जे हमरा अहाँक हाथमे अछि सएह ने करबैक। हम अहाँ कोनो भगवान छी जे सभटा हमरे अहाँक हिसाबे चलतैक।"

"से तँ बुझलहुँ। कहुना कए महराज अपन घर पहुँचि जाथि।"

महराज बड़बड़ाइते जा रहल छलाह-

“कहल करिअह जे अपन लोकक संग अन्याय नहि करह मुदा तूँ सुनलह? नहि सुनलह। तँ आब कथी लेल परेसान छह? अपन कर्मक फल भोगए लेल तैयार रहह।"

"हम महराज छी। हमरा ऊपर ककरो अनुशासन नहि चलि सकैत अछि। फेर जनताकेँ अंकुश देब आ नियंत्रणमे राखब हमर कर्तव्य अछि।"

"कर्तव्य अछि तँ करैत रहू। अहाँक कारण कतेको लोक बरबाद भए गेल... ।"

एहिना अपनेसँ सबालो करथि आ अपनेसँ जबाबो। सभगोटे चिन्तित छलाह जे ई कोन नव समस्या भए गेल?

जहाज राजपुरा हवाइ अड्डा पर उतड़ि रहल छल। ओहीठाम लगेमे मखनाक मुख्यालय रहैक। महराजक उनुपस्थितिमे ओ अपना-आपकेँ सुव्यवस्थित कए लेने छल। यमराज तँ पहिने हाथबारि देने छलाह। रेखा सेहो मनोयोग पूर्वक मखनाक मदति कए रहल छलीह। एमहर मखना आ

कालू भगतामे मेल-जोल बढ़ि गेल। आखिर दुनू छल तँ सहोदरे। से बात मोनमे कतहुँ-ने-कतहुँ कचोटैक। फेर एक हिसाबे मखना तँ एहि संसारसँ जा चुकल छल। ई तँ मखनेक हूनर कहू जे ओ फेरसँ अपनाकेँ तेहन मजगूत कए लेलक जे महराजक कोन कथा यमराज धरि ओकरासँ पस्त छलाह।

हवाइ जहाज अपन गंतव्यपर उतरल। मुदा महराज चलबा-फिरबा जोग नहि रहथि। कहुना कए उठा-पुठाकए हुनका महल आनल गेल।❑

३०

राजपुरा टीसनपर लोटना चाहक दोकान खूब चलैत चलैक। लग-पासक गामक जे किओ लोक ओकरा देखेतैक तकरा घेरि कए ओ चाह जरूर पिअबैत आ संगहि संगे गप्पो-सप्पो करैत। अपन बितल दिनक स्मरण कए-कए कै बेर सोचमे पड़ि जाइत। ओना आब ओकरा गाम जेबाक पलखति नहि भेटैत छलैक। दिन-राति टीसनपर पाइ झहरैत रहैत छलैक। तकरा समेटैत की झुठे गाम जा-जा समय बरबाद करैत?

ओहि दिन हम चंपाक संगे कालेजसँ आपस होइतकाल ओकरा रेलपर चढ़ेबाक हेतु टीसन गेल रही। रेल बहुत देरीसँ अएतैक से वारंबार घोषणा भए रहल छल। हारि कए हमरा लोकनि प्लेटफार्मपर राखल बेंचपर बैसि गेलहुँ। पाछुएमे लोटनाक चाहक दोकान छल। लोटना हमरा धर दए चीन्हि गेल।

"श्री कान्त एतए की कए रहल छह?"

"एहीठाम पढ़ि रहल छी। एखन एकटा संगीकेँ रेलपर चढ़ेबाक हेतु

आएल रही मुदा गाड़ी देरिसँ अएतैक।"

"ओ! एतेक दिनसँ भेटो नहि भेल। डेरा कतए रखने छह?"

"राज छात्रावासमे।"

से सुनतहिँ ओकर कान ठाढ़ भए गेल। कारण ओ जनैत छल जे राज छात्रावासमे जगह भेटब सभक वशक बात नहि छैक। जरुर कोनो खास जोगारसँ ई काज भेल होएत। फेर ओ बाजल- "राज छात्रावास तँ लगीचे अछि। आब भेंट-घाँट होइत रहत।"

"अवश्य।" से कहि हम आगा बढ़ले छलहुँ की रेल अएबाक सूचना प्रसारित होबए लागल। धर-धर करैत रेल प्लेटफार्म संख्या एकपर आबि गेल। हम चंपाकेँ ट्रेनमे बैसा कए अपन डेरा दिस संगे बिदा भेलहुँ।

चंपाकेँ जाइत काल हम गंतव्यक बारेमे पुछलिऐक। ओ कहलक जे अपन गाम जा रहल अछि आ जल्दिए लौटत। ओ ट्रेनमे बैसि गेलि। ट्रेन खुजि गेल। नहूँ-नहूँ ओ प्लेटफार्म छोड़ि देलक,तैयो हम ओतहि ठाढ़े रही। कनीके हटिकए लोटन अपन चाहक दोकानपर बैसल हमरा टुकुर-टुकुर देखि रहल छल, मुदा किछु कहलक नहि। संयोगसँ पाछुसँ एकटा यात्री धड़फड़एल आबि रहल छल आ हमरासँ टकरा गेल। एहि अप्रत्याशित आवेगसँ हम मुँहे भरे खसलहुँ। लोटन चिकरि उठल- "खसि पड़ल..खसि पड़ल.। आ हमरा दिस दौड़ल। हम दहिना हाथ आगा बढ़ा देलिऐक। तकरबाद की भेलैक से नहि कहि?जखन होश आएल तँ अस्पतालक बेडपर पड़ल रही, हाथ आ पैरमे सौंसे प्लास्टर लागल छल। डाक्टर कहलक जे दहिना हाथ आ वामा पैरक हड्डी टुटि गेल अछि। मनुक्ख सोचैत अछि किछु आ होइत छैक किछु। किछुए दिनमे बीऐक परीक्षा हेबाक रहैक। आब की होएत, कहि नहि।

हमरा खसैत चंपा देखने रहए। ताबे ट्रेन खुजि गेल रहैक। ओ चिकड़बाक प्रयासो केलक मुदा ट्रेनक सीटीक आगू ओकर आवाज दबि गेल। ई बात हमरा लोटन कहैत रहए जे घटना कालसँ अखनधरि हमरे लगमे बैसल छल। वएहटा हमर एहि संकटक समयमे संग रहए। मामा गाममे भातिजक उपनायनमे नोत पुरए गाम गेल रहथि। समाद गेलनि। ओहि दिन रातिम छलैक। ओ सभ काज छोड़ि तुरंत राजपुरा बिदा भए गेलाह।❑

३१

राजपुराक अस्पतालक चर्चे बेकार। रोग किछु आ इलाज कथुक। एहन कतेको लोक गलत-सलत इलाजसँ परेसान भेल अस्पतालक चक्कर लगबैत रहैत छलाह। ककरो गलत-सलत दबाइक कारण किडनी खराप भए गेल छल। किओ दहिना आँखिक इलाज करबए आएल आ वामा आँखि सेहो खराप करा कए गेल। एकटा मरीजकेँ पेटमे गैस बनैत रहैक, इलाज हार्टक चलैत छलैक। सुइआपर सुइआ। हालत बिगरिते चल जा रहल छल। ओ तँ रच्छ भेल जे ओकर कोनो डाक्टर संबंधी रहैक। संयोगसँ ओकरा पता लगलैल। ओ हाल-चाल लेबाक हेतु आएल। कागज-पत्तर पढ़ि-पढ़ि छगुन्तामे पड़ि गेल। ओकर कानमे कहलकै- “जान लए भागि जाउ। गलत इलाज भए रहल अछि।" औ बाबू! ओ बेचारा इएह-ले वएह-ले भागल। ओ आगा-आगा भागि रहल छल आ एकटा जवान डाक्टर पछोड़ केने छल। ओकर हाथ-पैर जोड़ि रहल छल- “हमर नौकरी चल जाएत,एना नहि भागू।" मुदा ओ रोगी घुमि कए नहि तकलक।

ओहने अस्पतालमे हमर इलाज चलि रहल छल। जहिआसँ

प्लास्टर भेल कोनो डाक्टर घुरिओ कए नहि आएल। कंपोटर करवनोकए अबैत आ इसारासँ कहैत –

“फलना डाक्टरक नर्सिंगहोममे भर्ती भए जाउ। बहुत जल्दिए ठीक भए जाएब। एहिठाम कोनो डाक्टर नहि अबैत छैक।"

हम बकर-बकर तकैत रहैत छलहुँ। मोने-मोन हनुमानजीकेँ गोहरबैत रहैत छलहुँ। आओर कोनो समाधानो नहि छल। डर होइत छल जे जँ हाथ-पैर बेकार भए गेल तँ जिनगी कोना चलत? के देखत?

जखन भोरे-भोर अस्पतालमे मामाकेँ देखलिअनि तँ जान-मे-जान आएल। ओ कि एलाह, हमरा कोठरीमे डाक्टरक पाँति लागि गेल। किओ आला लगा रहल अछि तँ किओ एक्सरेक रेपोर्ट पढ़ि रहल अछि। ताबतेमे एकटा बूढ़ डाक्टर ओकर हाथसँ एक्सरेक रेपोर्ट लए पढ़ए लगलैक। एक्सरे देखितहि ओ चिकरए लागल- “ककरो एक्सरे ककरो फाइलमे लगा देने छहक । तोरासभकेँ तँ फाँसी हेबाक चाही ।"ओकर बात सुनि कए तँ हमर मोन ततेक घबड़ाएल जे भेल जे तुरंते ओतएसँ भागी। मामा कतेक काल हमरा लग रहताह? हुनका जाइतहि ई डाक्टरसभ निपत्ता भए जाएत। हमर टांग-हाथकेँ भगवाने मालिक।

कनी कालमे डाक्टरक हुजूम आगा बढ़ि गेल। मामाकेँ देखितहि हमरा कना गेल। कहलिअनि-

"कोनो उपायसँ हमरा एहिठामसँ निकालू,नहि तँ हमर जान नहि बाँचत।"

मामा बहुत बुझेबाक प्रयास केलाह। हुनका होनि जे हम भगल कए रहल छी। मुदा जखन अगल-बगलकेँ मरीजसभ अपन-अपन खिस्सा कहए लगलनि तखन तँ ओ बहुत परेसान भए गेलाह। तुरंत हमरा

ओहिठामसँ छुटकाराक हेतु दर्खास्त देलखिन आ लेने-लेने प्राइभेट नर्सीगहोममे चल गेलाह। ओहिठाम हमर फेरसँ एक्सरे भेल। एक्सरे देखि कए डाक्टर कहलकनि-

"हिनकर तँ कोनो हड्डी टूटल नहि छनि। कनी-मनी मोच जरुर छैक, ताहि लेल पट्टी बन्हलासँ काज चलि जइतैक। पलास्टरक तँ कोनो प्रयोजन नहि छलैक।"

“आब की कएल जाए?" -हमर मामा पुछलखिन।

"प्लास्टर हटबा दिऔक। कच्चापट्टीसँ दस दिनमे ठीक भए जेताह।"

सएह भेल। ओहि डाक्टरकेँ धन्यवाद दी जे हमर हाथ-पैर वाँचि गेल। जखन ककरो आनक एक्सरे देखि कए इलाज भेल रहैक तँ परिणाम सोचल जा सकैत छल। ओहि दिन हमर प्लास्टर काटल गेल आ कच्चापट्टी लगा देल गेल। दस दिनक बाद ओहो हटि गेल। हम एकदम पहिने जकाँ दुरुस्त भए गेलहुँ। लगबे नहि करए जे हमरे चोट लागि गेल छल।❑

३२

अस्पतालसँ अएलाक बाद कालेजक चिंता धेलक। दस दिनक बाद बीए अन्तिम परीक्षा होबक रहैक। तैयारी किछु नहि भेल रहए। चंपालगमे नोटसभ छलैक मुदा ओकर किछु थाहे-पता नहि लागि रहल छल। कालेज गेलहुँ तँ किओ संगतुरिआ नहि भेटल। सभ परीक्षाक तैयारीमे लागल छल। कालेजसँ आपस अबैत काल टीसन चलि गेलहुँ। इच्छा भेल जे लोटनकेँ भेंट कए धन्यवाद दए दिऐक। संकटक समयमे वएह ठाढ़ भेल छल। टीसनपर गेलहुँ तँ लोटन नहि देखाएल। ओकर

दोकान बंद छलैक। अगल-बगलक दोकानबलासँ पुछलिऐक तँ कहलक जे ओ गाम गेलाह अछि। गाममे किछु जरूरी काज छनि। एहिसँ बेसी ओकरासभकेँ किछु नहि बुझल रहैक।

अछता-पछताक अपन डेरा दिस बिदा भेलहुँ कि पाछुसँ किओ सोर पाड़लक। "ई तँ चंपा बुझा रहल अछि।" -मोने-मोन सोचाएल। जाबे किछु करी-करी ताबे चंपा डेगारि कए हमरा आगूमे ठाढ़ि भए गेलि।

"कोना छैं?" -चंपा बाजलि।

"हम तँ एकदम ठीक छी।" -हम बजलहुँ।

“हम तँ किछु तैयारी नहि कए सकलहुँ।"

"हमर नोटसँ काज चला ले।"

"तोरो तँ परीक्षा देबाक छौक?"

"सभटा भए जेतैक। तोरा व्यर्थक चिंता करबाक हिस्सक छौक।"

“सांझमे हमर डेरापर आबि कए नोटसभ लए अबिहैं।"

चंपाक डेरा वालिकासभक छात्रावास रहैक। ओकर लग-पास सदरिकाल चौकीदारक पहरा रहैत छलैक। तखन ओ हमरा ओतए कोना बजओलक आ सेहो रातिमे, से हमरा नहि बुझाए। हमरा तँ परीक्षाक भय ततेक जोर केने छल जे आओर किछु सोचबाक समय नहि रहए। साँझ पड़ल आ हम ओमहर बिदा भए गेलहुँ। ओहि छात्रावासक लगीचमे पहुँचहिबला रहीके पेटमे बड़ी जोरसँ दर्द उठल। रातुक समय आ एकदम निर्जन स्थान छल। ककरा कहितिऐक? आगू बढ़बाक साहस नहि भेल। सड़कक कातमे चुक्कीमाली बैसि गेलहुँ। नहूँ-नहूँ पेटकेँ ससारैत रही कि चंपाक आवाज सुनाएल।

"श्रीकांत! श्रीकांत! मुदा हमर बाजल होअए तखन ने जबाब दितिऐक। सड़कक ओहिपार छात्रावास छलैक। जखन हम किछु उत्तर नहि दए सकलिऐक तँ ओकरो चिंता भेलैक। सड़क दिस आगा बढ़ल। ताबे हमर पेटक दर्द आओर जोर भए गेल। हम ठामहि सड़कपर पड़ि गेलहुँ। हमरा सड़क पर देखि कए चंपा दौड़ि कए हमरा लग आएलि। ताबत एकटा रिक्साबला जाइत रहैक। ओकरा रोकलक। ओहिपर कहुना कए रिक्साबलाक मदतिसँ चढ़ओलक। ओहनो हालतमे हमरा ओकरा संग बहुत नीक लागि रहल छल। हम बाजि नहि पाबी मुदा हमर मुखाकृतिसँ एहिबातक अनुमान ओकरो होइत रहैक। ओ हमरा छोड़िओ तँ नहि सकैत छलि। कनीके हटिकए एकटा डाक्टर रहैक। ओतए हमरा रिक्सासँ उतारलक।

डाक्टर बहुत ध्यानसँ देखलक। आला लगा-लगा कै बेर एमहर-ओमहर केलक। मुदा कोनो खास गड़बड़ी नहि भेटलैक। तखन ओसभ बात पुछलक। फेर चंपा दिस तकैत बाजल- “हिनका कोनो बिमारी नहि छनि। परीक्षाक कारण मानसिक तनाव भए गेल छनि। ई बेसी चिंता करैत छथि, से छोड़ब जरूरी थिक।"

डाक्टर बुझा-सुझा आ किछु दबाइ दए हमरा सभकेँ बिदा कए देलक। आश्चर्यक बात ई जे ओ किछु फीस नहि लेलक। फीसक चर्च होइतहि बाजए लागल्-"अहाँसभ विद्यार्थी छी। जखन पैघ भए जाइ तँ एहिना ककरो मदति कए देबैक।"

ओहि रातिक पढ़ाइ ओहिना रहि गेल। चंपा कहलक जे काल्हि हम कालेज आएब, ओतहि तोरा लेल किछु नोट लेने आएब।"

"ठीक छैक" -से कहि हम अपन डेरा चलि अएलहुँ। रातिभरि मोनमे गुदगुदी उठैत रहल।❑

३३

परीक्षाक समय लगीच छल। अस्तु, हम दुनू गोटे चाहिओक करवनो एमहर-ओमहरक गप्प नहि करी। दिन-राति एक कए पढ़ैत रहलहुँ। कोनो दिन एहन नहि बितल जहिआ हमसभ आठ-दस घंटा एकट्ठे नहि रही, मुदा पढ़ाइक भूत सबार छल। तकर फैदो भेल। तीन मासक बाद जखन परीक्षाक परिणाम आएल तँ सौंसे कालेज हमरेसभक चर्च रहए। कालेजक सूचनापट्टपर मोट-मोट आखरमे हमर दुनू गोटेक नामक आगा लिखल छल-प्रथम श्रेणीमे सभ विषयमे विशिष्टताक संग उत्तीर्ण। हम कै बेर ओकरा पढ़लहुँ। जे देखि रहल छलहुँ ताहि पर विश्वासे नहि होअए।

मुदा सत्य सएह छल। कहाँ पास करए हेतु झखैत रही, कहाँ एहन नीक परीक्षाफल भेल। ई एकटा चमत्कार छल। मोन भेल जे चंपाकेँ फोन कए ई सुखद समाचार दी,फेर इच्छा भेल जे जाइए कए कहिऐक। तुरंत एकटा रिक्सा केलहुँ। भाड़ा के पुछैए? थोड़बे कालमे चंपाक डेरापर हम पँहुचि गेल रही। चंपा बाहरे द्वारपर भेटि गेलि। ओ दुध लए जाइत छलि। हमरा देखि ओकर मोन धुक-धुक करए लगलैक। कारण ओकरा बुझल रहैक जे आइ परीक्षाफल आएत। तेँ हमरा देखितहि पुछलक- “की भेलैक?"

"हम दुनू गोटे प्रथम श्रेणीमे सभ विषयमे विशिष्टताक संग सफल भेलहुँ।” -ई सुनितहि ओ खुशीसँ आप्लावित भए हमरा भरिपाँज पकड़ि लेलीह। प्रशन्नतासँ ओकर आनन लाल भए गेल छल। देखनाहर देखिते रहि गेल, जे ई की भए रहल अछि?ओहिठामसँ सोझे हमसभ मिष्ठान्न

भंडार गेलहुँ आ भरिपेट रसगुल्ला अपनो खेलहुँ आ चंपा सेहो खेलथि। मिठाइ खेलाकबाद हमसभ फेर रिक्सापर चढ़लहुँ। कालेज जाइत रही कि कालू जोरसँ आवाज देलक।

"केमहर जाइत छह?"

"कालेज जा रहल छी।"

"हमहुँ ओमहरे जाएब।"

मुदा चंपा इसारा केलक जे बढ़ि चलू। रिक्साबला आगा बढ़ि गेल। कालूकेँ ई बात बड़ खराप लगलैक। ओ सोझे हमर मामाक डेरापर चलि गेल आ नून-मिरचाइ मिलाकए हमरा लोकनिक खिलाफ हुनकर कान भरि देलक। कालेजसँ लौटलाक बाद हम जखन माम लग गेलहुँ तँ हुनकर मुँह फुलल छल। प्रणाम केलिअनि तैयो जबाब नहि देलाह। बूझि गेलिऐक जे कालू अपन काज कए गेल। हम अपन समाचार दैत हुनका कहलिअनि –"रस्तामे कालू भेटल छल आ अपनासंगे चलए कहने रहए मुदा हमरा लोकनिकेँ ओकरापर विश्वास नहि भेल। निश्चय वएह अहाँक कान भरलक अछि।"

ई बात सुनितहि मामा भभाकए हँसए लगलाह। बाजि उठलाह- "सत्ते कहलह। ओ बहुत दुष्ट अछि। तोहर परीक्षा परिणाम सुनि हम बहुत प्रशन्न छी। भगवती हमरा लोकनिक प्रार्थना सुनि लेलथि। हमरा लोकनि साँझमे महराजसँ भेंट करए चलब। ओहो बहुत मदति केलाह।"

"ठीक छैक। हम ओहि समयमे आबि जाएब।"

"चंपाकेँ सेहो लेने अबिअहक।"

ई बात सुनि बहुत नीक लागल।

हम चंपाकेँ फोनकए साँझक कार्यक्रमक बात ओकरा कहलिऐक

मुदा ओ साफे मना कए देलक। ओ महराजक नाम लितहि जेना परेसान भए गेलि। हम आगा किछु नहि कहलिऐक आ बात बदलि कए किछु-किछु गप्प कनीकाल करैत रहलहुँ। हम नहि बूझि सकलिऐक जे महराजसँ ओकरा कथीक तामस छैक जखन कि महराजसँ ओकरो गाहे-बगाहे मदति तँ भेटबे केलैक।

खैर! साँझमे हम कनी पहिने मामाक ओतए पहुँचि गेलहुँ। मामा पूछलाह-

"एसगरे अएलह?"

हमरा चुप देखि ओ बात बदलैत कहलाह जे महराज संयोगसँ आइ ठीक छथि। आशा करैत छी जे हमरा लोकनिकेँ भेँट भए सकत।"

"महराजकेँ की होइत छनि? अखने तँ विदेशसँ इलाज करबाकए अएलाह अछि?"

"छोड़ह ई गप्प-सप्प। बहुत तरहक बात छैक। राज-काजमे ई सभ होइते छैक।" -मामा बजलाह।

मामा महराजक राजमंत्री छलाह मुदा जेना-जेना ओ रानीक लगीच अबैत गेलाह, महराज हुनकासँ फटकी होइत गेलाह। मामाकेँ एहि बातक अनुमान रहनि मुदा ओ किछु नहि कए सकैत छलाह। महराजकेँ आपसेमे टनामनी रहनि। ओकर समाधान वएह कए सकैत छलाह।

हमसभ महराजक मंत्रणाकक्ष लग ठाढ़ रही। मामा हमरा ओतहि ठहरबाक हेतु कहलाह। ओ ऐसगरे अंदर गेलाह। कनीकालमे एकटा सिपहसलार हमरा बजबए आएल। हम पहिलबेर महराजक महलमे अंदर धरि गेल रही। ओहि महलक शोभा अनुपम छल। चारूकात नाना

प्रकारक नक्कासी कएल गेल छल। एक-सँ-एक तरहक साज-सज्जाक चीज-वस्तुसभ महलक महत्व बढ़ओने छल। महराज बीचमे विराजमान छलाह। दुनूकात प्रमुख लोकसभ कनीक हटि कए बैसल रहथि। ओहिमे राजमंत्री, राजपंडित, महराजी भगता, राजबैद प्रमुख छलाह। किछु आओर लोक छलाह जिनका हम नहि चीन्हि सकलिअनि।

हम अंदर जाइते महराजकेँ विनम्रतापूर्वक प्रणाम केलिअनि। हमरा बारेमे मामा सभबात पहिने कहि देने रहथिन। तेँ हमरा देखितहि महराज बहुत प्रशन्न भेलाह। हमर हाल-चाल पुछलाह आ आगाक पढ़ाइ-लिखाइक हेतु सहायताक आश्वासन सेहो देलाह। हुनकासँ आशीर्वाद लए हम ओतएसँ बहार भइए रहल छलहुँ कि सौंसे महलमे बहुत जोरकेँ आबाज भेल। मामा हमरा जल्दीए निकलि जेबाक संकेत केलाह। हम ओतएसँ निकलले छलहुँ कि देखैत छी जे किछुगोटे महराजकेँ उठओने-पुठओने कारमे राखि रहल अछि।

"एतेक जल्दीमे की भए गेलनि हिनका?" -हम सोचैत रही।❑

३४

जहिआसँ महराज विदेशसँ आपस अएलाह किछु-ने-किछु धमाचौकरी होइते रहल। जखन-तखन ओ अर्र-बर्र बाजए लगितथि। बेसीकाल आत्मालाप करैत रहितथि। हुनका ठीक करबाक जतेक प्रयास होइत गेल ततेक हुनकर हालत ओझराइते गेल। तरह-तरहक डाक्टर,बैद सभ अएलाह-गेलाह मुदा मामला जस-के-तस। ऐहि विषयपर विचार विमर्ष हेतु राजक प्रमुख लोकनिक गुप्त बैसार भेल। एहिमे राजमंत्री,

राजपंडित, राज बैद, राजभगताक अतिरिक्त राजक जासूसप्रमुख सेहो छलाह।

सभगोटे जासूसप्रमुखक बात सुनबाक हेतु उत्सुक भेलाह। महराजक पछिला तीनमासक गतिविधिक भिडिओ गुपचुप बनाओल गेल छल जाहि आधारपर ओ कहलाह- “महराज अपना बशमे नहि छथि। ओ बेसीकाल अपने-आपसँ सबाल-जबाब करैत रहैत छथि। ओ एना किएक कए रहल छथि से हमरा नहि बुझा रहल अछि।"

महराजी भगता कहलखिन- "भिडिओ चलाउ। हमसभ प्रत्यक्ष देखए चाहैत छी।"

"सही कहलाह" -राजमंत्री बजलाह। जासूसप्रमुख भिडिओ चला देलाह।

ओहि जासूसी भिडिओक चलिते बैसारमे गुम्मी पसरि गेल। महराज करवनो हँसैत छलाह तँ करवनो अपने-आपपर तमसाइत छलाह। ई आत्मालाप विचित्र लागि रहल छल मुदा छल कटुसत्य।

"तूँ अपने लोकक शोषण करैत रहलह। गरीबसभक जथापात कनीमनी लगानक चलते नीलाम करैत रहलह। परिणाम की भेल? सौंसे इलाकामे दरिद्रता पसरि गेल। जाहिठामक माटि-पानि एतेक उर्वरा अछि ताहिठामक लोक अन्न बेगर प्राण दैत रहल आ तूँ व्यर्थक अहंकार प्रदर्शन हेतु बड़का-बड़का देबाल ठाढ़ करैत रहलह।"

"तूँ के हमरा टोकनाहर? हम छी महराज। जे मोन होएत से करब, जे मोन भेल से केलहुँ। तूँ दखल देनिहार कैं?"

"कथीक महराज? जा कए देखहक केरलमे। ओहो महराजे छल। सौंसे इलाकाकेँ स्वर्ग बना देलक। धीआ-पूतासभक पढ़इ-लिखाइक हेतु

सभ सुविधा कए देलक। लोक ओकर दिन-राति जयगान करैत अछि।"

"की कहलह? हमरासँ बेसी जयगान ककर हेतैक?"

"ई तोहर भ्रम छह। किछु लोभी, लालची लोकसभ तोरा घेरने अछि आ झूट-मूठ चढ़ओने रहैत अछि, तँ तोरा होइत छह जे वाहरे हम!" से कहि महराजक आत्मा ओकरेपर हँसए लगैत अछि।

“खबरदार! हम महराज छी। हमरा संगे मर्यादासँ रहह,नहि तँ.. ।"

"नहि तँ की कए लेबह? हम तँ तोरा कहिआ ने संग छोड़ि देलिअह।"

"की अकर-बकर बाजि रहल छह। आत्मा कहीं जीविते फराक भेलैक अछि?"

"ई बात तँ तोरा स्वयं सोचबाक चाही, जे तोरे संगे से सभ किएक भए रहल अछि जे कतहु नहि होइत अछि।"

“रोकू, रोकू महराजी भगता चिकरलाह। भीडिओ रोकि देल गेल।

“की भेलैक?-राजमंत्री पुछलखिन।

"कोनो अपरिचित वस्तु लगीचमे बुझा रहल अछि।" -महराजी भगता बजलाह।

"के अछि? एकरा पकड़ल जाए। एना राजभवनमे निधोख के घुमि सकैत अछि?” -राजपंडित बजलाह।

"मुदा हमरा तँ किछु नहि देखा रहल अछि?" -जासूस बजलाह।

“की देखबैक? जखन आँखिमे शक्ति रहत तखन ने देखबैक?"

-महराजी भगता बजलाह। सभ-सभक मुँह ताकए लागल।

“महराजक स्थिति बहुत खराप बुझाइत अछि, ऊपरसँ एहिठाम

किछु अदृश्य शक्ति सेहो काज कए रहल अछि। पता नहि ओकर एहिठाम घुरिएबाक की लक्ष्य छैक। जे छैक, मुदा हालत बहुत खराप बुझा रहल अछि।" -राजबैद बजलाह।

“एतेकटा राज महल, अकूत संपदा अछैतो महराजक ई हाल किएक भेल?" एहि विषयमे मंत्रणा चलिऐ रहल छल कि हहाइत-फुहाइत मखना यमपाश फेकलक। बैसारमे अफरा-तफरी मँचि गेल। सभगोटे ठामहि पड़ि गेलाह। ककरो होश नहि रहैक, मुदा साँस चलि रहल छलैक। सिपहसलारसभकेँ किछु बुझएमे नहि अएलैक। सभ जान लए भागल।

मखनाक आक्रमणक तोड़ आब ने महराजी भगता लग छल ने महराजक कोनो आओर सिपहसलार लग। जखन यमराजो ओकरा संगे समझौता कए लेलनि तँ अनकर कथे कोन?महराजी भगता होश अबिते इएह सभ सोचि रहल छल कि कालू ओहिठाम पहुँचल।

"किछु बुझलहक?" -महराजी भगता पुछलखिन।

“की बुझबै? मखना बेर-बेर हमरा समाद दैत अछि जे महराजकेँ कहुन चेत जाथि,नहि तँ..."

"नहि तँ की?"

"आब से तँ अहाँ स्वयं बुझनिक छी। आइ-काल्हि मखनाक तोड़ नहि अछि। महराजक ऊपर तँ तेना कए लागि गेल अछि जे हुनकर तँ माथे सुन्न जकाँ भए गेल अछि। राज-काज की चलओताह कपार।"

“समाधान तँ कालू हमरे-तोरे निकालबाक अछि कारण ई सभ मामला डाक्टर बैदक वशक नहि अछि।"

" कएल की जाए?

"देख कालू, किछु छैक, छौक तँ तोहर सहोदरे। करवनो-ने-

करवनो दरेग अएबे करतैक तोहर। तूँ ओकरासँ गप्प करह आ पता तँ लगाबह जे आखिर ओ की चाहैत अछि?"

"हमरा तँ बहुत डर लागि रहल अछि। जँ हमरे पर बिगड़ि गेल तखन?"

"एतेक डरेलासँ काज नहि चलतह। आखिर मखनोकेँ किछु तँ मोनमे हेतैक। पता लगबही, गप्प कर। नहि करबह तँ महराज तँ छोड़तौ नहि।"

"आओर ई जासूस जे भिडिओ बनओने अछि ताहिसँ किछु पता नहि चललैक?"

"ओ भिडिओ बड़ीटा छैक। कनी-मनी देखलासँ जे अनुमान लगाओल जा सकैत छैक, ताही आधारपर ने तोरा चेता रहल छिअह। एखन बहुत देखनाइ बाँकिए छलैक कि मखना आक्रमण कए देलक।"

"मुदा मखनाक लक्ष्य की छैक? से जननाइ तँ बहुत जरूरी थिक।"

"तेँ ने तोरा कहि रहल छिअह जे ओकरासँ सीधा-सीधी गप्प करह। मामिला आब हाथसँ बाहर जा रहल अछि।"

दुनू गोटे गप्प कइए रहल छलाह कि राजमंत्री ओहिठामसँ महराजी भगताकेँ बजाहटि आबि गेलैक। आओर ओ ओमहर बिदा भए गेल।❑

३५

मखना आ कालू दू भाइ छल। ओकर पिताकेँ नीक जमीन जायदाद रहैक। मुदा गाम घरमे आपसी झंझट पसरलैक। मोकदमाबाजी भेलैक। मारिपीट भेलैक। ओहिसभमे लागि जेबाक कारण महराजक

लगान बाँकी रहि गेलैक। ओकर दुश्मनसभ महराजक जेठरैयतसँ मीलि कए ओकर पचासो बिघा जमीन नीलाम करबा देलकैक। देखिते-देखिते ओ बरबाद कए देल गेलाह। धीआपुता सभ अन्न बेगर प्राण देबएपर उतारु भए गेल। एकटा सभतरहसँ जुड़ल-अटल घर साफे उजड़ि गेल। एहन स्थितिकेँ ओ बहुत दिन नहि सहि सकलाह। आ किछुए दिनमे चलैत बनलाह।

ऐहि अन्यायके बरदास करब मखनाक वशमे नहि रहैक। मुदा महराजकेँ विरोध करबाक माने ओ जनैत छल। पुरवारि टोल,पछबारिटोल आ दछिनबाइटोलमे एहन बहुतरास लोकसभ छल जकरा संगे एहिना अन्याय होइत रहलैक। सब चुपचाप सहैत रहल। मखना एकर विरोध करबाक निर्णय केलक। कालू ओकरा बुझेबाक प्रयास केलक मुदा ओ सफल नहि भेल। तीनूटोलक लोकसभ जमा भेल। ओहिमे मखना गरजि कए कहलकैक जे महराजक सिपहसलारसभक जुलुमकेँ विरोध करब जरूरी अछि, ताहि हेतु हमरासभकेँ संगठित होबए पड़त। जौँ हमसभ से नहि करब तँ एहिना फुटा-फुटा कए सभकेँ तबाह कएल जाएत। बैसारमे बहुत लोक आएल छल। महौल एकदम गरमा गेल। सभ मरए-कटए हेतु तैयार छल। लगलैक जे किछु भए कए रहत। महराजक सिपहसलारसभ घात लगओने सबटा बात सुनि रहल छल। बैसार समाप्त भेल। झलफल भए गेल छल। मखना अपन घर दिस जा रहल छल कि कोनटापर महराजक चारिटा लठैत दे- दनादन दे- दनादन ओकरापर प्रहार केलक आ ओ ओहीठाम ठामहि रहि गेल। मखनाक देहसँ ओकर आत्मा निकलितहि निश्चय केलक जे जाबे एहि महराजक अंत नहि होएत ताबे ओ चैनसँ नहि बैसत।

मखना अपन जान तँ देबे केलक कालूक मोनमे सभदिन लेल

अपराधबोध कए गेलैक। ओहि घटनाक बाद कालूक जिनगी कहिओ सोझड़ा नहि सकलैक। ओझराइते चलि गेलैक। ओकर घरबाली ककरो आन संगे भागि गेलैक। करबो की करितैक? घरमे दिन-राति कलह होइत रहैत छलैक। भोजनोक अभाव छलैक। कतए गेलैक, ककरा संगे गेलैक, किछु पता नहि चललैक। तकरबाद कालू भगतै धेलक। धन के भगतै जे ओकर जान बाँचल अछि। एही धंधासँ पेटो भरैत छैक आ लोकसभ ओकरासँ डराइतो छैक।

मखना ई रूप धए लेत आ एहन विकट भए जाएत जे महराजोकेँ पानि पिआ देत से तँ किओ कहिओ नहि सोचने छल, कालूक कोन कथा? ओ तँ मखनाकेँ बिसरि गेल छल। मुदा आब तँ सभ कालूक खुशामद कए रहल अछि जे मखनासँ महराजक जान बचाउ। "किएक बचेतैक" -ओ मोने मोन सोचैत रहए। महराज कोन उपकार केने छैक? ओकर पिताकेँ बिल्टा देलक। ओकर सभक सभटा जमीन जायदाद मुफ्तमे हरपि लेलक। बाह रे महराज!

तहिएसँ मखना महराजसँ बदला लेबाक हेतु भटकि रहल छल आओर आब तकर समय लगीच आबि गेल छल। कालू किएक ओकर हाथ धरतैक? किन्नहु नहि। ओ अपनो तँ महराजेक अन्यायी व्यवस्थाक शिकार अछि। फेर दुनू भाए छल। कालू अखनो मखनाक ताल-पात्रा बूझि नहि रहल छल। चिंता इहो होइक जे जेहो किछु घरारी आ पोखरि बाँचल छैक, ताहूमे ने मखना हिस्सा माँगए लागैक। फेर तुरंते अपने मोनमे होइतैक- "आब ओ जीविते कहाँ अछि जे हिस्सा लेत? भूत-प्रेत भए गेल अछि। भने महराजसँ भिड़ल अछि।

फेर डरो होइक जे जँ मखनाक मोन फिरि गेलैक आ ओकरे पर लागि गेल तखन के बचाओत? कहि नहि ओकरा मखनाक एतेक डर

किएक होइक?प्रायः ओकरा मोनमे जे अपराधबोध रहैक, जे ओ मखनाकेँ बँचा नहि सकल, सएह कारण रहल होएत।

कालू एहीसभ बातकेँ सोचि रहल छल। महराजी पोखरिक घाटपर एसगरे बैसल छल कि लगलैक जेना किओ सामनेमे ठाढ़ छैक। कालू धरफरा कए उठि गेल। अनचोकेमे तेना कए उठल जे दहिना टांगमे मोच पड़ि गेलैक। ओकर ई हाल देखि मखना भभाकए हँसि देलक।

"एतेक किएक डराइत छह? तूँ तँ भगता छह। मंत्र-तंत्र सभ बिसरा गेलह की?"

"पहिने कहह जे तूँ छह के?"

ई सुनि मखना अपन मौलिक रूपमे आबि गेल। कालू दंग रहि गेल। मोन होइक जे मखनाकेँ छातीसँ साटि ली।

"ई की भए रहल अछि? तूँ तँ हवोसँ बेसी पातर लगैत छह।" कालू बाजल।

"भाइ किएक डराइत छी। हम अहाँकेँ किछु नहि बिगाड़ब। हमरा तँ एहि महराजकेँ ठीक करबाक अछि।" -मखना बाजल।

"जँ से बात छैक तँ तोरा लेल जान हाजिर।" -कालू बाजल।

"मुदा बेसी हल्ला नहि करह। चारूकात ओकर जासूससभ भिडिओ बनबैत रहैत छैक। मुदा हमर भिडिओ कतएसँ बनतैक। तूँ सावधान रहिअह।" -मखना बाजल।

बहुत दिनक बाद दुनू भाएमे भरिमोन गप्प भेलैक। मखनाक उद्येश्य स्वागतयोग्य छल। मुदा कालू भगताकेँ डर होइक जे जँ ओकर बात महराजक सिपहसलार सभ बूझि जाएत तँ ओ गेल घर अछि। ओकर मोनक बात मखना बूझि गेलैक। ओ बाजल- “भैया तूँ हमर बातपर

विश्वास करह। महराजक दिन आब गनल छैक।"

"से कोना? महराजक पाछा तँ ओकर एतेक सिपहसलार सभ छैक। तोरा संगके छह? अपन देहो नहि छह?"

कालूक बातसँ मखना सोचमे पड़ि गेल। अपन दहिन हाथक यमपाश हिला देलक। आहि रे बा !कालूक माथा घुमि गेलैक। ओ बाजल- "तूँ तँ रहि-रहि कए हमरे डरा दैत छह। ताहिसँ की हेतह?"

"हम तोरा डरबैत नहि छिअह तूँ अपने डराएल छह। बस कनिको किछु हेबाक प्रयोजन अछि आ तूँ परेसान भए जाइत छह।"

"से बात तँ सत्ते। मुदा एसगरे तूँ कतेक लड़बह। किछु आओर समर्थक तँ चाही। कारण इ महराज बड़ मायाबी थिक।"

"चिंता नहि करह। यमराजसँ गप्प भेल अछि। ई महराज बहुत लोकर्कें तंग कए-कए अकाल मृत्यु देने अछि। ओ सभ हमरा संगे अछि। बस, एकटा इसाराक काज छैक। महराजसँ बहुत लोक तंग अछि। बहुत निर्दोष लोकक घर ई उजाड़लक अछि। तूँ एहन लोकसभकेँ संगठित करह। "

"जे होइक मखना भाइ! हम तोहर लोहा मानि गेलहुँ।"

कालू मखनाक पीठ ठोकि देलक आ मीठा पान खाए फोंफ काटए लागल। जखन निन्न टुटलैक तँ सामनेमे महराजी भगता ठाढ़ छलाह।❑

३६

महराजी भगता राजमंत्रीसँ भेंट करए जाइत छलाह। रस्तामे कालू

भेटि गेलनि। कालू मखनासँ गप्प भए कुप्प भेल रहए। महराजी भगताकेँ बेसी भाव नहि देलक। एहनसन जेना ओकरा देखनहि नहि होइक। महराजी भगताकेँ अंदाज भए गेलैक जे कालूक मोनमे किछु घुमि रहल अछि। पुछलखिन-

"की बात छैक?"

"किछु नहि।"

"किछु तँ छैक जे आइ तूँ टोकबो नहि केलह।"

"गाम-घरक चिंतामे रही, नहि देखि सकलहुँ।"

से सभ कहि ओ महराजी भगताकेँ टरका देलक। महराजी भगता आगू बढ़ि गेलाह।

राजमंत्री ओकर प्रतीक्षा कए रहल छलाह। ताबे महराजी जासूस सेहो आबि गेल आकि ओकरो बजओने रहथि। क्रमशःकोर कमिटीक सभ सदस्य आबि गेलाह। ओहि दिनक बात बहुत मोसकिलसँ ओसभ ठीक भेल रहथि। मुदा डराएल तँ छलाहे, तेँ सभगोटे अपन-अपन जेबीमे हनुमान चलीसा रखने रहथि।

राजमंत्री कहलखिन –“जासूसी भिडिओकेँ आगा चलाउ। भए सकैत अछि जे किछु नव बात सामने आबए।"

पछिलाबेर जकाँ फेर कोनो दुर्घटना ने नहि भए जाइक ताहि हेतु ओसभ अपना भरि बहुत यत्न केने रहथि। सभटा केबार बंद कए देल गेल छल। महराजी भगता किछु-किछु टोना टापर सेहो केलथि। तकरबाद महराजी जासूस भिडिओ चलओलाह। महराजक फेर वएह रंग-ढंग। कहि रहल छथि- "अहाँ कोनो पूण्य तँ केलहुँ नहि। दिन-राति भोग-विलासमे लागल रहलहुँ।

"की गलत-सलत बकि रहल छी।

"बातक बतंगर नहि करू। बुझलहुँ जे अहाँ सदरिकाल बुत रहैत छी मुदा अपनो-आपसँ तँ सत्यमे जीबू।"

"की सत्य, की असत्य? राज-काज ओहिना नहि चलैत अछि?

"आम नागरिककेँ एतेक तंग करबाक कोन काज रहैक? गरीबसभक जमीन नीलाम करबाक कोन प्रयोजन छलैक।"

"खाली खरापे बात अहाँकें मोन पड़ि रहल अछि। नित्य हजारो गरीबकेँ चौअन्नी दान देल जाइत अछि से एकहुँ बेर किएक नहि बजैत छी?

"भीख देलासँ की होएत? ओकरासभकेँ काबिल बनबितहुँ। नीकठाम शिक्षा दितिऐक। नीक-नीक कालेज, इसकूल खोलितहुँ तखन ने?"

एहि तरहेँ घंटो ओ अपनेसँ बड़बड़ाइत रहैत छलाह। भिडिओ देखैत-देखैत सभ परेसान भए गेलाह। किछु बुझएमे नहि आबनि जे महराजकेँ की भए गेलनि? ओ बचबो करताह कि साफे सनकि जेताह?प्रश्न-प्रतिप्रश्न भए रहल छल। महराजक हालत दयनीय लगैत छल। कोर कमिटीक लोकसभ चिंतामे पड़ि गेलाह। राजपंडित बजलाह-

"महराजक हालत तँ बहुत गड़बड़ लागि रहल अछि। जँ महराजकेँ किछु भेलनि तँ हमरा लोकनिक की होएत? हमसभ तँ बिलटि जाएब।”

"बात तँ सही कहि रहल छी। छप्पन प्रकारक भोग कतएसँ देखब?" -महराजी भगता बजलाह।

"मुदा समाधान की अछि?" -राजबैद बजलाह। डाक्टरसभक हिसाबे महराज एकदम ठीक छथि। विदेशी डाक्टरोसभ हुनका किछु नहि

कए पाबि रहल अछि।"

"कोनो बिमारि रहनि तखन ने डाक्टर इलाज करतनि" -महराजी भगता बाजल। एहि तरहें बड़ीकाल धरि घमरथन चलैत रहल। विचार-विमर्ष चलिए रहल छल कि एकटा बेस मोट लिफाफा ऊपरसँ खसल। राजमंत्री मूड़ी छिप लेलाह नहि तँ हुनकर माथेपर खसैत।

राजमंत्री ओहि लिफाफाकेँ खोलिकए ओहिमे राखल चिठ्ठी पढ़ए लगलाहः

“महराज आ हुनकर सिपहसलार सभ कान खोलि कए सुनि लेथि। आब ओ समय नहि थिक जे निर्दोष लोकसभ अहाँक अन्याय सहैत रहत। लोक जागि गेल अछि। जकर जे जथापात अहाँ हरण केने छी से शीघ्र ओकरा आपस कए दिऔक। लोक कल्याण हेतु जाहि धन संपदाक उपयोग हेबाक चाहैत छल तकरा अहाँ भोग विलासमे निंघटा देलहुँ। राज्यसंपदा नष्ट होइत रहल आ अहाँ देखैत रहलहुँ । अहाँ जहाँ-तहाँ महल बनबैत रहलहुँ आ एहिठामक लोकसभ भुखल-पिआसल परदेशमे भनसिआक काज तकैत रहल। अहाँक सिपहसलारसभ सेहो दिन-राति मौज करएमे लागल रहलाह। लोक परेसान भेल तँ भेल। मुदा आब ई अन्याय नहि चलत। जा धरि एक-एक व्यक्ति अपन अधिकारपर काबिज नहि भए जाएत हमसभ चुप नहि बैसब। अपन अधिकार लए कए रहब।”❑

३७

कालू केँ मरवनाक प्रति मोह जागि गेलैक। आखिर ओकर सहोदर भाए छलैक। फेर ओकर उद्येश्यसँ ओ प्रभावित छल। मुदा मरवनाकेँ देह तँ छैक नहि। ओ महराजसन लोकसँ टक्कर लेत कोना?महराज तँ एकसँ-

एक लठैतकेँ रखने छथि। इएह सभ सोचैत-सोचैत ओ टीसन पहुँचि गेल। गेटेपर लोटन भेट गेलैक। कतबो मना केलकैक ओ नहि मानलकैक,चाह पिएबे केलकै। चाह पिबैत-पिबैत गाम-घरक बात उठि गेल।

"बाबू बहुत दिनसँ दुखित छथि।" -लोटन बाजल।

'की भेलनि?-कालू पुछलकैक।

"की कहिअह। हमरे डेरामे स्नानकए बाहर निलैत रहथि कि पिछड़ि कए खसि पड़लाह। वामा जांघक हड्डी टूटि गेलनि। बएस बेसी छनि। डाक्टरसभ शल्य चिकित्सासँ मना केलक। अपना भरि जे कए सकैत छल से डाक्टरसभ केलक मुदा हुनकर जांघक हड्डी ठीकसँ नहि जुड़लनि। दुनू पैर चोट-पैघ भए गेल अछि। चलबामे बहुत परेसानी भए गेल छनि।"

"छथि कतए?"

"काल्हिए गाम पहुँचा देलिअनि अछि। एहिठाम मोन नहि लगैत छलनि। फेर हमर घरक लोक सेवा करैत-करैत थाकि गेल रहए।"

"गाममे के देखतनि?"

"बात तँ तूँ सही कहि रहल छह। फिलहाल हमर छोटकी बहिन आएल आछि, मुदा ओ कतेक दिन रहत?

सोचैत छि जे अपने किछु दिन गाममे रहि जाइ।"

“चलह ने हमहु गाम चलब।"

“ठीक छैक। विचार होअ तँ काल्हि भोरुका गाड़ीसँ चली।"

" तूँ तैयार रहिअह, हम एतहि आबि जाएब।"

प्रात भेने कालू आ लोटन ट्रेनसँ गाम बिदा भेल। ओहि डिब्बामे संयोगसँ जेलर सेहो बैसल रहए। कालूकेँ देखितेँ ओ चिकरल- “कालू

भगत्!

कालू के आबाज परिचित लागि रहल छलैक मुदा ओकरा चिन्हि नहि रहल चलैक। पुछलकैक- “तूँ के छह?"

"हम छी जेलर बाबू"

"तोहर ई हाल कोना भेल?"

"बहुत मोन खराप अछि।"

"की भेल से साफ-साफ कहह।"

लोटना सेहो जेलरकेँ चीन्हि गेल। ओहो तँ ओकरे जेलमे बंद छल। जेलर रोगाक काँट-काँट भए गेल छल। कहलकैक-

"पता नहि कोना ओहि दिन एकटा खोहमे पहुँचि गेलहुँ। तहिआसँ एकसरे ओतहि पड़ल छलहुँ। क्यो खोज-खबरि लिनेहार नहि। एक सप्ताह पहिने क्यो अस्पतालमे फेकि गेल। अस्पतालोबलासभ जबाब दए देलक अछि। कहलक जे अहाँकेँ लीवरमे कैंसर फैलि गेल अछि। गाम चल जाउ। आब किछु इलाज संभव नहि अछि।”

जेलरक ई हाल देखि कालू बहुत दुखी भेल। लोटन सेहो परेसान रहए। पुछलकैक- “मुदा अहाँ एसगरे कोना कतहु जा सकब?"

जेलर किछु जबाब देबासँ पहिने ट्रेनेमे बेहोश भए गेल।

बाहर हल्ला भए रहल छल। टीसन आबि गेल छल। हमसभ उतरि गेलहुँ। देखलिऐक जे किओ जेलरक लहासकेँ टीसनपर उतारि देलकैक।

कालू टीसनपर ऊपर दिस देखलक तँ मखना हँसि रहल छल। ओ कालूकेँ इसारासँ खसकि जेबाक हेतु कहलकैक। कालू लोटनकसंगे अपन गाम दिस बिदा भए गेल।

जेलर सरकारी आदमी छल। कतेको दिनसँ निपत्ता छल। तकर

रेपोर्ट थानामे लिखल छल। रेलवे पुलिस लहासकेँ अपन कब्जामे लए पुलिस थानामे सूचना देलक। ओकर जेबीसँ मोबाइल फोन आ पाकिट डायरी भेटलैक जाहि आधारपर ओकर सिनाख्त भेल। रेलवे पुलिस जेलरक लहासकेँ थानामे आपस कए देलक।

कालू लोटनकसंगे पुरबारिगाम पहुँचल। गाममे जेलरक मृत्यक समाचार पसरि गेल। ओहिगामक बहुत रास लोक ओकरा जनैत रहैक। गौँवासभ थाना पहुँचल। थानामे लोकक करमान लागि गेल छल। सभ लहासकेँ घेरने ठाढ़ छल, मुदा ककरो किछु फुरा नहि रहल छलैक। सभकेँ उत्सुकता भेलैक जे जेलरक ई हाल कोना भेल? ओकर पत्नी कहाँ अछि? ओ एसगरे किएक अछि? जखन चौबीसो घंटासँ बेसी समय बीति गेल आ किओ ओहि लहासक दाबेदार आगू नहि आएल तँ गौंआसभ ओकर अंतिम संस्कार कए देलक।❑

३८

कालू,लोटन गाममे बैसार केलक। लग-पासके टोलक लोकसभ सेहो बजाओल गेल। बैसारक कारण ककरो किछु पता नहि रहैक। सभ एक-दोसरासँ पुछिए रहल छल। व्रह्मस्थानमे परिपट्टाक लोक जमा भेल।

बैसार शुरूए भेल छल कि आकाशसँ लाल-लाल फूलसभ खसए लागल। लोकसभ परेसान छल जे ई की भए रहल अछि। ताबतेमे आकाशवाणी भेल-

"अहाँसभ चिंता नहि करू। हम छी मखना-एही माटि-पानिक संतान। हमरासँ डरेबाक काज नहि अछि। हमहीं ई बैसारक हेतु कालू भाइकेँ कहने छलहुँ।

"मुदा तूँ चाहैत की छह?" -लोकसभ एकस्वरमे बाजल।

"हम अहाँसभक जमीन जायदाद महराजसँ आपस करायब। अहाँकेँ प्रतिष्ठापूर्वक अपन गाममे रहबाक परिस्थितिक फेरसँ निर्माण करब।" -मखना बाजल।

"तूँ हमरासभकेँ चाछपर चढ़ा रहल छह। तोरालगमे की छह जे महराजकेँ टक्कर देबह। महराजसँ लड़ब कोनो ठठ्ठा नहि छैक। अपनो जेबह आ हमरोसभकेँ बरबाद करबह" -गौंआसभ बाजल।

"कालू भाइ तोरासभक संगे रहतह। ओकरा सभटा बुझल छैक। हमरा आगा महराजक की?" -मखना कहलक।

आखिर छलैक तँ ओकरे गौँवासभ। किन्नहु मखनाक बात मानए हेतु तैयारे नहि होइक। किछु ललबबुआसभ तँ हल्लुक विरोधे केलक। मखनाकेँ नहि रहल गेलैक। कनीके जोरसँ यमपाशकेँ हिलओलक। देखिते-देखिते आधालोक बेहोश भए गेल। चारू दिस अफरा-तफरीक महौल भए गेल। सभ कालूकेँ गोहराबए लागल।–

"कालू भाइ! जान बचाबह। हमसभ की जाने गेलिऐक छः-पाँच? भेल जे किओ ठकि रहल अछि। फेर मखनाक मरलो कतेक दिन भए गेल। ओ एतेक दिनक बाद कतएसँ ऊपर भेल? से सभ बात सेहो लोकसभक मोनमे आएब वाजिबे छैक। तूँ मखनाकेँ मनाबह। लोककेँ किछु समय दैक। अगिला रविकँ फेरसँ बैसार राखल जाए। ओहिमे एहिसभ बाबत निर्णय कए लेब।"

"एवमस्तु" -बाजि मखना बिला गेल।

सभकेँ जान-मे-जान अएलैक। बैसार समाप्त भेल। कालू लोटनकसंग आगा बढ़ल कि एकटा छौंड़ा दौड़ल आएल

"देबू काका कोनादनि करैत छथिन। कनी जल्दी चलिऔक।

दुनूगोटे झटकारिकए दरबाजापर पहुँचले छलाह कि आंगनमे कन्नारोहटि भए रहल छल। देबू नहि रहलाह।❑

३९

हमर आ चंपाक एम.ए.मे नामांकन नंदनगरमे भए गेल। हमरा दुनूगोटेकेँ सरकारक तरफसँ छात्रवृति सेहो भेटत, से चिट्ठी आबि गेल। आब नंदनगर बिदा होइत रही। मामकेँ प्रणाम करए हुनका डेरा गेलहुँ तँ पता लागल जे ओ तँ बैसारमे छथि। ओहिठाम ककरो आबाजाही मना छैक। ट्रेनक समय भए रहल छल। की करी, किछु बुझा नहि रहल छल। हुनकासँ बिना भेंट केनहि कोना चलि जाउ?तखन की कएल जाए?बैसार कखन टूटत तकर कोनो हिसाब नहि रहैक। अन्दर जासूसी भिडिओ चलि रहल छलैक। हम ओहीठाम दरबान लग बैसि गेलहुँ। संयोगसँ राजबैद बहरेलाह। हमरा बैसल देखि पुछलथि- “की बात छैक?"हम हुनका सभटा बात कहलिअनि आ आग्रह केलिअनि जे हमरा कनीको कालक हेतु मामासँ भेँट करा देथि। हमर ट्रेनक समय भए गेल अछि।" राजबैद अन्दर गेलाह। मामाकेँ कातमे बजाकए हमर समाचार देलखिन। ओ तुरंते बाहर अएलाह। हम हुनका प्रणाम केलहुँ। सभबात हुनका बुझले रहनि। ट्रेन सिटी मारि रहल छल। चंपाक फोनपर फोन आबि रहल छल। हम लत्ते-पत्ते टीसन भगलहुँ।

टीसनपर पहुँचि रहल छलहुँ। ट्रेन घुसकि रहल छल। चंपा बैसि गेल छलि मुदा रहि-रहि कए बाहर दिस उचकि रहल छलि। हमरा देखितहि जोर-जोरसँ हाथ हिलाबए लागलि,साइत ई बतबए लेल जे

जल्दी ट्रेनमे पैसि जाइ। हम सएह करैत छी। जे डिब्बा सामने आएल ओहिमे घुसिआ गेलहुँ। देखिते-देखिते ट्रेन रफ्तार धए लेलक।

ट्रेनमे डिब्बे-डिब्बे आगा बढ़ैत छी। चारि-पाँच डिब्बा आगा टपलापर चंपा देखाएल। ओ फटकिएसँ इसारा देलक। आनन्दसँ मोन आप्लावित छल। हम ओकरा बगलमे खाली सीटपर बैसि गेलहुँ।

“कतए रहि गेलहुँ?" -चंपा पुछलक।

“मामासँ भेंट करए गेल रही। ओ बैसारमे व्यस्त छलाह। एही चक्करमे देरी भए गेल।”

ट्रेन भोरे नंदनगर पहुँचते अछि। सहयात्रीसभ सुतबाक ओरिआनमे लागि गेलाह। लाइट मिझा देल गेल। मुदा हम दुनूगोटे अपने दुनिआमे मस्त रही। निन्न हरा गेल छल। कतेक गप्प करी से बुझेबे नहि करैत छल। पहिलबेर राजपुराक चौहद्दीक पार जा रहल छलहुँ ओहो चंपाक संगे।

रातिभरि हमसभ जगले रहि गेलहुँ। भोर भए रहल छल। ट्रेन नंदनगर टीसनक प्लेटफार्म संख्या एकपर लागि गेल छल। आब ओकरा कतहु नहि जेबाक रहैक। यात्रीसभ एक-एक कए उतरि गेलाह। आब हमही दुनूगोटे रहि गेल रही। चंपा इसारा देलक। हम समानसभ पकड़लहुँ आ नंदनगर टीसनपर उतरि गेलहुँ।

चारूकातसँ कुलीसभ दौड़ल। हमरासभ दिस आबि कए कै बेर पुछैत रहल। हमसभ किछु कहि नहि रहल छलहुँ। चंपा कहलक- “चाह पीवि लैत छी, तखन चलब।"

"ठीके कहलहुँ।" दुनूगोटे टीसनपर चाह पीलहुँ। राति भरिक मधुर स्मृति हमरासभक चाहक स्वादकेँ आओर रमनगर कए रहल छल। मोने नहि होइत छल जे चाह खतम होइ। मुदा खतम भेलैक। हमसभ टेम्पू

केलहुँ आ कालेज दिस बिदा भए गेलहुँ।

दिन भरिक धमाचौकरीक बाद सभटा काज भए गेल। नामो लिखा गेल आ छात्रावासमे कोठरीक आवंटन सेहो भए गेल। चंपाकेँ महिला छात्रावासमे छोड़िकए हम पहुँचलहुँ न्युलाइट छात्रावास। कागज-पत्तर देलिऐक। थोड़बेकालमे अपन कोठरी संख्या पाँचमे पहुँचि गेलहुँ।

छात्रावासमे समान राखि कए स्वागत कक्षमे समाचारपत्र पढ़ए बैसलहुँ। मुख्यपृष्ठपर मोट-मोट अक्षरमे लिखल छल- “महराज अस्वस्थ।"

जा! ई की भेल? मोनमे चिंता होबए लागल। राजपुरा फोन लगबे नहि करैत छल। बहुत प्रयासक बाद कालूभगताक फोन लागल। ओ गाममे छल।

फोन लगितहि अपने बाजए लागल- “किछु पता लगलह की?

"हम तँ बाहर नंदनगरमे छी।"

"ओ! महराज गेल घर छथि।"

से की?"

“फोनपर की-की कहबह। बहुत बातसभ छैक।”

-से कहि ओ फोन राखि देलक।❑

४०

कोर कमीटीक बैसारमे गहन विचार-विमर्ष चलि रहल छल। भिडिओक विभिन्न दृश्यसभपर कै बेर चिंतित होएब स्वभाविक छल

कारण ओहिमे महराजक आन्तरिक सून्यताक बोध होइत छल। असलमे महराजसँ बेसी ओसभ अपन-अपन भविष्य लए चिन्तित छलाह आ राजपंडित बजबो केलाह- “हमरा तँ आब एहि राजक अन्त बहुत समीप बुझा रहल अछि। लगैत अछि जे डोल-डालक समय आबि गेल।

"अहाँ तँ विद्वान छी, मुदा हम कतए जाएब?" -महराजी भगता बजलाह। महराजी जासूस कम चिन्तित नहि रहथि, कारण ओ तँ सभ दिन महराजक आदेश मानि अपने लोकक जासूसी करैत-करबैत रहलाह। मुदा आब की करताह? पोल खुलितहिँ प्राणो बचतनि कि नहि?" सएह सभ सोचैत रहथि। ओ बेर-बेर राजमंत्री दिस देखैत छलाह। राजमंत्री केँ बुझा गेलनि जे जासूस महोदय किछु सोचि रहल छथि। पुछलखिन- “की बात छैक?" ओ मुस्की दैत रहलाह। किछु बजलाह नहि।

गप्प-सप्प चलिए रहल छल कि महराजी जासूस एकटा सीडी राजमंत्रीजीक जेबीमे चुपचाप सरकबैत कनखी मारलाह। राजमंत्री सकपका गेलाह। आखिर ई एना कनखी किएक मारि रहल अछि। सभा विसर्जित भेल। बाहर होइत एकान्त पाबि महराजी जासूस कानमे किछु फदर-फदर केलथि। राजमंत्रीक मुँह पिअर भए गेल।

“जँ भेद खुजि गेल तँ महराज जान नहि बकसताह। आब की कएल जाए? कहुना कए महराजी जासूसकेँ मनाओल जाए। मुदा एहिसँ की होएत? ओ तँ महराजकेँ सभबात कहि देने हेतनि। हमरालेल किएक सोचत। ओकर तँ काजे छैक जासूसी करब। मुदा रनिबासोक जासूसी महराजे करबैत रहलाह। हद भए गेल।"

-तरह-तरहसँ राजमंत्री सोचैत रहलाह। राजमंत्री डेरा पहुँचि कए सीडीकेँ देखलाह। हुनकर हालत तँ देखएबला छल। मोने-मोन सोचए

लगलाह- “ई जासूस तँ एक-एकटा बातक भिडिओ बनओने अछि। जान बचनाइ मोसकिल थिक। की रानीकेँ एकर जानकारी देल जाए?” -ओ मोने-मोन सोचथि। फेर डरो होनि जे जँ ओहो किछु खेल खेला गेलीह तखन?"बहुत अछता-पचता कए महराजी जासूसकेँ फोन लगेलाह- “हम अहींक डेरा दिस चलल छी।"

"से किएक?"

"अहाँ सभकिछु बूझि ओ कए एना अन्ठा रहल छी।"

से सुनि महराजी जासूस ठहाका पाड़लक। राजमंत्रीकेँ फोनमे ओ ठहक्का सुनेलनि। ओ ठामहि पड़ि गेलाह। राजमहलमे हल्ला भए गेल जे राजमंत्रीकेँ हार्टअटैक भए गेलनि अछि। अस्पतालसँसँ एम्बुलेन्स आएल। हुनका उठा-पुठाकए अस्पताल पहुँचाओल गेल मुदा डाक्टरसभ कहलक- “ई तँ गुजरि गेल छथि।"ऊपर मखना ठहाका पाड़लक।

ओमहर महराज से लथड़ल छलाह,एमहर हुनकर राजमंत्री गुजरि गेलाह। महराजी भगता बहुत परेसान छलाह। हुनका किछु-किछु आभास होनि जे बात किछु आओर छैक। नहि तँ एकहिसंगे मंत्री आ महराज दुनू कोना एहि हालमे पहुँचि गेलाह?

मखनाक दरबार ओहिना सजल जा रहल छल जेना महराजक दरबार उजड़ि रहल छल। जेलरबाबू, देबू, आब महराजक राजमंत्री-सभगोटे मखनाक मुख्यालयमे प्रशासन सम्हारि रहल छलाह। मखना मोंछ पिजओलक। मोने-मोन सोचलक आब दिल्ली दूर नहि।"

महराजसँ हिसाब-किताब सोझ करबाक पक्का निर्णय मखना केने छल। संग्राम गहींर भेल जा रहल छल। तँ सोचलक जे एकटा कोर कमिटीक गठन कएल जाए जाहिसँ नित्य-प्रतिक काज संचालनमे ओकरा बेसी ओझर नहि होइक।❑

४१

मामाक आकस्मिक निधनसँ हमरा बहुत कष्ट भेल। हमरे चलते ओ महराजक चक्करमे पड़लाह नहि तँ अपन गाममे चैनसँ जीवैत छलाह। बादमे कै बेर ओहिठामसँ निकलबाक प्रयासो केलाह मुदा रानी अड़ि जाथि। बादमे तँ महराजक हालत तेहन पातर भए गेल जे हुनकर तमाम सिपहसलारसभ जान छोड़ाबए चाहैत छल।

हम चंपाकेँ फोनकए सूचना देलिऐक आ इहो कहि देलिऐक जे कालेजमे हमर छुट्टीक दर्खास्त जमा कए देत। हम बस पकड़ि राजपुरा बिदा भेलहुँ। ओहिठाम पहुँचैत-पहुँचैत साँझ भए गेल। ताबे मामाक लहासकेँ पछबारिटोल लए कए चल गेल छल। आब की करी?थाकल ठेहिआएल पछबारिटोल बिदा भेलहुँ।

राजपुरासँ पछबारिटोल बेसि दूर नहि छल। बससभ चल गेल छल। संयोगसँ एकटा मोटर साइकलबला ओहीठाम जा रहल छलाह। हुनका हाथ देलिअनि। ओ हमरा अपना पाछा बैसा लेलाह। राति भए गेल छल। पानिसे टिपर-टिपिर पड़ि रहल छल। कनीकाल चललाक बाद मोटर साइकलबला पाछा देखलक।

"बाप रे बाप! ई के अछि? ई मनुक्ख तँ नहि लागि रहल अछि। जाहि तरहें ओ मोटर साइकल चला रहल छल ताहिसँ हमरा शुरुएमे शंका भेल रहए। मुदा ओकर मुँह हेलमेटसँ झाँपल रहैक तेँ सही अनुमान नहि भए सकल। फेर बेगर्ता छल। मामाक अन्तिम दर्शन करबाक प्रवल इच्छा छल। आ संयोगसँ ई व्योंत भए गेल। मुदा एहन तँ हम सोचनो नहि रही। होइत छल जे मोटर साइकलपरसँ कुदि जाइ। इएहसभ सोचैत रही की ओ बजैत अछि- “कथी लेल परेसान छह? हम तोहार मामे छी?"

"की बाजि रहल छी? अहाँ तँ मरि गेलहुँ। तूँ एहिसभक चर्च छोड़ह। हम तोरा अपन गाम पहुँचा देबह। तोरा ततबेसँ ने मतलब छह। चुपचाप बैसल रहह।"

हमर हालत देखएबला छल। सोचिओ नहि सकल रही जे एहनो होइत छैक। राजपुरामे की-की भए रहल अछि से नहि कहि?

हम चुपचाप मोटर साइकलक पाछा बैसल रहलहुँ। ओ मोटर साइकल तेज कए देलक। देखिते-देखिते हम पछबारिटोल पहुँचि गेलहुँ। मोटर साइकलसँ उतरि माटिपर पैर रखने छलहुँ की मोटर साइकल सहित ओ आदमी निपत्ता भए गेल। ततेक डर भेल जे घी-घी पैसि गेल। बाजले नहि होअए। लोकसभ हमरा देखि छगुन्तामे रहए। ताबते कालू भगता आबि गेल। ओ आइ-काल्हि बेसीकाल गामे रहैत अछि। मामाक समाचार सुनितहि एहीटोलपर आबि गेल छल। हमर हालत देखि ओ बातकेँ तारि गेल। ऊपर दिस तकलक। किछु-किछु पदर-फदर केलक। आ हम ऐकदम दुरुस्त भए गेलहुँ।

मामाक दलान ओहिठमसँ सटले छल। दरबाजापर लोकक करमान लागल छल। मामाक लहासपर कनीको मरबाक चेन्ह नहि छल। लगैत छल जेना सुतल छथि। हुनकार लहास देखि हम दहारि पाड़ि कए कानए लगलहुँ। कालू भगताकेँ नहि देखल गेलैक। ओ हमरा बुझबए लागल- “तूँ व्यर्थ परेसान छह। तोहर मामा कतहु नहि गेलह अछि। ओ मरखना लग छथि।"

"से कोना भए सकैत अछि?'-हम पुछलिअनि।

"सभटा आइए बूझि जेबह। अखन तँ अएबे केलह अछि। किछु समय बितए दहक। सभबात पता लागि जेतह।"

कालू भगताक रहस्यात्मक गप्प सुनि ने हँसैत बनैत छल ने कनैत। जे भेल, से भेल मामा तँ नहिए रहलाह। ताहिबातक दुख रहि-रहि कए मोनमे उपकि जाइत छल।

मामाक श्राद्ध संपन्न कए हम आपस नंदनगर चलि अएलहुँ। कालेजक पढ़ाइ जोर पकड़ने छल। नंदनगर पहुँचतहि चंपाकेँ फोन केलिऐक। ओ दौरल हमर डेरापर आएलि आ एकटा झोड़ा राखि देलक।" ई की अछि?-हम पुछलिऐक।"कहि नहि की छैक? एकटा बूढ़ काल्हि साँझमे तोरा तकैत-तकैत आएल छल। तूँ तँ रहह नहि तँ हमरा ताकि कए भेँट केलक आ कहलक जे एहिमे श्रीकान्तक किछु समान छैक। ओ जखन आपस आबए तँ दए दिअहक।"

"आखिर ओ छलैक के? कतएसँ आएल,की अनलक? से बात सभ तँ पुछबाक छल?" -हम कहलिऐक।

"तकर तँ ओ मौके नहि देलक। ओ झोड़ा हमरा हाथमे देलक आ हम किछु पुछबैक ताहिसँ पहिने पता नहि केमहर चल गेल"

ईसभ सुनि हम बहुत चिंतामे पड़ि गेलहुँ। मोनमे अखिआस भेल जे जरूर किछु गड़बड़ छैक। खैर! जखन ओ झोड़ा लैए लेने छलि तँ कइए की सकैत छलहुँ? ओकराहाथसँ झोड़ा लए लेलहुँ। मोन बहुत असोथकित लगैत छल। ई बात चंपा बूझि गेल।

"तूँ बहुत थाकल छह। रातिभरि आराम करह। काल्हि कालेजमे भेंट-घाँट हेतैक।"

"ठीक छैक।-से कहि हम ओकरा अरिआति देलिऐक आ अपन कोठरीमे आबि कए पड़ि गेलहुँ। एकहि निन्ने भोर भए गेल। भोरे किलास जेबाक छल। धरफरा कए उठलहुँ। कालेज जेबासँ पहिने झोड़ा केँ खोलि कए देखिऐक आ देखितहि रहि गेलहुँ।❑

४२

राजपंडित सोचलाह जे आखिर ओहि सीडीमे की छलैक जकरा हाथमे पड़ितहि राजमंत्रीसन आदमीकेँ हार्ट अटैक भए गेलनि आ ओ ठामहि रहि गेलाह । ओ ओहि सीडीक बहुत पुछारी केलक मुदा रानी ओकरा तेना निपत्ता केलीह जे ककरो भाप नहि लागि सकल। मुदा ताहिसँ की होइत। महराजी जासूस कोनो मूर्ख थोरे छल। ओ मूल सीडी तँ अपने लग रखने छल आ पता नहि आओर की-की रखने छल। रानीकेँ एहि बातक चिंता जोर पकड़लकनि। ओ महराजी जासूसक पाछा पड़ि गेलीह।

ओमहर महराज अस्पतालमे बेहोश पड़ल छलाह। हुनकर इलाजक प्रवंध के करैत? एहिठाम तँ सभ अपनेमे परेसान छल। तथापि राजबैदसँ जे बनि पड़नि से करथि। मुदा कोनो इलाजक खास असर हेबे नहि करैक। मखना तेनाक चारूकात बान्हि देने छल जे महराजक सभ सिपहसलारसभ व्यर्थ भए गेल छल।

महराज अस्पतालमे ठीक की हेताह कपार? हुनका नित्य नव-नव उकबा होबए लागल। राजपंडितक माथा ठनकल। डाक्टरसभ साफे हाथ बारि देलक। कहलक- “औ बाबू! एहन रोग नहि देखलहुँ जे अपने ठीक भए जाइत अछि आ अपने बिगड़िओ जाइत अछि।"

"कएल की जाए?-राजबैद बजलाह।

"हमरा तँ किछु फुरा नहि रहल अछि? की कहू।" -से कहि डाक्टर गुम्म पड़ि गेलाह।

"कोनो रस्ता तँ निकालक हेतैक। एना महराजकेँ तँ छोड़ल नहि

जा सकैत अछि?" -राजबैद बजलाह।

"बात तँ अहाँ वाजिब कए रहल छी, मुदा हिनका कोनो बिमारी पकड़मे आबिए नहि रहल अछि। मामला किछु आओर लगैत अछि।"

"तखन की कएल जाए?"

"कोनो नीक मनोवैज्ञानिककेँ देखबिअनु।"

महराजक कोर कमीटीमे तय भेल जे सभसँ पहिने राजक सभ विद्वान, पंडित, ओझा-गुनी, तांत्रिकक बैसार कएल जाए। सौंसे राजमे डिगडिगिआ पिटाओल गेल। जे जतए छलाह से ओतहिसँ महराजक सभामे भाग लेबए हेतु बिदा भेलाह। लोकक करमान लागि गेल। एतेकभारी बैसारकेँ अध्यक्षता के करताह?राजा तँ अपने अस्वस्थ पड़ल छलाह। फेर कखन की रूप धए लए लेताह तकर कोनो ठेकान नहि रहैत छल। कोर कमिटीक लोकसभ निर्णय केलाह जे महराजाकेँ सभक सामने लाएब उचित नहि होएत, कारण एहिसँ हुनकर जेहो एकबाल बाँचल अछि से माँटिमे मिलि जा सकैत अछि। समस्या छल महराजकेँ ठीक करब आ संगहि राजकेँ सुरक्षित राखब। राजमंत्रीक पद बहुत दिन रिक्त नहि राखल जा सकैत छल। ताहूपर विचार होएब जरूरी छल मुदा महराजाक बिना एकर निर्णय के करत?

सभगोटे इएह कहलथि जे रानीकेँ सभाक अध्यक्षता करबाक भार देल जाए। अस्तु, रानीक अध्यक्षतामे सभा प्रारंभ भेल।

किओ किछु बजैत, कोनो तरहक प्रस्ताव चर्चाक हेतु आनल जाइत ओहिसँ पहिने दक्षिनबारी कोनसँ गरजैत-फरजैत एकटा तांत्रिकक प्रवेश भेल। ओ संपूर्ण शक्तिसँ महराजी भगतापर दौड़ल।

"खबरदार तोहर गुन्डागर्दीक आब अंत लगीच अछि।" -तान्त्रिक

बजलाह।

अहाँ अपन पहिने परिचय दिअ आ एहिठाम के पठओलक से कहू।" -राजपंडित बजलाह।

"हम थिकहुँ प्रसिद्ध तांत्रिक मंगला। हमरा कालीक स्वप्न भेल अछि तेँ एतए अएलहुँ अछि।'

"अपने की कहए चाहैत छी से बाजू।"

"महराजक संकट हेतु मखना जिम्मेबार अछि।"

"मखनाक काट कहू ने। समस्या तँ बुझलहुँ।"

"चारू कात महराजक सारासभपर काली मंदिर बनाउ। राजक चारू कात बड़का-बड़का देबाल ठाढ़ करू। ई सभ तुरंत हेबाक चाही। जँ विलंब भेल तँ महराजक रक्षा असंभव।" -मंगला तांत्रिक बजलाह।

"एहि बातक कोन गारंटी थिक जे अपने जे सभ कहलिऐक से केलापर महराज निचैन भए जेताह।- “बैसारक बीचमेसँ लोटन बाजल।

"सत्य बचन। की पता? ई तांत्रिक अपने स्वार्थसँ प्रेरित बुझाइत छथि-कालू बाजल।

"तोरासभकेँ टपर-टपर करबाक कोन काज छह? जँ एहने लुड़िगर रहितह तँ ई सभ होइते किएक।" -महराजी भगता बजलाह।

“अहाँसभ चाहैत की छी? महराजकेँ मदति करए अएलहुँ अछि की हमरासभक दुविधा बढ़ाकए सभ किछु चौपट करए चाहैत छी?" -रानी बजलीह। रानीक बाजब सुनि सभ चुप भए गेल मुदा महराजी जासूस रानीकेँ देखि कए मुस्की देबए लागल। ओकर ई अशिष्टता कैगोटे देखलक। मुदा रानी अन्ठा देलथि।

राहपंडित बजला- “मंगला तांत्रिकक बातपर बिचार करबाक

चाही। डाक्टर- बैदसँ तँ किछु कए पाबि नहि रहल अछि। महराजक हालत दिन-प्रतिदिन खरापे भए रहल अछि। तखन जँ किछु समाधान ई कहि रहल छथि तँ ओकर विचार करबामे कोनो हर्जा नहि बुझा रहल अछि। मुदा एहिसभक कार्यान्वयन हेतु बहुत टाका चाही। बहुत समय चाही। तेँ तुरंत तँ एकरा कएल नहि जा सकैत अछि। तात्कालिक जे समस्या अछि तकरो किछु करब जरूरी थिक।"

"सत्य वचन" -लोकसभ एकस्वरसँ बाजल।

चर्चा चलिए रहल छल कि महाराज मुरेठा बन्हने पहुँचि गेलाह। समस्त सभासद सभ छगुन्तामे पड़ि गेलाह। महराज तँ अस्पतालमे छलाह,फेर एतए कोना आबि सकलाह। महराजकेँ स्वागतमे सभगोटे ठाढ़ भेलाह। नाना प्रकारक अभिवादनसँ हुनकर स्वागत केलाह। रानी स्वयं महराजकेँ आशनपर बैसओलथि आ कानमे किछु कहलखिन। महराजी जासूस ओहिठामसँ करवन चंपत भए गेल तकर किछु पता नहि चलल। महराज सभगोटेकेँ बैसबाक आदेश देलथि। सभ बैसति छथि। तखन महराज बजलाह- “आजुक सभा बिना हमर आज्ञाकेँ कोना बजाओल गेल? "

ऊपरसँ मखना जोड़सँ ठहाका दैत बाजल- “जौर जड़ि गेल आ ऐंठन बाँकिए अछि।"

"खबरदार! ई के एना बाजि रहल अछि?-महराज बजलाह।

ताबतेमे फेर आकाशवाणी भेल- “हम थिकहुँ मखना, अहाँक नियति।"

महराजक सिपहसलारसभ हुनकर कानमे किछु-किछु कहलक। महराज सहमतिमे मूड़ी हिलओलथि आ राजपंडित सभा विसर्जित करबाक घोषणा कए देलथि। सभ अपन-अपन गाम बिदा भए गेल।❑

४३

नंदनगरमे पढ़ाइ-लिखाइक क्रममे गाम-घरक समाचार अबैत रहैत छल। मुदा मामाक निधनसँ हमर बहुत कष्ट भेल। बच्चेसँ ओ हमरा पाललथि-पोसलथि। हम जे किछु छी से हुनके बदौलति। हमरा लगैत अछि जेना हम सही मानेमे असगर भए गेलहुँ। करवनो काल चंपासँ भेंट भेलापर आश जगैत अछि। साइत हमरो जीवनमे कहिओ हरिअरी होइक, मुदा ई तँ भविष्यक बात थिक। एम.ए. अंतिम बरखक परीक्षा अगिला मास शुरु होएत। तकर तैयारीमे लागल छी। चंपासँ कतेको दिनसँ भेंट नहि भेल अछि। प्रायः ओहो परीक्षाक तैयारीमे व्यस्त छथि। साँझमे सोचैत छी जे ओकरासँ भेंट कएल जाए। परीक्षाक तैयारी बहाना तँ अहिए, मुदा असली कारण किछु आओर अछि।

सांझमे हम चंपासँ भेंट करबाक हेतु ओकर छात्रावास दिस बिदा भेलहुँ। ओकर छात्रावास लग बड़ीटा पार्क अछि। कै बेर पहिनो हमसभ ओतए भेंट केने रही। आइओ हम ओही गाछतर बैसल रही। मुदा चंपाक कोनो पता नहि छल। मोबाइल फोनकेँ कै बेर देखैत छी। कोनो मिसकाल नहि अछि। एना तँ कहिओ नहि भेल छल।जौं किछु समस्या आबि गेल किंबा किछु आओर बात भेल तैयो एकटा फोन तँ कए देबाक छल।"कहि नहि की बात भेल?" -हम तरह-तरहसँ सोचैत रही।

घंटाभरि हम ओतहि बैसल रहैत छी। बीचमे मोबाइलपर कै बेर कोशिश करैत छी मुदा करवनो किछु, करवनो किछु बाजए लगैत अछि। आब तँ फोन निट्ठाहे बंद भए गेल लगैत अछि। “कहीं किछु अनिष्ट तँ नहि भए गेल? आ कि ओ जानिए कए अन्ठा देने अछि? आ कि कथुक तामस

भए गेल।” खैर! हम आओर बैसबाक हेतु तैयार नहि रही। राति भेल जाइत छल। परीक्षासे माथपर छल। आपस अपन डेरापर पहुँचि गेलहुँ।

रातिभरि निन्न नहि भेल। कोशिश कइओ कए सुति नहि सकलहुँ। करोट बदलैत रहब कतेक दुखकर अनुभव होइत अछि से तँ भुक्तभोगिए जानि सकैत छथि। देबाल घड़ी दिस देखैत छी। दू बाजि रहल अछि। सौंसे शहरमे साइते किओ जागल होएत। कखनो किताब लए कए पढ़बाक प्रयास करैत छी। कखनहुँ इअरफोन कानमे लगाकए गीत सुनैत छी जाहिसँ छात्रावासक दोसर विद्यार्थीसभक निन्न नहि टुटैक। एतेक के बादो जखन निन्नक कोनो संभावना नहि बुझाइत अछि तँ नित्यकर्म पहिने कए लेबाक हेतु तत्पर भए जाइत छी। स्नान, पूजा सभ किछु कए लैत छी। आब फरीछ भेल जा रहल छल। प्रातःभ्रमण करएबला लोकसभ एमहर-ओमहर चहलकदमी करैत देखाइत छलाह। रिक्सा-टेम्पू चलए लागल। मुदा हम-ओहिना ओछाओनपर पड़ल किछु सोचि रहल छलहुँ कि बाहरसँ किओ टाहि देलक"श्री कांत..!

एना बीच सड़कपर सँ के टाहि दए रहल छथि? ऊपर आबि सकैत छलाह। केबार खट-खटा सकैत छलाह। हम धरफराकए बाहर दिस तकैत छी। एकटा अत्यंत सुंदर,गौरवर्णक ओजस्वी युवक हमरे दिस ताकि रहल छलाह। हमरा बाहर तकैत दिस कहलाह- “हम छी दीपांक। किछु जरूरी काजसँ आएल छी।"

ऊपरे आबि जाउ" -हम कहलिऐक। ओ धरफराएल सभटा सीढ़ी चढ़ि गेलाह। हम कोठरी खोलि कए मुस्तैद रही। हुनका आग्रहपूर्वक चौकीपर बैसेलहुँ। किछु कहितिअनि ताहिसँ पहिने वएह बाजि उठलाह- “हम एकटा दुखद समाचार देबए पठाओल गेल छी।"

“की भेलैक?” -हम पुछलिऐक।

"काल्हि दूपहरमे चंपा छात्रावासक सीढ़ीसँ पिछड़ि गेलीह। किओ पानि खसा देने रहल हेतैक। कैटा पल्टी लैत नीचा पहुँचलीह। दहिना पैरक हड्डी टूटि गेलनि। संयोगसँ छुट्टीक दिन रहैक। छात्रावासक विद्यार्थीसभ हुनका तत्काल अस्पताल लए गेलथि।"

"आब की हाल छनि?"

"आपरेसन भए गेलनि। मुदा ठीक होबएमे समय लगतनि।"

हुनकासँ अस्पतालक जानकारी लेलहुँ। मोन बहुत खिन्न छल। अपनेकेँ समाद देब जरूरी छल। चंपाक डायरीसँ अहाँक अता-पता भेटल। कतबो रोकलिअनि जे चाह-पान कए लिअ मुदा ओ, चलि गेलाह। जाइत-जाइत कहलथि जे ओ ओही अस्पतालमे डाक्टर छथि आ चंपा हुनके वार्डमे दाखिल छथि। अपन मोबाइल नंबर सेहो लिखा देलथि। हमर मोन हुनक प्रति कृतज्ञतासँ भरि गेल। आइओ काल्हि एहन नीक लोक होइत अछि? ❑

४४

राति भरिक जगरनाक कारण मोन असोथकित लागि रहल छल। कतहु जेबाक इच्छा नहि रहए। मुदा समाचारे तेहन भेटल जे रुकि नहि सकलहुँ। रिक्सा पकड़ि अस्पताल बिदा भेलहुँ। अस्पतालक हड्डी विभाग चारिम मंजिलपर छल। लिफ्ट खराप छल। कहुना कए ओतए पहुँचलहुँ। सामनेक बेड नंबर पाँचपर चंपा छलि। हमरा देखिते कानए लगलीह। हम बड़ीकाल धरि ओकरालग चुपचाप ठाढ़ रही। किछु फुरेबे नहि करए। ताबते डाक्टरक हुजुम आबि कए ओतए ठाढ़ भए गेल। ओहिमे सँ किओ इसारा केलक जे हम बाहर जाइ। हम बाहर निकलि जाइत छी। दस

मिनटक बाद डाक्टरसभ जखन बाहर भए जाइत छथि तखन हम फेर ओतए पहुँचैत छी।

"ई कोना भेलैक?" -हम पुछलिऐक। मुदा चंपा किछु नहि बाजलि। तकरबादसँ दस दिन हम ओहीठाम अबैत-जाइत रहलहुँ। आओर किओ रहबो नहि करैक। चंपा डाक्टर दीपांकक जिम्मामे छलीह। ओ दिन-राति एक कए चंपाक सेवा करैत रहल। अपने तँ करबे करए संगहि ओकरा लागल आओर कर्मचारीसभ सेहो ओकर बहुत ध्यान रखलकैक। ऐहि बातसँ चंपा बहुत प्रभावित भेलि। घोर संकटक समयमे डाक्टर दीपांक अपन जकाँ ठाढ़ भेल रहैक। हमहु ओकर सेवाभावसँ प्रभावित रही।

दस दिनका बाद चंपाक टाँका कटल। ओ अपन डेरा पहुँचि गेलि। हम संगे-संगे ओकर छात्रावास धरि गेलहुँ। फेर ओतएसँ आपस अपन डेरामे आबि गेलहुँ। एतए आबि कखन सुति रहलहुँ से नहि कहि। निन्न टुटल तँ भोर भए रहल छल।

ओकरबाद डाक्टर दीपांक बरोबरि चंपाक हालचाल लैत रहल। कै बेर ओकर डेरो अएलैक। आबागमनक ई क्रम क्रमशः अंतरंगतामे बदलि रहल छल से दुनूगोटे बुझैत रहथि। तकरबाद तँ चंपा ओकर बाट तकैत रहैत छलि। जँ कहिओ ओ नहि अबैत वा कनिको देरी भए जैतैक तँ चंपा गेटपरसँ बाहर आबि जाइत। समय बिताबक हेतु आगा-पाछा टहलए लगितथि।

डाक्टर दीपांकक अनवरत प्रयाससँ चंपा जल्दिए ठीक भए गेलि। परीक्षाक समय छल। हम अपन नोटसभ ओकरा देबाक हेतु कै बेर ओकर डेरापर गेलहुँ। एकदिन एहन संयोग भेल जे हम ओकर कोठरीसँ बाहर होइते रही कि डाक्टर दीपांक आबि गेलाह। हम आगा बढ़ि गेलहुँ।

दूमासक बाद परीक्षा संपन्न भए गेल। हमरासभक छात्रावासमे रहबाक काज नहि छल। हम सोचलहुँ जे गाम चली। गाम जएबासँ पूर्ब चंपाक हालचाल लेबए ओकर छात्रावास गेलहुँ। मुदा ओ ओतए नहि रहथि। किओ कहलक जे ओ एक सप्ताह पूर्वे कतहु चलि गेलथि। हम गुम्म पड़ि गेलहुँ। कम सँ कम फोन तँ कए सकैत छलि। तरह-तरहक बातसभ मोनमे घुमए लागल। खैर! ओतए ठाढ़ रहि कए की होइत? चोट्टे घुरि गेलहुँ।

ओहिठामसँ डेरा अबैत माथा घुमि रहल छल। की चंपा दीपांकक संगे कतहुँ चलि गेलि? आ जौं चलिए गेलि तँ हम एतेक परेसान किएक छी? ओ हमर के अछि? हम कतहुँ आबि-जा सकैत छी, तहिना ओहो किएक नहि आबि-जा सकैत अछि?ठीक छैक, हम ओकरासंगे बहुत दिनसँ संपर्कमे छी मुदा ताहिसँ की होइत अछि?संबंधक अन्तरंगता मात्र ओकर दीर्घतापर निर्भर नहि रहैत अछि। भए सकैत अछि जे एकहि बेरमे दीपांक ओकरा बहुत नीक लागि गेल होइक। भए सकैए दीपांकमे एहन गुण ओ देखने हो जकर ओकरा बहुत दिनसँ इच्छा छल। किछु भए सकैत अछि? हम इएह सभ सोचैत-सोचैत अपन डेरा लग पहुँचलहुँ। परीक्षा भए गेल छल। फिलहाल नंदनगरमे रहब कोनो अर्थपूर्ण नहि लगैत छल। मामा से गुजरि गेल रहथि। गाममे अपन के छल के नहि से कहब कठिन?तखन जाइ तँ कतए जाइ?ई बिकट प्रश्न हमरा सामने पहाड़ जकाँ ठाढ़ छल। जहिना हमर किओ आप्त नहि छल आ जौँ किओ छल तँ चंपे छलि, तहिना चंपो एकदम एसगरि छलि। भए सकैत अछि जे दीपांक ओहि शून्यताकेँ भरबामे सक्षम भए गेल होथि। किछु संभव थिक।

ओना चंपो अपना-आपमे रहस्य छलि। एतेक दिनसँ हमर संपर्कमे छलि मुदा कहिओ नहि कहलक जे ओकर माता-पिता के छथि? ओ

कतक रहनिहार छथि?व्यक्तिगत मामलामे ओ पूर्णतः अपरिचिता रहि गेल छलि। हमरा कै बेर मोन होअए जे किछु पुछिऐक मुदा से संभव नहि भेल। एक बेर ओ अपने किछु-किछु बाजए लागलि रहए ताबते किओ अनचिन्हार आबि गेल छल आ बात बदलि गेल।

डेरा पहुँचि तँ गेलहुँ मुदा मोनमे चैन नहि छल। छात्रावास करीब-करीब खाली भए गेल छल। मेस बंद भए गेल छल। आब ओहिठाम रहब ठीक नहि छल, अपितु व्यर्थ लागि रहल छल। रातिभरि कहुना कए समय बितओलहुँ। भोरे उठि कए समानसभ सरिएलहुँ आ बिदा भए गेलहुँ। मुदा जाएब कतए? मामा छलाह ताधरि ई समस्या नहि छल। बस ठहरावपर पहुँचले छलहुँ की राजपुराक बस खुजैत छल। एकहिटा सीट ओहो सभसँ पाछा खाली रहैक। बैसि गेलहुँ। समानसभ पाछा डेकमे राखि देल गेल। समान छलहे कतेक मुदा जएह छल, हमरा लेल तँ बहुत महत्वपूर्ण छल। अस्तु, बस संचालककेँ कहलिऐक जे कनी ओकर ध्यान राखए।"चिंता नहि करू, नीकसँ राखि देलहुँ अछि" -ओ बाजल। हम आस्वस्त भेलहुँ आ अपन सीटपर बैसि बस खुजबाक प्रतीक्षा करए लगलहुँ।

बस हुर्र- हुर्र करए लागल। भेल जे आब जल्दिए खुजि जाएत। एतबहिमे देखैत छी जे चंपा ओ दीपांक सामनेबला बससँ उतरि रहल छथि। हम किछु बजितहुँ वा किछु सुनितहुँ ओहिसँ पहिने हमर बस खुजि गेल। हम एकटक ओमहरे तकैत रहि गेलहुँ।

बस तँ खुजि गेल मुदा हमर मोन ओहीठाम अटकि गेल। मोन होइत रहए जे जोरसँ चिकरी। मुदा ताहिसँ की होएत?जखन भागे बहीर भए गेल हो तखन ककरा सुनेबैक? आ कथी लेल? जे हेबाक छैक से हेबे करतैक मुदा एना हेतैक से उमीद नहि छल। मुदा ई संसार नित्य परिवर्तनशील थिक। भगवान राम कैँ राजगद्दी हेबाक रहनि। सभ तैयारी

भए गेल छल। देखिते-देखितेमे सभटा परिदृश्य बदलि गेल। वएह राम आब पत्नी आ भाएक संगे जंगल बिदा छलाह। ई छैक भाग्यक खेल। जखन हुनको संगे एहन भए सकैत छल तँ अनकर कोन कथा?

बस कखन सौंसे रस्ता टपिकए राजपुरा पहुँचि गेल से नहि बुझलिऐक। एक-एकटा यात्री उतरि गेल छल। हम ओहिना बेसुध बैसल रही कि बस संचालक कहलक- “उतरै किएक नहि छी?बस पाछा घुमि जाएत।" भक टुटल। धरफरा कए उतरलहुँ। समानसभ निकालि देने रहए। ओकरा सम्हारिकए रखलहुँ आ सोचमे परि गेलहुँ जे आब केमहर जाएब? ❑

४५

राजपुरा बस स्टापपर उतरि कए समान लए हम ठाढ़ रही। कोमहर जाइ? पुरबारिटोलमे किओ चिन्हबो करत कि नहि? मामा गाम बिना मामाकेँ कोनो अर्थे नहि छलैक। राजपुरा मामा बिना व्यर्थ भल गेल छल। ओ सएह सभ सोचैत-सोचैत बस ठहरावसँ आगा बढ़ल कि एकटा महिला ठोहि पारि कए कानि रहल छलि। ओकरा नहि रहल गेलैक। लगिचमे जाए ओकरासँ किछु पुछए चाहलक मुदा ओकरा कनबासँ होश होइक तहन ने किछु बाजैत। बहुत बोल-भरोस देलापर ओ बाजलि- “हम छी कामिनी-राज नर्तकी। हमर बेटी नंदनगरमे पढ़ैत छलि। आइ कै दिनसँ ओकर कोनो समाचार नहि भेटल तँ हम स्वयं नंदनगर गेलहुँ मुदा ओ तँ अपन छात्रावाससँ कतहु चल गेल छलि। ओकर किछु खबरि नहि भेटलासँ हम बहुत परेसान छी।" -एकसूरे ओ एतेक बात बाजि गेलि।

अहाँक बेटीक की नाम अछि" -हम पुछलिऐक।

"चंपा।" -एतबा कहि ओ फेर कानए लागलि। चंपाक नाम हुनकर

मुँहे सुनिते जेना करेंट लागि गेल। हम हुनका दिस तकिते रहि गेलहुँ। हमरा बहुत दिनसँ चंपाक बारेमे जानबाक जिज्ञासा छल मुदा अकस्मात जानकारी स्वयं हमरा लग आएत आ सेहो एहि हालमे से हम सपनोमे नहि सोचने छलहुँ। हम ओकरा बहुत बोल-भरोस देलिऐक। साफे कहि देलिऐक जे हम चंपा कैँ जनैत छी, जे ओ हमरा संगे नंदनगरमे पढ़ि रहल छलि, जे ओकर परीक्षा भए गेलैक अछि। तकरबादसँ ओकरासँ हमरा भेंट नहि अछि। मुदा जखन नंदनगर बस ठहरावपर हम बसमे रही आ बस खुजैत रहैक तँ हमरा ओ एक झलक देखाएल छलि,प्रायः डाक्टर दीपांक ओकरा संगे छलैक।"

हमर बात सुनि कए कामिनीक जान-मे-जान अएलैक। एतबा तँ बुझेलैक जे ओ स्वस्थ अछि, सलामत अछि। मुदा पूर्ण आश्वस्त ओ ऐखनो नहि भए सकलि। भैओ कोना सकैत छली? जाधरि ओकरा अपने आँखिए देखि नहि लेत,ताधरि ओकरा चिंतित रहब स्वभाविक छैक।

फेर ओ हमरा बारेमे पुछए लागलि। हम ओकरा अपन परिचय दैत कहलिऐक जे हम महराजक भूतपूर्व राजमंत्री हरिक भागिन छी। हमहु पटनेमे चंपेक संगे ओही कालेजमे पढ़ैत छी। हम चंपाकैँ नीकसँ जनैत छी। तैँ ओकरा लए कए अहाँक एतेक चिंतत रहबाक काज नहि अछि।"

"अहाँसँ से सभ सुनिकए हमरा संतोख भेल अछि। मुदा ओ अछि कतए?"

"हमरो एहिबातक जिज्ञासा अछि। कारण नंदनगरसँ बिदा होइतकाल हम ओकरासँ भेंट करबाक हेतु गेल रही, मुदा ओ भेंट नहि भए सकलि।"

"तखन अहाँ कोना कहि सकैत छी जे ओ सुरक्षित अछि आ हमरा

चिंता करबाक कोनो प्रयोजन नहि अछि?"

"चिंता केलासँ कोनो फैदो तँ नहि अछि। उल्टे मोनो खराप भए जाएत। ओ भुझनिक अछि। अपने सभटा बात सोचत।"

ओकरा बुझा-सुझा कए हम आगू बढ़बाक प्रयास केलहुँ मुदा ओ अड़ि गेलीह जे हम हुनका संगे हुनके बासा पर चली। हमरो तँ कोनो ठेकान नहिए छल। हम हुनका संगे जेबाक हेतु तैयार भए गेलहुँ।

हुनकासंगे रिक्सापर चलैत-चलैत बहुत रास गप्प होइत रहल। जखन हुनका ई बात बुझेलनि जे चंपासँ हमर अंतरंग संबंध अछि तँ हुनकर हर्षक सीमान नहि रहए। कहए लगलीह जे चंपा हुनक एकमात्र संतान छथि। बहुत दिनसँ ओ कथु लेल तमसाएल छनि आ फोनो नहि कए रहल छनि। जखन हमर मामाक गप्प होइक तँ ओ गुम्म भए जाथि। फेर कहलीह जे हमरा लगैत अछि हम अहाँकेँ हुनकासंगे देखने छी। थोड़बेकालमे रिक्सा एकटा बड़का गेटलग ठाढ़ भेल। हमसभ उतरि गेलहुँ। आगा-आगा कामिनी आ पाछा-पाछा हम आगू बढ़लहुं। आहि रे बा ! हमसभ तँ खोह दिस बढ़ि रहल छी। हमर मोनक भाव पढ़ैत ओ कहलीह- “सही चलि रहल छी। कनीके कालमे हमर घर आबि जाएत। जहिना ओ कहने रहथि किछुए आगा बढ़ैत छी तँ एकटा रमणीक स्थानपर पहुँचि जाइत छी। हमरसभक पैर एकटा अतिसुंदर महल दिस बढ़ैत अछि। हम कनी धुकचुकाइतो छी जे कहीं किछु गलत तँ नहि भए रहल अछि?

अंदर होइते हमरा ओ इसारासँ बैसबाक आग्रह केलीह आ अपने चाह लाबए भनसाघरमे चल गेलीह। ओतेकटा घरमे कतहुँ किओ नहि देखा रहल छल। ओ तुरंते भपाइत चाह लेने आबि गेलीह। “एतेक जल्दी कोना चाह बना लेलिऐक?" -हम पुछलिअनि। हुनकर मंद-मंद मुस्कान

देखैत बनैत छल। हमसभ चाहक संग गप्प-सप्पमे लागि जाइत छी। अवसर अनुकूल देखि हम हुनका चंपाक हड्डी टूटि जेबाक चर्च केलहुँ। ओ एकदम परेसान भए गेलीह। हम कहैत छी- "आब तँ ओ ठीक भए गेलि। हम स्वयं ओतए रही। संयोगसँ डक्टर दीपांक अस्पतालमे बहुत मदति केलखिन जाहिसँ ओ शीघ्र स्वस्थ भए सकलीह।"

"दुर्घटनाक बादे हम नंदनगर गेल रही। बहुत प्रयास केलहुँ मुदा ओ भेंटि नहि सकलीह। पता ने कतए चलि गेलि?

जँ कनीकाल लेल बिसरि जाइ जे ओ चंपाक माए छथि तँ ई अखिआसब कठिन भए जाएत जे के चंपा अछि आ के ओकर माए। किओ हुनका देखि कए बएसक अनुमान नहि लगा सकैत छल।

एतेकटा घरमे एसगरे रहब कनी कोना दनि लगैत छल। तथापि थाकल रही। सुतबाक हेतु ओछाओनपर गेलहुँ। नहि कहि, करवन निन्न पड़ि गेलहुँ। दुपहर रातिमे गीत-नाद सुनि निन्न टुटि गेल। हमर कोठरीसँ किछु देखाइत नहि छल। मुदा मधुर संगीत कानमे पड़ि रहल छल। किछु गोटे रहि-रहि कए बाह! बाह! कहि उठैत छलाह, सेहो सुनि रहल छलहुँ। मोन आश्चर्यसँ भरल छल। भेल जे देखिऐक जे बात की अछि? के गाबि रहल अछि? आगा बढ़ैत छी मुदा घरक छिटकनी बाहरसँ लागल अछि। किछु कए नहि पाबि रहल छी। ठामहि पड़ि जाइत छी।

तकरबाद कथी लेल निन्न होएत। टकटकी लागि गेल। गीतनाद होइत रहल। हम ककरो स्वर चीन्ह नहि रहल छलहुँ। जे किओ छलि मुदा ओ बहुत मधुर स्वरमे गाबि रहल छलि। विद्यापतिक गीत- "माधव तूँ जनि जाह विदेशे..गबैत-गबैत ओ एकाएक गुम्म पड़ि जाइत छथि। फेर तरह-तरहसँ हुनकर मान-मान-मनौअल होइत अछि से सभटा सुनि रहल छलहुँ मुदा ई नहि बुझा रहल छल जे ओ कलाकार छथि के? अंतमे "मोर

कर मेहदी लगी,निज कर ते ही सुला जा बालम..... गबैत- गबैत गायिकाक स्वर जेना अवरुद्ध भए गेलनि। कनीकाल हेतु सभ शांत बुझाएल। सभ कतए चलि गेल,की करए लागल?

कोठरीमे एहि तरहेँ हमरा के बंद केलक? आओर भइए के सकैत छलि? वएहटा तँ एहिठाम रहैत छथि। तखन तँ बात स्पष्टे अछि जे ओ किओ आन नहि कामिनीए छथि। ई गप्प सोचिए कए हमरा सौंसे देहक रोआँ ठाढ़ भए गेल। मुदा ई सक कनीके कालमे विश्वासमे बदलि गेल। गित-नाद बंद भेल। हम ओहिना चौकीपर बैसल बाहर दिस देखैत रही कि कामिनीकेँ हुलकैत देखलहुँ। साइत हुनका मोनमे किछु चिंताक भाव सेहो छल।

हम एहन सन भगल केलहुँ जेना गहींर निन्नमे होइ। ओ ओहिठामसँ आश्वस्त भए चलि गेलीह। हम सुति रहलहुँ। भोर भेल। ओहिठाम लगीचमे किछु नहि छल जे कोनो प्रकारक उठापटक होइत। कामिनी सुतले रहथि कि बाहर घंटी बाजल। हम निकलि गेलहुँ। बाहर अबिते छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ। हमरा ओहिठाम देखि कए चंपा आ डाक्टर दीपांक दुनूगोटे अचंभित रहथि। एकर माने जे चंपाकेँ दीपांक पहिनेसँ चिन्हैत छैक की?"मोने-मोन सोचाए लागल। हमही आगा बढ़ि कहलिऐक- “आउ, आउ।

तूँ एतए कोना पहुँचलह?" -चंपा पुछलकैक।

"पहिने बैसि ने। ई सभ गप्प तँ होइते रहत।"

चंपा आ डाक्टर दीपांक ओहिठाम राखल कुर्सीपर बैसै छथि। हम ओकरासभसँ गप्प-सप्प करए लगैत छी। फेर चंपा अपने कहैत अछि जे डाक्टर दीपांक केँ हमहीं अहिठाम आबक आग्रह केने छलिअनि। ओ

हमर माएक भातिज छथि आ हुनकासँ भेंट करबाक हेतु बहुत उत्सुक रहथि। हुनकर आपसी संबंधक जानकारी हमरा अस्पतालेमे भेल छल। तहिआसँ आइ-काल्हि करैत- करैत आखिर हमसभ आबिए गेलहुँ।

चंपाक बात सुनि हमरा अपने होबए लागल जे हमर अनुमान कतेक गलत भए रहल छल। तेँ कहल जाइत अछि जे- "संशयात्मा विनष्यति।" ई तँ रच्छ भेल जे बात खुजि गेल नहि तँ नंदनगरमे ओकरासभकेँ बसक लगमे देखि पता नहि हम की-की सोचए लागल रही?❑

४६

डाक्टर दीपांके कामिनीकेँ फोन कए चंपाक बिषयमे कहने रहैक। ओकरे कहलापर चंपा माएसँ भेट करबाक हेतु आएलि छलि। ओकरा अपन माएसँ मतभेद किएक भेलैक आ भेबो केलैक तँ सोझरेलैक किएक नहि, से हम नहि बूझि पाबि रहल छलहुँ, मुदा एहि विषयकेँ उठा कए की होएत? बहुतरास व्यक्तिगत बात भए सकैत छैक।

करीब दस बाजि रहल हेतैक। कामिनी स्वयं चंपा आ डाक्टर दीपांकक संग हमर कोठरीमे अएलीह। चाह-पान भेलैक। माहौल हल्लुक रहैक। हम चंपा केँ किछु कहितिऐक ताहिसँ पहिने ओ कहए लागलि जे ओ बाबा वैद्यनाथकेँ कबुला केने छलि जे ठीक भेलाक बाद हुनका जल चढ़बए जाएत। ओतहि दीपांकक संगे गेल रहए। हम ओकरा तकैत ओकर डेरापर गेल रही सेहो ओकरा पता लगलैक मुदा ताबे हम नंदनगरसँ चलि गेल रही।

कामिनी कहलकैक- "दोस्तीमे छोट-मोट बातकेँ नहि धरक चाही।"

"से तँ ठीके। ई सभ स्वयं बुधिआर छथि।" -दीपांक बाजल।

गप्प-सप्पक क्रममे कामिनी बाजल –"बहुत दिनक बाद महराजक स्वास्थ ठीक भेलनि अछि। एहि अवसरपर एक सप्ताहसँ उत्सव मनाओल जा रहल अछि। महराज स्वयं एतए आएल रहथि। आ भए सकैत अछि आइओ रातिमे एतहि संगीत सभाक आयोजन होइक। तेँ हम व्यस्त छी, मुदा तूँ सभ अपना हिसाबसँ घुमि-फिरि सकैत छह।"

कामिनीक बातमे स्पष्टता छलैक। साइत ओ जानिए कए ई बात केने होथि जाहिसँ हमरा मोनमे किंवा चंपाक मोनमे कोनो दुविधा नहि रहि जाइ जे ओ की करैत छथि। आ से किएक करैत छथि- तकर जबाब साइत ओ समयपर छोड़ि देने छथि?

अनका जे भेल होइक मुदा हमर मोन बहुत हल्लुक भए गेल छल। हमरा चंपाक पारिवारिक पृष्टभुमिक सही जानकारी भेटि गेल छल। चंपाकेँ आब किछु कहबाक नहि रहैक। हमरा सोचबाक हेतु किछु रहि नहि गेल छल। कामिनी तँ साइत किछु सोचिते नहि छलि मुदा एकमात्र संतानक मोहसँ विवश तँ छलीहे। साइत हमरा देखि ओकरा एहि समस्याक बहुत सार्थक समाधानक संभावना देखेलैक।

हमसभ बैसले रही कि चंपाकेँ कामिनी बजओलक। बहुत दिनक बाद माए-बेटीमे गप्प होइत रहैक। आखिर ओकरा सभहक मतभेदक किछु तँ कारण रहल हेतैक? से जानबाक उत्सुकता दीपांकोकेँ रहैक आ हमरो।

जखन कामिनी ओतहि बैसलि रहि गेलि तँ हमरेसभ लग कामिनी कहलकैक- "अहीँसभ एकरा बुझबिऔक। आब ई कोनो बच्चा तँ नहि अछि। हमर बितल जीवनपर शोध कए एकरा की भेटतैक? वारंबार अपन पिताक परिचय पुछैत रहैत अछि। हम कहए जोगर स्थितिमे रहितहुँ तँ

एतेक दिन चुप किएक रहितहुँ? ई बात एकरा बुझबामे नहि आबि रहल अछि आ हमरासँ झगड़ा केने अछि।"

कामिनी मुँहे ई सभ सुनि हमसभ गुम्म पड़ि गेलहुँ। समस्या बहुत गहींर लागि रहल छल। चंपा नीचा मूड़ी गारने कुर्सीपर बैसलि रहलि। हमसभ चुपचाप सुनैत रहलहुँ। बाजिए की सकैत छलहुँ। फेर कामिनिए ओहि मौनकेँ भंग करैत आगा बजलीह- "हम एकर बात मानिकए किछु दिन गुमति लग खोपड़ीमे एकरासंगे रहबो केलहुँ। मुदा ओहूसँ समाधान नहि भेल। हमर विवशताकेँ एकरा बुझबाक चाही। "

एहिबात पर चंपा उखड़ि गेलैक। ओ चिकरए लागलि- "कर्तव्य, कर्तव्य बजलासँ की होएत? हम आखिर की चाहैत छी? जँ हम अपन पिताक जानकारी चाहलहुँ तँ कतएसँ गलती केलहुँ। अहींसभ कहू?" -ई बजैत बजैत चंपाक आँखि नोरसँ डबडबा गेल। कामिनी दुलारसँ ओकरा अपनामे साटि लेलकैक। फेर बाजए लागलि- "समयपर सभ बूझि जेबही। अखन अपन काजमे लागल रहै। पढ़ाइ--लिखाइ कर। व्यर्थ बातक चंता केलासँ की फएदा?"

कामिनीक उत्तर स्पष्ट छल। चंपाकेँ हमसभ सेहो बोल-भरोस देलिऐक। हम बहुत काल ओहिठाम रहब ठीक नहि बुझलहुँ। अस्तु, चलबाक उपक्रम कएल। ओ सभ बहुत आग्रह करैत गेलीह मुदा हम किछु-किछु कहि बिदा भए गेलहुँ। ओतएसँ सोझे टीसन अएलहुँ। संयोग एहन भेल जे लोटन प्लेटफार्मेपर भेटि गेल। ओहो गामे जा रहल छल। हमरा देखि बहुत प्रशन्न भेल। ओकर व्यवहारमे परिवर्तनसँ हम अभिभूत रही। दुनू भाइ एकहिठाम ट्रेनमे बैसि गाम बिदा भेलहुँ।❑

४७

हम सोचने रही जे हमरा गेलासँ ओहिठामक माहौल हल्लुक हेतैक। चंपा अपन माएसँ नीकसँ बतिआ सकति। मुदा भेलैक उन्टे। चंपाक उपेक्षासँ अपमानित भए कामिनी ठोहि पाड़िकए कानए लगलीह। कनिते-कनिते बाजए लागलि-

"एहन अभिसप्त हम कोनो एसगरे नहि छी। एहि राज महलक औढ़मे कहि नहि हमरा सन-सन कतेको गोटेक परिचय अज्ञात रहि गेल। कतेकोगोटे अकाल मृत्युक शिकार भए गेलि। कतेको गोटे अखनो महले-महल घुमि रहलि छथि। महल ओहिना नहि ठाढ़ होइत अछि? एकर पाछा कतेको निर्दोष आत्माक क्रंदन रहैत अछि। कतेको गरीबक बलिदानक गाथा एहिमे समटि देल गेल रहैत अछि? मुदा संतान होइत छैक कथीलेल? किओ तँ भगीरथ बनए?"

-ई सभ बजैत-बजैत कामिनी ओतहि बेहोश भए गेलीह। चारूकात अफरा-तफरी मचि गेल। सिपहसलार सभ दौड़ल आ सशंकित दृष्टिए एकरासभ दिस देखलक। राजबैद बजाओल गेलाह। दाबाइ-दारू भेल। मुदा कामिनीकेँ होश नहि भेलनि।

प्रात होइत-होइत कामिनीक हालत बिगड़िते गेल। राजबैद फेरसँ अएलाह। देखिते बजलाह- "ई तँ गुजरि गेलि।"

चंपा जोर-जोर सँ कानए लगलीह। कामिनी सभटा रहस्य अपनेमे समटने चलि गेलीह। अपना भरि ओ चंपाकेँ बुझेबाक बहुत प्रयास केलक मुदा समय बलबान होइत अछि। चंपाकेँ कहि नहि की भए गेलैक? वारंबार एकहि प्रश्नकेँ दोहरओलासँ ओकरा की भेटलैक? किछु नहि।

चंपाक प्रश्नक उत्तर कामिनी नहि दए सकैत छलि। महराजक

महल एहन कतेको प्रश्नचिंहके अपनामे समेटि लेने छल। मुदा मखनाकेँ एहि अन्यायसभक प्रति मोनमे आक्रोश छलैक। ओ चुप नहि रहत। अस्तु,जखन कामिनीक प्राण खिचबाक प्रश्न अएलैक तँ ओ कनिको देरी नहि केलक। सोचलक- “एहन-एहन शोषित लोकक कष्ट निवारणक मार्गमे बाधा ठाढ़ कए अनेरे पापक भागी किएक बनल जाए?"

हम गाम पहुँचले छलहुँ कि हमरा दीपांकक फोन आएल। ओकरासँ कामिनीक दुखद समाचार सुनि अबाक रहि गेलहुँ। काल्हिए तँ हमसभ संगे छलहुँ। देखिते-देखिते ई की भए गेल? हम तुरंत राजपुरा आपस अएलहुँ। हमरा तँ सभसँ बेसी चंपाक चिंता होबए लागल। हम ई बात दिपांककेँ कहबो केलिऐक, मुदा ओ चंपासँ मोने-मोन बहुत तमसाएल छल। के ककरा सम्हारैत? सभ अपनेसँ परेसान छल।

जाइत-जाइत कामिनी एकटा चिठ्ठी दीपांककेँ हमरा लेल दए गेलखिन। ओतए पहुँचलाक बाद दीपांक हमरा ओ चिठ्ठी देलाह। ओहिमे लिखल छल- “अहाँक ओ चंपाक जोड़ी देखि कए हमरा बहुत आशा जागल छल। हम एकरा सफल होइत साइत नहि देखि सकब मुदा हमर इच्छा अछि जे अहाँसभ आपसमे बिआह कए हमर एहि अभिलाषाकेँ साकार करब। हम चाहितो अपना जीबैत ई गप्प अहाँसँ नहि कहि सकलहुँ। आब तँ जाइए रहल छी। ई हमर अंतिम इच्छा थिक।

शुभाकांक्षी,

कामिनी”

पत्र पढ़ि कए गुम्म पड़ि गेलहुँ। तत्काल किछु नहि बाजि सकलहुँ। मुदा जखन बादमे चंपासँ भेंट भेल तँ ओकरा ई चिठ्ठी पढ़ए देलिऐक। ओ चिठ्ठी पढ़ि बहुत भावुक भए गेल छलि। ओ किछु कहितए,ताहिसँ पहिने

हम स्पष्ट कहलिऐक- “जाधरि अपनलोकसभ महराजक चांगुरसँ मुक्त नहि होइत छथि ताधरि बिआहक गप्पो सोचब उचित नहि होएत। अस्तु, हमरासभकेँ किछु दिन प्रतीक्षा करए पड़त।” चंपाकेँ कोनो चिंता नहि भेलैक। ओकरा हमरापर पहिनेसँ पूरा विश्वास रहैक, भरोस रहैक जे हम ओकर आ ओकरे छी।

कामिनीक मृत्युक समाचार सौंसेगाम पसरि गेल। ऊपरसँ मखना सेहो हवा देलकैक। कालूकेँ एकांतमे बजओलक आ कहलकैक- “इएह मौका छह। गौंवा सभकेँ जगाबह आ महराजपर आक्रमण कए दएह।" कालू ओकर आदेशके मानैत गौंवासभक बैसार केलक आ सभकेँ महराजी महलमे भए रहल नाना प्रकारक अत्याचारक बारेमे बतओलक। गौंवासभ तँ महराजसँ पहिने सँ तंग छलहे। सभ इएह-ले वएह-ले बिदा भेल। जकरा जे भेटलैक उठेने गेल। ककरो हाथमे लाठी, ककरो हाथमे भाला तँ किओ अपन लाइसेंसी बंदूक धरि उठा लेलक। लगैत छल जेना एकटा जनक्रांतिक अभिर्भाव भए गेल हो।

ई बात हम बहुत बादमे बुझलिऐक जे कामिनी आ निशाक महराजक महलमे आबि गेलाक बाद ओकर संपर्क बढ़ि गेल रहैक। मुदा ओहिठाम किओ अपना मोनक हिसाबे नहि चलि रहल छल। सभ कोना-ने-कोना पैबंद भए गेल छल। मुदा जखन निशाकेँ कामिनीक मृत्युक समाचार भेटलैक तँ ओ बेचैन भए गेलि। पुरबारिटोलक लोकसभ ओकरा जनैत छलैक। कालू भगताकेँ फोन लगेलक। कालू कहलकैक-

“अगुताउ नहि हमसभ आबि रहल छी। भगवानक घरमे देर अछि, अन्हेर नहि अछि। महराजक दिन आब गनल छैक।"

राजपुरा अबैत-अबैत ओ भीड़ बेकाबू भए गेल। महराजक देबालसभ जँ ओतेक ऊँच नहि रहतेक तँ आइ की होइत से नहि कहि? महराजो सतर्क भए गेल रहथि। हजारोक संख्यामे लठैतसभ महराजक

महलक चारूकात पहरा दए रहल छल। अंदरक सभ गेटसब बंद कए देल गेल छल। महराज स्वयं तँ पता नहि कतए निपत्ता भए गेल छलाह।

महराजी पुलिस आ लंठ सभ मिलि कए सभकेँ बाहरे रोकि देलक। मुदा अंदर निशाक नेतृत्वमे महिलासभ उतरिबार कातक गेटकेँ तोड़ि देलक। सभटा महिलासभ ओहिबाटे फरार भए गेलि। ओकरासभक आगू-आगू निशा चलि रहल छलि। मखनाक छाती तँ छत्तीस इंच चाकर भए गेल। कालू भगता सेहो दंग रहए। ग्रामीणसभ एहिबात सँ प्रशन्न रहए जे ओकरासभकेँ अपन जमीन जायदादसँ बेदखल केनिहार महराजक अंत होबहिबला छल। अंदरसँ निशा फाटक खोलि देलकैक। सैकड़ो महिलावंदीसभ रनिबाससँ इएह-ले वएह-ले भागलि। महराजी पुलिससभ ताबे सतर्क भए गेल। निशाकेँ पाछूसँ पुलिसक गोली लगलैक। ओ ठामहि खसलि। प्रात भेने हुनकर लहास राजक हाताक बाहर देखल गेल। एहि तरहेँ बहुतरास रहस्यकेँ अपनासंगे लेने ओ सबदिन हेतु मौन भए गेलीह। मुदा मखना बहुत खुश छल कारण ओकर कोर कमिटीमे एक बेर फेर बृद्धि भेलैक।

महराज स्वयं घटनाक्रम पर नजरि रखने छलाह। बीच-बीचमे बिगड़ितहुँ छलाह। महराजी ताव सबार भए जाइत छलनि। महराजी भगताकेँ तँ पेटमे गुदगुदी लागि रहल छल। महराज कहथि-

"कहाँ गेल ओ तांत्रिक जकरा कहलापर हमसभ एतेक मंदिरसभ बनओलहुँ, पोखरि-इनार सभ खुनेलहुँ,देबालसभ ठाढ़ केलहुँ।"

महराजी भगता बाजल़- "_सरकार ओकर तँ किछु अता-पता नहि अछि। कहीं ओ मखनाक आदमी तँ नहि छल?"

"मखना! मखना ! मखना! जकरे देखू सएह मखनाक माला जप कए रहल अछि। ई मखना केँ अछि?"

महराज एते बजने छलाह कि ऊपरसँ किओ ठहाका पाड़लक।

"कतहुँ किओ नहि देखा रहल अछि फेर ई आबाज ककर अछि?" -महराज बजलाह।

"हम छी मखना-अहाँक काल।"

से सुनितहि महराज बैसार छोड़ि भगलाह। हुनकर अंग रक्षकसभ लाख इसारा दैनि जे रुकि जाउ मुदा ओ लुत्ती भए गेल रहथि। एक हाथे धरिआ सरिआबथि आ दोसर हाथे नाक सुरकथि। महराजी गेट धरि पहुँचलाह कि जोर- जोरसँ हल्ला होइत सुनलाह। कोशिश केलाह जे देबाल फानिकए नालामे कूदि जाइ कि धराम दए खसलाह। रच्छ भेल जे एकटा महराजी पुलिस हुनका लोकि लेलक नहि तँ हुनकर खेल तखने खतम छल।

लोकक हुजुम आगुए बढ़ि रहल छल। ओमहर महराजक लठैतसभ सेहो लाठी भाँजि रहल छल। मखना अपन कोर कमिटीसंगे विचार-विमर्श केलक। राजमंत्री तँ राजकाजकेँ नीकसँ बुझथि। ओ कहलखिन जे दुनूकात तँ अपने लोक अछि तेँ खून-खराबासँ बँचक चाही। महराजकेँ शांतिपूर्ण समाधानक ऐकटा मौका देबाक चाही। जँ ओ तइओ नहि किछु कए सकताह तँ सोचल जेतैक। सभगोटे राजमंत्रीक विचारसँ एकमत छलाह। मखना सेहो ओकरा स्वीकृति एहि संसोधनक संग देलक जे महराजक आवासपर दिनराति हमरसभक नजरि रहत जाहिसँ ओ विदेश नहि भागि सकथि।

मखना एहि निर्णयसँ कालू भगताकेँ अवगत करओलक। लोकसभ बहुत मोसकिलसँ शांत भेल। महराजक लठैतसभकेँ भेलैक जे मखनाक आदमीसभ डरा गेल। ताहि खुशीमे ओ सभ आओर तेजीसँ लाठी भजैत महराज लग पहुँचल। ओकरासभकेँ उमीद रहैक जे महराज

पीठ ठोकताह। मुदा भेलैक उल्टा। ओकरासभकेँ देखितहि महराज चिकरए-भोकरए लगलाह। सभ इएह-ले वएह-ले ओतएसँ भागल।❑

४८

प्रातभेने चारुकात लोकसभ जतए-ततए ठाढ़ महराजक बारेमे चर्च करैत छल। अपना-आपमे एकटा एतिहासिक घटना घटल छल। जे आदमीसभ कहिओ महराजक देबालो लग ठाढ़ हेबाक नहि सोचि सकैत छल से सभ देबाल फानि गेल छल। महराज स्वयं एहिबातसँ ततेक डरेलाह जे दूपहर रातिए राजपुरा छोड़ि अज्ञात स्थान दिस बिदा भए गेलाह। टमटमसँ महल छोड़ि रानीक संगे महराज भागि रहल छलाह, से दृश्य देखि मखना जोरसँ ठहाका पाड़लक। महराज तँ ओतहि बेहोश भए जैतथि। मुदा पाछू-पाछु महराजी भगता चलि रहल छल। तकरासंगे राज बैद ओ राज पंडित सेहो छलाह आ सभसँ पाछा महराजी जासूस अलग एक्कामे सबार छलाह।

महराजकेँ हालत देखैत बनैत छल। कतबो किओ बुझबनि जे हड़बड़ाउ नहि, ओ किछु सुनबा हेतु तैयारे नहि रहथि। एक हिसाबे ओ बिना युद्धेकेँ हारि चुकल रहथि। मखनाक डर हुनक मोनक कोन-कोनमे तेनाक सन्हिआ चुकल छल जे ओ अपनहि राजमहलमे अपनहिँ डरि रहल छलाह। फेर करवन हुनकर रोगसभ उपकि जाएत तकर कोन ठेकान? जाहिठाम एहन प्रजापालक हेताह ताहिठामक प्रजाक तँ भगवाने मालिक।

महराजक काफिलाकसंगे बीस-पचीसटा महराजी पुलिस सेहो

चलि रहल छल। चलैत-चलैत ओ सभ गंगाकात सिमरिआ लग पहुँचि गेलाह। फरीछ भए रहल छल। सभ कहलकनि जे एहीठाम विश्राम कएल जाए। गंगाकातमे भूत-पिशाँचसभ काबूमे रहत। महराजकेँ ई बात सही बुझेलनि। सभगोटे एक्कापरसँ उतरिए रहल छलाह कि मखना यमपाश फेकलक। ओकर लक्ष्य मात्र महराजे रहैत छलाह। मुदा एहिबेर निशाना चुकि गेलैक आ यमपाश सोझे महराजी भगताक गलामे जा कए अटकि गेल। ओ ठामहि चितंग भए गेल। महराजक मुँह तँ फक्क दए पिअर भए गेल। लगैत छल जेना सौंसे देहमे कतहु खून नहि होनि। ओ सुन्न भए ठामहि बैसि गेलाह।

सभ किओ गंगामे स्नान केलाह। पंडाकेँ महराज दए पता लगलनि तँ दौड़ल अएलाह। आशा रहल हेतनि जे मोट दक्षिणा भेटत मुदा एहिठामक तँ हाले-बेहाल छल। यमपाश लागि गेलासँ महराजी भगता बेहोश भए गेल छलाह। राजबैद सभटा उपचार कए थाकि गेलाह मुदा किछु फएदा नहि भेल। क्रमशः ओकर हालत खरापे भेल जा रहल छल। आब की कएल जाए? -महराज बजलाह। मखनासँ समझौता करब एकमात्र विकल्प बुझा रहल अछि।" राजपंडित बजलाह

" मुदा ताहू हेतु तँ ओकरा सामने आबक हेतैक। गप्प करक हेतैक। मुदा ओ तँ कखनो सामने अबिते नहि अछि?-महराज बजलाह।

"सरकार! ओ कोनो हमरा अहाँ जकाँ मनुक्ख तँ अहि नहि जे प्रकट होएत। ओकरातँ देह छैके नहि। ओ मरि चुकल अछि। ओकर आब अहाँ की बिगाड़ करब? किछु नहि। ओ तँ मात्र जनभावनाक प्रतिविम्व अछि। ऊपरसँ ओ यमपाश लेने घुमि रहल अछि। ई तँ ओकर महानता अछि जे एखन धरि हम-अहाँ बाँचल छी।" -राजपंडित बजलाह। "से सभ तँ बुझलिऐक मुदा मखनाकेँ मनाओत के?" -महराज

बजलाह।

"ओकर भाइ कालू छोड़ि कए किओ ई काज नहि कए सकैत अछि। मखना आइ-काल्हि अपन भाइ कालूकेँ छोड़ि ककरो बात सुनितो नहि अछि।

“तँ चली हमसभ ओकरे सँ गप्प करी।"

"पहिने एखुनका समस्यासँ निपटि ली। फेर आगाक सोचल जेतैक"।

“बात तँ सही कहि रहल छी।"

ई सभ गप्प कइए रहल छलाह कि महराजी भगता आँखि उल्टा देलक। राजबैद दौड़लाह। ओकर नारी देखि कए कहैत छथि जे ई तँ गेल।

महराज डरसँ थर-थर काँपि रहल छलाह। देखिते-देखिते महराजी भगताक जान चलि गेल आ हमसभ किछु नहि कए सकलहुँ।" -महराज बजलाह।

"भावी प्रवल।” -राजपंडित कहलखिन।

महराजी भगता मरि गेल। ओकर अंतिम संस्कार ओहीठाम कएल गेल। माघमे मास करए बहुत रास लोकसभ आएल छल। महराजी भगताक गौंवासभ सेहो मास कए रहल छलाह। ओकर मृत्युक समाचार सुनि जे जतहि रहथि ओतहिसँ दौड़ल अएलाह। दाह संस्कारमे सामिल लोकसभ छगुंतामे छल जे महराजी भगताकेँ की भए गेलैक? सभ एक-दोसरसँ कनफुसकी कए रहल छल। एहिसभसँ निपटिकए महराज रानीक संग माघमेलासँ घसकि जाए चाहैै छलाह मुदा रानी अड़ि गेलखिन जे लोकसभ माघ करए निआरि कए अबैत अछि आ हमसभ जखन एतए

आबि गेल छी तँ मास बिताइए कए गेनाइ ठीक होएत। मुदा महराजकेँ तँ हर पैसल रहनि। हुनका मखनाक डर ततेक होनि जे ओ कोनो तरहसँ ओहिठाम रहबाक हेतु तैयार नहि भेलाह। रानी सेहो अपन बातपर अड़ि गेलीह। अंतमे रानी किछु सिपहसलारसभक संगे ओतहि रहि गेलीह आ महराज राजपुरा आपस भए गेलाह।

राजपुरा आपस आबिकए महराज अपन भविष्य लए कए बहुत चिंतित रहथि। हुनकर कै टा खास आदमीसभ गुजरि गेल। जनतामे बहुत आक्रोश छल। हुनकर अपन स्वास्थ सेहो ठीक नहि चलि रहल चलनि। ओ कोनो तरहेँ शांति चाहैत छलाह मुदा हालत तदनुकूल नहि छल। मखनाक बढ़ैत प्रभावसँ हुनकर आस्तित्वपर ग्रहण लागि गेल छल।

कालू भगताक नेतृत्वमे तमाम लोकसभ अपन-अपन गाम आपस आबि गेल। ओकरासभमे बहुतरास आत्मविश्वास आबि गेल छल। यद्यपि महराजक राज बाँचि गेलनि मुदा एहिबेरक आक्रमणमे हुनकर साखकेँ जबरदस्त बट्टा लागल। गाम-घरमे यत्र-तत्र एहि घटनाक चर्च होइत रहल। सभ आशावान छल जे महराजक अंत शीघ्रे होएत आ ओकरसभक जथापात लौटि जेतैक।

लोटन संगे हम बहुत दिनबाद गाम आएल रही। अबिते ई उकबा भए गेल। महराजपर आक्रमणक हेतु गेल लोकसभमे कै गोटेकेँ बहुत चोट लागि गेल रहैक। लोटनकेँ सेहो बामा हाथक हड्डी टुटि गेल रहैक। हम ओकरा लेने गामेक बैद लग गेलहुँ। ओ ओकरा देखि सुनि कहलखिन जे कोनो चिंताक बात नहि अछि। मात्र मोच पड़ल छैक। किछु दिनक इलाजसँ ठीक भए जेतैक। मुदा ठीक हेबाक लक्षण नहि लागि रहल छलैक। क्रमशः ओकरा दर्द बढ़िते गेल। कोनो सुधार नहि देखि हम

लोटनकेँ राजपुराक अस्पतालमे भर्ती करा देलहुँ। ओहिठाम मासदिनसँ बेसिए ओकर इलाज भेल। मुदा ओकर हाथक हड्डी नहि जुड़ल। डाक्टरसभ हाथ बारि देलक। ओकर बामा हाथ सभदिनलेल टेढ़ भए गेल।❑

४९

किछु दिनक बाद हमरसभक एमएक परीक्षाफल बहराएल। हम सौंसे विश्वविद्यालयमे प्रथम आएल रही। आ चंपाक की भेल? सौंसे अखबार उलटि गेलहुँ, कतहुँ ओकर नामे नहि छल? अपन परीक्षाफलसँ जे प्रशन्नता होइत ताहिसँ बेसी कष्ट चंपा लए कए भए गेल। ओकर फोन आएत तँ की कहबैक? आ भेबो कएल सएह। हम अखबार देखिते रही की चंपाक फोन आएल।

"सुनलिऐक जे रिजल्ट बहरेलैक अछि?"

"सएह देखि रहल छी।"

"तूँ कतए छैं?"

"लोटनक डेरापर छी"

"ओ! हम ओतहि आबि जाउ की?"

हम गुम्म रहि गेलहुँ। एहिबातसँ ओकरा बहुत परेसानी भेलैक। किछु अनिष्टक आशंका भेलैक। ओ बाजि उठलि-

"की बात छैक? फरिछाकए कह ने?"

"तोहर नाम रिजल्टमे नहि देखा रहल अछि।"

ई सुनितहि चंपा धराम दए खसलि। वएहटा आशा रहैक सेहो गड़बड़ा रहल छलैक। आब की होएत? ओकर संपूर्ण भविष्य अन्हार

लगैत छलैक।

“हमही तोरे लग आबि रहल छी। परेसान नहि हो। किछु-ने-किछु समाधान हेतैक।”

हम रिक्सा पकड़ि ओकर डेरापर पहुछ गेलहुँ। डेरा एकदम सुन्न छल। किओ कतहुँ नहि। हमरा देखिते ओ ठोहिपारि कए कानए लागलि। एहन गड़बड़ रिजल्टक आशा नहि छलैक ओकरा। यद्यपि परीक्षासँ ठीक पहिने ओ दुखित भए गेल छलि तथापि अपना भरि तैयारी केनहि रहए। हम ओकरा तरह-तरहसँ बौसबाक प्रयास केलहुँ आ कहलिऐक जे कै बेर मौद्रिक त्रुटिसँ सेहो नाम छुटि जाइत छैक से किएक ने हमसभ सँझुका ट्रेनसँ नंदनगर चली। ओतए विश्वविद्यालयमे जा कए सही जानकारी भेटत। चंपाकेँ ई गप्प पसिंद भेलैक। हमदुनू गोटे साँझमे ट्रेन पकड़ि नंदनगर हेतु बिदा भए गेलहुँ। भोरे ट्रेन नंदनगर पहुँचल। रातुक यात्राक की कहू? भगवान जे करैत छथि से नीके करैत छथि। नंदनगर पहुँचि टीसनेपर हमसभ नित्यकृयासँ निपटि सोझे कालेज पहुँचलहुँ। सूचनापट्टपर परीक्षाफल लागल छल। ओहिमे दोसर स्थानपर चंपाक नाम छल। अपन नाम देखितहि चंपा चिचिआ उठलि।

"हम तँ प्रथम श्रेणीमे सफल छी। संगहि विश्वविद्यालयमे दोसर स्थान भेटल अछि।"

"वधाइ हो। हम तँ बुझिते रहिऐक जे तूँ जरूर सफल हेबैँ से सही साबित भेल। अखबारबलापर तँ मोकदमा हेबाक चाही। एहनेमे कै बेर कतेगोटेक जानो चलि जाइत अछि।”

ओहिठामसँ सोझे हमसभ हनुमान मंदिर गेलहुँ। लड्डु चढ़ओलहुँ। तकरबाद ओहीठाम मरवारीबासामे भरिपेट शुद्ध शाकाहारी भोजन केलहुँ। कहबी छैक जे मन हरखित तँ गाबी गीत। से महौल तेहने भए

गेल छल। कालेजमे कहने छल जे काल्हि अंक पत्र सहित आओर कागज सभ भेटतैक। हमसभ रातिमे विश्रामक हेतु जोगारमे लागि गेलहुँ। बहुत दिनक बाद चंपाकेँ एतेक प्रशन्न देखने रहिऐक। ओकर ई प्रशन्नता बनल रहए, कोनो तरहेँ उन्नैस नहि हो सएह हमर अभिलाषा छल। से भगवान पूरा केलथि। ओकर रिजल्ट नीक भेल। हमसभ काल्हि कालेजसँ प्रमाणपत्रसभ लेब आ तकर बाद आगूक प्रयास कएल जाएत। रातिभरि हमसभ टिसनेलगक होटलमे बितओलहुँ।

कालेजमे पहुँचतहि बहुत रास दोस्तसभ भेटलाह। सभ अपन-अपन प्रमाणपत्र लेबएमे व्यस्त छलाह। हमहुसभ अपन-अपन अंकपत्र लेलहुँ। ओतहि कहल गेल जे हमरा दुनूगोटेक व्याख्याताक हेतु तदर्थ आधारपर नियुक्ति तात्कालिक प्रभावसँ भए गेल अछि आ ताहि हेतु तुरंत उप-कुलपति महोदयसँ भेंट करबाक अछि। कहबी छैक जे भगवान जखन दैत छथि तँ चार फाड़ि कए दैत छथि। सएह भए रहल छल। हम दुनूगोटे उप-कुलपतिसँ भेंट करैत छी। ओ तँ हमरेसभक बाट तकैत छलाह। हाथे-हाथ नियुक्ति-पत्र दैत छथि आ ओही दिन विश्वविद्यालयक सहायक प्राध्यापक भए जाइत छी। हमरासभ लेल एहिसँ बढ़ि कए चमत्कार आओर की होइत?

कहि नहि सकैत छि जे ओहि दिन चंपा कतेक खुशी छलि। हमरा तँ लगैत छल जेना एकयुगक तपस्या पूर्ण भेल। हमसभ अपन पैर पर ठाढ़ भए गेल रही। चंपाकेँ एकटा नवजीवन भेटल रहैक। सालोसँ ओ एहिपार ओहिपार करैत रहैत समय बितओने छलीह। आब ओ मझधार टपि गेल छलि। ई समय बनल रहए, एकर कखनो अंत नहि हो सएह हम दुनूगोटे सोचैत रही।

हमरा लोकनिकेँ सरकारी आवास भेटि गेल। हमसभ अपन-अपन घरमे रहए लगलहुँ। पढ़ाइ-लिखाइक काज चलए लागल। एक हिसाबे हमरा लोकनिक जीवन सुव्यवस्थित भए गेल छल। छुट्टी होइतहि हमसभ एक दोसरक ओहिठाम अबैत जाइत रही। लगबे नहि करए जे हमसभ फराक-फराक रहि रहल छी। ओहुना हमरसभक आवास सटले छल। बीचक छोटसन देबाल करवनो खसि सकैत छल।❑

५०

ओहि दिन छुट्टी रहैक। हमरे डेरापर चंपा आ हम बैसल गप्प-सप्प करैत रही कि लोटनक फोन आएल। जहिआसँ ओकर हाथ अवदाह भए गेलैक तहिआसँ टीसनक दोकानोक हालत खास्ता रहए लागल। ओमहर महराजी जासूससभ लोकसभक पाछा पड़ल छल। गामक लगीचमे सभ जमींदारसभक महराजक ओहिठाम बजाओल गेल आ लखनाक समस्याँ अवगत कराओल गेल। ओना ओसभ स्वयं परेसान छलाह कारण निलामीक जमीन औने-पौने दाममे वएहसभ हथिओने रहथि। आब सभपर खतरा छल। लोकसभ अपन अधिकार आपस मांगि रहल अछि। एक बेर एही विषयक कारण महराजपर आक्रमण भेबो कएल जे बहुत कारगर नहि रहल, तकर कारण जे हो। मुदा एकटा रस्ता तँ बनल। महराजक एकबालमे बट्टा तँ लागिए गेल। महराजक हेतु सभसँ अपमानजनक भेल रनिबाससँ महिलासभक पलायन। जेना एकटा उजाहि भेल। अफरा-तफरीक महौल रहबे करैक। ओकरे फएदा उठबैत निशा फाटक खोलि देलकैक आ जकरा जेम्हरे भेलैक तेम्हरे भागल। कोनो गिनती नहि रहैक जे कतेक भागलि आ कतेक रहि गेलीह मुदा

दोसर दिन जखन महराज सिमरिआसँ लौटलाक बाद ओमहर गेलाह तँ ठोहि पाड़ि कए कानए लगलाह। रनिबासमे भम्ह पड़ैत छल।

महराजक ओहिठाम जमींदारसभक बैसारकेँ अत्यंत गोपनीय राखल गेल छल। महराज सभकेँ हालमे भेल विद्रोह आ ताहिसँ उतपन्न संकटक बारेमे जानकरी दैत आग्रह केलाह जे अपन-अपन गाम आपस जाए फनैतसभकेँ काबू कएल जाए जाहिसँ दोबारा एहन हालत नहि उतपन्न होइक। सभ कहलक- “सरकारक हुकुमक पालन होएत। ककर मजाल जे सरकारक खिलाफ ठाढ़ होएत?" तकर बाद सभगोटे अपन-अपन गाम आपस गेलाह आ जहिना बाजल रहथि गरीब सभकेँ पेँच कसए लगलाह। गरीबकेँ काज देनाइ बंद कए देलक। पैंच-उधार सेहो बंद कए देलक। जमींदारसभ सोचने छल जे एकरबाद ओसभ अपने दौड़ल आएत। मुदा से नहि भेल। आब ओ बात नहि छल, समय बदलि गेल छल। ओहोसभ आर-पारक हेतु तैयार छल। सभसँ भारीबात रहैक जे ऊपरसँ मखना कोनो छीज-वस्तुक कमी नहि होबए दैक। राति होइते ओकरासभक टोलमे समानसभ पहुँचि जाइत छल। अस्तु,जमींदारसभक हाथ-पैर सुन्न पड़ि गेल। ओसभ बूझि नहि पाबि रहल छलाह जे ई सभ कोना भए रहल अछि कारण भोर होइते कतहु किछु नहि देखाइत, सभ किछु यथावत।

महराजक सभदाव फेल भए रहल छल। राजमहलमे एसगर भूतजकाँ बड़बड़ाइत घुमैत रहैत छलाह। कोरकमिटीक लोकसभ मखना लग पहुँचि गेल छल। आओर तँ छोड़ू, रानिओ संग नहि दए रहल छलखिन। सिमरिआमे ओ जानि बुझिकए रहि गेलीह। ओहिठाम हुनकर अलगसँ टेंट लगओल गेल आ दिनराति महराजी पुलिससभ पहरा दैत रहैत छल मुदा ताहिसँ की? रानीकेँ जहाँ आँखि लगैत तँ राजमंत्री

आबिकए ठाढ़ भए जैतथि। कै बेर रानी चेहा उठलीह। कै बेर किछु-किछु प्रेमालाप करैत सुनल जाथि। विचित्र दृश्य छल। हरि हँसैत छलाह आ हँसैत छल मखना।

एकराति तँ हरि ओतहि रहिए गेलाह। भोरे जखन रानी उठलीह तँ बहुत आलस्यमे रहथि। मुदा ई नहि बुझाइन जे ई सभ भेलैक कोना? हरि तँ कहिआ कतए मरि गेलाह। तखन ई सभ की भए रहल छल?

भए सकैत अछि ई हुनकर मोनक भ्रमे रहल हो मुदा ओ ओहि भावनामे एक बेर फेर रमि गेल रहथि। हरिक स्मरणमात्रसँ ओ आनंन्दित भए जाथि। सोचाल जा सकैत अछि जे जखन रानीक ई हाल छल, तँ अनकर कथे कोन? ई महराज सामान्यसँ विशिष्ट ककरो नहि छोढ़लाह। सभ हिनकासँ परेसान छल आ मोने-मोन एहिबातसँ प्रशन्न छल जे आब हिनकर अवसान लगीच अछि। एकर कहैत छैक समय। जे सभ काल्हि धरि हुनकर जयगान करैत रहैत छल,दिन-राति छप्पन प्रकारक भोगक इंतजाममे लागल छल, सएहसभ हुक्कालोली भाँजि रहल छल।

महराज स्वयं बहुत परेसान छलाह मुदा हुनकर आब किछु चलिए नहि रहल छल,ने अपना पर ने अनका पर। बाह रे महराज! अपना-आपमे एकटा तमासा भए गेल छलाह। जकरे देखू सएह मखनाक एकबालक प्रशंसा कए रहल छल। जे व्यक्तिकेँ किओ देखि नहि रहल छल। जकर आस्तित्व कहिआ कतए अदृश्य भए गेल छल से सामान्य व्यक्तिक आकांक्षाक प्रतिनिधित्व कए रहल छल आ महराज अपने बनाओल बड़का-बड़का देबाल सभमे अपनाकेँ ताकि रहल छलाह, बड़बड़ाइत रहैत छलाह- “हम के छी, कतए छी?"

महराजक दुर्दशा देखि किओ हुनका संगे किएक रहैत? सभ तँ हुनका संगे सुखक खोजमे गेल रहए। आब जखन मखना यमपाश लए

घुमि रहल अछि, सेहो एहि एलानक संगे जे ओ एक-एक लोककेँ न्याय दिआ कए रहत, महराजक संगे के रहत आ किएक रहत?

रानी सोचि-विचारि कए सिमरिएमे रहि गेल रहथि। हुनका महराजक महल कटैत छल। हरिक रहैत कनी-मनी हरिअरी आएल छल, सेहो आब नहि रहल तखन ओ ओहिठाम की करितथि? जीवन जपाल लागि रहल छलनि। सोचलीह जे गंगा माएक शरणमे चलि जाइ, एहि शरीरकेँ मुक्त करी। ऊपर मखना सभटा देखि बूझि रहल छल। अपन कोर कमिटीकेँ मजगूत केने जा रहल छल। समस्त नगरक लोक जेना ओकर अनुयायी भए गेल छल। एकरा कहैत छैक-जनक्रांति,एकटा एहन क्रांतिक ओ नायक छल जाहिमे समस्त त्रस्त,दुखी, ओ अतृप्त लोकसभकेँ उद्धारक रस्ता देखा रहल छल। ककरो कथुक मोह नहि रहि गेल छलैक,जीवनोक नहि। मुदा सभ एहि महराजक संहार चाहैत छल कारण ओ शोषणक प्रतीक भए गेल रहथि। बाह रे मखना!

मखना अपन कोरकमिटीक बैसारमे जनतासँ प्राप्त समर्थनक हेतु अभिभूत छल। महराजक कोर कमिटी तँ निष्कृय भए गेल छल। हालत ई भए गेल छल जे राजमंत्रीक पद खाली छल आ किओ राजमंत्री बनए हेतु तैयार नहि छल। सौंसे राजपुरा भम्म परि रहल छल।

रानी सोचि लेने रहति जे आब ओ लौटि कए राजपुरा नहि जेतीह। हुनका हरि चाही चाहे एहि जन्म, चाहे तकर उपरांत। हरि तँ एखन मखनाक कोर कमिटीमे छलाह। जे किओ राजपुरासँ जीवनमुक्त होइत छल से सभ स्वेक्षासँ मखनाक ओतए चलि जाइत छल, किओ स्वर्ग नहि जाए चाहैत छल। सभहक मोनमे एकहिटा बात छल जे जाबे एहि राजक गरीब, सतओल, शोषित लोकसभक उद्धार नहि भए जाइत छहि ताबे

स्वर्ग गेनाइ बैमानी होएत। से सोचि शरीर छुटलोपर सभ प्राणप्रणसँ मखनाक संग दए रहल छल। यमपाश मखनाक हाथमे छल। ओ चाहैत तँ यमपाशकेँ शिथिल कए लोकक अवसानकेँ रोकि सकैत छल मुदा लोकसभ महराजक राजसँ तंग छल। किओ हुनकर संग देबाक हेतु तैयार नहि छल।

माघमेलाक अंत छल। सिमरिआमे मास केनिहार सभ किओ स्नानक कए अपन-अपन गाम जेबाक तैयारीमे छलाह। रानी सेहो, ओहीठाड़मे गंगामे पैसलीह। मोनकेँ पाथर कए लेने छलीह। पानि हेमाल भेल छल। तथापि ओ आगुए बढ़ैत गेलीह। हाथ-पैर सुन्न भए गेलनि। शरीरक संतुलन बिगड़ि गेल। ओ ठामहि खसलीह आ गंगाक तेज प्रवाहक संगे बहए लगलीह। रानीकेँ गंगामे बहैत बहुत लोक देखलक। लगैत चल जेना ओ निष्कृय भए गेल छथि,प्रायः बचबाक कोनो प्रयास नहि कए रहल छथि। कतेक दूर धरि लोकसभ हुनका डुबैत देखैत रहल। चारूकात हंगामा भए गेल। महराजी पुलिससभ गंगामे फानि गेल मुदा किछु नहि भेलैक। रानी लहास बनि गेल छलीह।

ओमहर मखनाक ओहिठाम उत्सबक महौल छल। रानीक स्वगत हेतु रेखा स्वयं बाहर अएलीह। आइधरि किओ हुनका घरसँ बाहर नहि देखने छल। मुदा रानीक ओतए अबितहि ओ सभसँ आगू बढ़ि हुनकर स्वागत केलीह। रानी हुनका देखि बहुत प्रसन्न भेलीह। रेखाकेँ देखि कए ओ आश्चर्यचकित रहथि।

ओ चिचिआ उठलीह- “तूँ एहिठाम?"

" हम तँ कहिआसँ छी। अपन हाल-चाल कह?"

दुनू बहिन रानी आ रेखामे बहुत सिनेह रहनि। मुदा रेखा बहुत

पहिने यमपाशमे फँसि गेलीह। महराज किछु नहि कए सकलाह। ओझा-गुनी, डाक्टर-बैद सभ फेल भए गेल। रेखा चलि जाइत रहलीह, बहुत दूर जतएसँ किओ आपस नहि आबि सकल। मुदा ई तँ मखनेक चमत्कार छल जे ओ यमराजोकेँ धकिओलक, यमपाश हथिओलक आ राजपुरासँ चुनि-चुनि कए एक-सँ-एक नीक लोककेँ अपना लगीचमे आनि लेलक।

रेखा आ रानीक खिस्सा हरिकेँ नीकसँ बुझल रहैक। पुरबारिटोल आ पछबाइटोलसँ थोड़बे दूरपर छल दछिनबाइटोल। रेखा आ रानी सहोदर बहिन छलीह। दछिनबाइटोलमे हुनकर पिता धखगर लोक छलाह। तीनूटोलक लोक हुनकर लोहा मानैत छल। हुनका दूटा बेटिए छल। अपना भरि नीकसँ पालन-पोषण केलाह। देखबामे दुनू बहिन अतिसय सुंदर छलीह। एतबे सुंदर छलीह जे महराजधरि एहिबातक खबरि गेल आ ओ आग्रहपूर्वक रेखाक संगे बिआह केलाह। संयोग एहन भेल जे बिआहक साले भरिक भीतर हुनकर देहान्त भए गेल। महराज बहुत दुखी रहथि। हुनकर दुखकेँ देखैत किछुए दिनक बाद रानीक बिआह महराजसँ कए देल गेल। लोकसभ गाहे-बगाहे किछु-किछु बाजए मुदा महराजक सोझा आबक ककरो साहस नहि भेलैक।

दछिनबाइए टोलक खबासिनीक बेटी छलि कामिनी। देखबामे ओ ककरोसँ आगा छलि। रानी संगे ओ महराजक ओहिठाम रानीक सेवा हतु पठाओल गेलि से ओतहि रहि गेलि। जखन कखनो ओ महराजक सोझा अबैत तँ महराज ओकरा देखिते रहि जैतथि। इहो बिसरि जाथि जे रानीकेँ ई बात केहन लगतनि। क्रमशः महराजक नजरि ओकरापर गरैत गेल।

एकयुगक बाद रानी स्वयं हुनका लग आबि गेल छलीह। हरिक प्रशन्नताक तँ अन्ते नहि छल। मखनाक चेलासभ ढोल- नगारा, गाजा-

बाजाक संगे एहि पुनर्मिलनक अवसरपर उत्सव मना रहल छल। मुदा मखना बहुत गंभीर छल। ओ बाजि उठल- "एखन ओ समय नहि आएल अछि। राजपुरापर सामान्य लोकक अधिकार बहालीक बादे सही मानेमे उत्सव मनाबक समय होएत। हमसभ ओही प्रयासमे लागि जाइ। अपन लक्ष्यसँ एमहर-ओमहर नहि होइ, अन्यथा समय हमरासभकेँ माफ नहि करत।"

सभ कहलक- "सत्य वचन।"❑

५१

रानीक एहि तरहेँ गंगामे डुबि जेबाक समाचार लुत्तीजकाँ पसरि गेल। राजपुरामे एहन शोक बहुत दिनक बाद भेल छल। गाम-गाममे एहीबातक चर्चा होइत छल। किओ किछु, किओ किछु कहैत रहल। सभकेँ ई छगुन्ता लगैक जे रानी एसगरे ओतए रहि गेलीह आ महराज किछु नहि कए सकलाह। मामला तँ एतहि गड़बड़ लागि रहल छल। मुदा आब भइए की सकैत छल? रानीक लहास कतहु नहि भेटल। बहुत प्रयास कएल गेल। मलाहसभ महाजाल फेकि-फेकि कै दिन धरि गंगामे लहासकेँ तकैत रहल, मुदा व्यर्थ। पता नहि रानी कतए बिला गेलीह। किओ-किओ कहए जे महराजक अन्याय सहब आब हुनको वशमे नहि रहि गेल तेँ ओ गंगामे समाहित भए गेलि।

रानीक श्राद्ध लए कए पंडित लोकनिमे बेस घमरथन भेल। किओ कहथि जे हुनका तँ साक्षात गंगा अपना शरणमे लए लेलखिन तखन हुनका श्राद्धक प्रयोजन की? ओ तँ मुक्त भए गेलीह। मुदा असली बात तँ मखने जनैत छल आ जनैत छल ओकर चेलासभ जे अखन हुनका मुक्त हेबाक तँ सबाले नहि छल। ओहो मखनाक संगे समस्त दुखी,संतप्त

लोकक कल्याण बिना किन्नहुँ मुक्त नहि हेतीह। ताहि हेतु सभगोटा मखनाक पाछा संपूर्ण शक्तिसँ ठाढ़ छल चाहे ओ राजमंत्री होथि, जेलर बाबू होथि वा देबू-सभक लक्ष्य एक छल। “हमरासभकेँ स्वर्ग नहि चाही, मुक्ति नहि चाही, दुखी,संतप्त लोकक कल्याण चाही।”

"न त्वं कामये राज्यं न स्वर्गम् न पुनर्भवं। कामये दुखः तप्तानाम् प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्।।

मखना तँ प्रतीकमात्र छल। इलाकाक सताओल गेल लोकसभक त्रान दिआबक एकटा मजगूत खुट्टा बनि गेल छल जाहिसँ अनकर कोनकथा, आब तँ स्वयं महराज हतप्रभ छलाह।

आखिर रानी छलीह। महराजक इज्जतिक सबाल छलनि। जीबैत जे सम्मान नहि दए सकलाह, जे कर्तव्यक पालन नहि कए सकलाह ताहि अपराधसँ मुक्तिबोध हेतु श्राद्ध जरूरी छल। संपूर्ण विधि-विधानसँ श्राद्ध कएल गेल। मुदा द्वादसा दिन जे भेल से सभकेँ अचंभित कए देलक। लागल जेना रानी कतहुँसँ अएलीह आ महराजकेँ चिकरि कए कहलथि- “ई ढ़ोंग करबाक कोन काज? "

कै गोटे ई बात स्वयं सुनलथि। सभ गुम्म पड़ि गेलाह। किछु गोटे तँ इएह-ले वएह-ले भगला से घुरि नहि तकलाह। जेना-तेना श्राद्ध संपन्न भेल। महराजक हालत बहुत खराप छल। ओ कोनो हालतमे ओहिठाम रहए हेतु तैयार नहि छलाह।

एहन राजमहलक कल्पना महराज स्वयं नहि केने छल हेताह। आब ओतए छले कथी? रनिबास भम्ह पड़ि रहल छल। भरि-भरि राति महराज टकटकी लगओने रहैत छलाह। कतबो बोताल ढ़ारथि ओ बेअसर रहि जाइत छल। करवनोकए आब अपनो शंका होनि जे हम कथीक महराज छी? एकटा मखना अछि जे सौंसे हिलाकए राखि देने

अछि। हुनकर खास-खास सिपहसलार सभ देह छोड़ि-छोड़ि ओकर कोर कमिटीमे सामिल भए गेल। महराजक हालत एतेक पातर भए गेल जे किओ राजमंत्री बनए हेतु तैयार नहि छल। कतेक दिनसँ ओ पद खाली छल। "मुदा कएल की जाए। भागि चली की? आ जँ से मखनाकेँ पता चलि गेल तँ ओ छोड़त। तखनो घेरबार करत आ बेज्जत होएब से फराके "मोने-मोने महराज सोचथि। रहि-रहि कए यमराजपर तामस होनि। “जँ ओ एना हाथ बारि नहि दितथि तँ मखना एतेक आगा नहि बढ़ैत। आब तँ सभक प्राण ओकर हाथमे छैक। जखन चाहए जकर प्राण झीक लिअए। प्राणभएसँ सभ ओकर पक्षधर भए गेल। अपने राजमे हम एकसर भए गेलहुँ।” तखने मोनमे होनि- “नहि महराज अहाँ सही नहि सोचि रहल छी। जे भेलैक अछि ताहि हेतु अहाँ स्वयं जिम्मेबार छी। खामखा अहाँ मखनाक नाम लगा रहल छी। मखना तँ मात्र एकटा प्रतिबिम्ब अछि। अहींक कएल अन्याय आइ अहाँक गलाक फाँस बनल अछि। "मुदा आब की करी?” -अपने मोनसँ पुछैत छथि? “आब की करब? नियतिकेँ स्वीकार करू। नहिओ करबै तँ की होएत? ओकरा हाथमे यमपाश छैक। जखन चाहत प्राण झीक लेत।" -आत्मालापमे लीन महराजक हालत देखैत बनैत छल।

कहुना कए भोर भेल। महराजक लगमे आब छलहे के?रनिबास खाली भए गेल छल। राजमंत्री कहिआ कतए मरि गेलाह। राजबैद आ राजपंडित सेहो घसकबाक जोगार ताकि रहल छलाह। डुबैत नाओमे सवारी के करत? एहन हतप्रभ महराजकेँ के संग देत आ किएक?

तथापि महराजक बजओलापर राजपंडित आ राजबैद दुनूगोटे हनुमान चलीसा पढ़ैत महराज लग अएलाह। महराजकेँ प्रणाम केलाक बाद पुछलखिन- "अपने कोना छी"

"की रहब कपार? रातिभरि जागल छी। सोचि रहल छी जे किछु दिनक हेतु काशी चली। सुनैत छी जे काशी महादेवक त्रिशूलपर अछि। ओहिठाम मरवनाक प्रकोप नहि चलत।"

"तकर कोन ठेकान महराज!" -राजपंडित बजलाह।

"अहाँसभ सठिआ गेल छी। काशी साक्षात महादेवक स्थान अछि। ओतए मरिओ जाएब तँ मुक्त भए जाएब। हमसभ ओतहि चली।"

"जे आज्ञा।" -कहि राजपंडित जान छोड़ओलाह।

साँझ पड़ि रहल छल। महराजक बनाओल देबालसभ जेना हुनकेपर हँसि रहल छल आ कहि रहल छल- “बाह रे महराज! एहिलेल एतेक पैघ-पैघ देबाल बनेबाक कोन काज छल?" महराज चुपचाप राजपंडित आ राजबैदक संगे काशी बिदा भए गेलाह।

महराज काशी जाएबला ट्रेनमे बैसले छलाह कि ऊपरसँ आबाज भेल- “एना भगलासँ काज नहि चलतह। भागि कए जेबह कतए? पहिने लोकसभक जथापातसभ जे हरण केने छहक से आपस करहक। तकरबादे किछु सोचल जेतैक। जँ से नहि करबह तँ कतहु जेबह हम ओतहि भेटि जेबह।"

महराज ई सभ सुनि-सुनि जेना बेहोश होइत गेलाह। काशीक टीसन आबि गेल छल। महराजकेँ राजबैद बेर-बेर जगाबथि मुदा हुनका मुँहे किछु आबाज नहि निकलि रहल छल। ओ अपन सीटपर पड़ल छलाह। हुनका संगे चलनिहार दुनूगोटे खूब जोर-जोरसँ हनुमान चालीसा पढ़ए लगलाह।

"ई महराज अपने तँ जेबे करत हमरोसभकेँ लए जाएत" -राजबैद

राजपंडितक कानमे कहलाह।

"कहुना हिनका ट्रेनसँ तँ उतारू। फेर देखल जेतैक।" राजपंडित बजलाह। दुनू गोटे एकटा कुलीकेँ बजओलथि। कहुना कए हुनका ट्रेनसँ उतारल गेल।❑

५२

नंदनगरमे चंपाक संग हमर समय बहुत नीक कटैत छल। दिन-रातिक किछु पता नहि चलए। कालेजमे किलास करी आ तकरबाद ठोकले दुनूगोटे कतहु एकांत ताकि ली। ई क्रम कतेको दिन चलैत रहल। ओना हमरसभक डेरा फराक-फराक छल मुदा नामेकेँ। कै राति कखन भोर भेल सेहो पता नहि चलैत छल। बाहर जौं हल्ला नहि होबए लगैत तँ हमसभ ओहिना रहि जैतहुँ। अखबार, दूध, काजबाली सभक पाँति लागि जाइत छल। ओहोसभ अभ्यस्त भए गेल छल।

कै बेर हम चंपा के देखैत रहि जाइत छलहुँ। पता नहि एतेक रास सौंदर्य एकहिठाम कोना एकट्ठा भए गेल। जेहने देखैत, तेहने बजैत, ततबे सुयोग्य। लगैत छल जेना भगवान बहुत फुर्सतिसँ ओकर निर्माण केने छलाह। मुदा एहन नीक लोकसंगे कतेक तरहक झंझटि भेल। एखनधरि एकरा अपन पिताक जानकारी नहि छैक। ताहि प्रश्नपर ओकर मौन के तोड़त?

एकदिन हम दुनूगोटे ओसारापर बैसल चाह पीबि रहल छलहुँ कि दीपांक पहुँचि गेलाह। बहुत दिन बाद भेंट भए रहल छल। बहुत नीक लागल । कहए लगलाह-

"बहुत दिनसँ सोचैत रही जे अहाँसभसँ भेंट करी मुदा अस्पतालक झंझटि बुझले अछि, ओहो आइ काल्हि आपत्तिकालीन विभागमे दए देने अछि। किछु-ने-किछु झझटि होइते रहैत छैक।"

"हमहुँसभ नहि जा सकलहुँ। असलमे कालेजक समय कालेजमे बीति जाइत अछि आ तकर बाद गाम-घरक लोक किओ-ने-किओ अबिते रहैत छथि। सभकेँ हमरसभक डेराक पता बूझल छैक।"

"नीके छैक, एही बहन्ने अपन लोकसभसँ भेंट होइत रहैत अछि।"

"से तँ ठीके बात छैक मुदा कै बेर मोन खिन्नो भए जाइत अछि।”

"से की?"

"की कहू? गाम घरक चकल्लस चलिते रहैत छैक। सुनलिऐक जे महराज काशी भागि गेलाह। राजपुरामे आइ-काल्हि भम्ह पड़ि रहल अछि। महराजक संपदासभक लूट भए रहल छैक। किओ देखनाहर नहि। कै बेर किछुगोटे महराजकेँ आपस अनबाक प्रयास केलाह मुदा महराज अड़ि गेल छथि जे आब ओ ओतहि प्राणत्याग करताह। "

"संगमे के छनि?"

"एहन समयमे तँ मनुक्खक अपन छाँहो संग नहि दैत छैक। तथापि राजबैद आ राजपंडित हुनकर संगे ओतए गेल रहथिन मुदा आबो ओसभ ओतहि छथि कि नहि से नहि बूझल अछि।"

"एकरे कहैत छैक समय। एक समय छल जे लोकसभ महराजक लगीचमे जेबाक हेतु कोन-कोन व्योंत नहि करैत छल। वएह महराज छथि मुदा किओ सटए नहि चाहैत अछि।"

"सभकेँ मरखनाक डर होइत छैक। जँ किओ एमहर-ओमहर केलाह तँ यमपाश हिलाबए लगैत अछि। ओकरा आगू सभ फेल अछि।"

दीपांकसँ गप्प-सप्प भइए रहल छल कि कालूक फोन आबि गेल। पुछलक- “गाम कहिआ अएबहक?

"कीएक? हमरासभक गाममे कोन पुछारी? ओतए तँ एक सँ एक महावली छथि।"

"हुनकर बशक बात नहि छनि। बुधिगर लोक चाही। महराज तँ भागि गेल मुदा ओकर संपदापर गाम-गाम पसरल जमींदारसभ कब्जा केने जा रहल अछि। असली आदमीकेँ ओकर हक नहि भेटि रहल अछि।"

“ई तँ आओर गड़बड़ भेल।"

"तेँ ने कहि रहल छिअह जे गाम आबह।"

“ठीक छै। "फोन कटि गेल। ओकरा गछि तँ लेलिऐक मुदा हम गाम जा कए की कए लेबैक? ककरो नीकसँ चिन्हितो नहि छिऐक। दीपांक आ चंपा दुनूक इच्छा भेलैक जे गाम जाइ नहि जाइ हमरा लोकनि एक बेर राजपुरा तँ चलबे करी। अपने आँखिए देखिऐक जे की हाल छैक। अस्तु, हमसभ सँझुका ट्रेन पकड़ि कए राजपुरा बिदा भेलहुँ। यात्री ट्रेन छलैक। सभटीसनपर रुकैत चलैत छलैक। ऊपरसँ देरीसे भए गेल रहैक। बहुत मोसकिलसँ ओकरा रस्ता भेटैत छलैक।

जे ट्रेनकेँ भोरे पहुँचबाक रहैक से साँझ कए देलक। राजपुरा पहुँचैत-पहुँचैत हम तीनूगोटे थाकि गेल रही। तथापि हमसभ साहस कए आगा बढ़लहुँ। कनिके आगा बढ़ैत छी तँ देखैत छी जे लोकसभ बड़का देबालसभकेँ क्रेन लगा-लगाक ढ़ाहि रहल अछि। महलसभमे गामक लोकसभ घुमि रहल अछि। महराजी कागज-पतरसभकेँ आगिमे झोंकि देल गेल अछि। सबतरि विध्वंश भए रहल छल। एहन हालतमे हमसभ

की कए सकब?” -हम बजलहुँ।

"आब किछु करक नहि छैक। सभटा अपने भए रहल छैक।” - कालू बाजल। गाम-गामक लोकसभ करमान लागि गेल छल। ऊपरसँ मखना जयकारा दए रहल छलैक। ओकर कोर कमिटीक लोकसभ-हरि, रेखा, रानी, देबू सभ हाथ हिला-हिला कए जनता जनार्दनक मनोवल बढ़ा रहल छल। लगैत छल जेना उजाहि उठि गेल अछि।

इलाकाक लोकसभ गोलबंद भए गेलाह। राजचौकपर सभ एकत्र भए एकस्वरमे घोषणा केलनि जे काल्हि भोरे आठ बजे उच्चैठ भगवतीक प्रांगणमे सभ किओ उपस्थित रहताह। ओतहि भविष्यक कार्यक्रमक घोषणा होएत।

भोरे आठ बजैत-बजैत कालीस्थान सजि गेल छल। लाल-लाल अढ़ूलक फूलसँ माताक शृंगार कएल गेल। मल्हुआ अपन संगीसभक संगे रसनचौकी बजा रहल छल। गाम-गामसँ लोकसभ जुटल जा रहल छल। सभसँ पहिने “जय जय भैरवि असुर भयाविनी”गाओल गेल। तकरबाद कालू माइक पकड़लक आ सभ पुरखासभकेँ गोहरओलक। मखनाक नाम लैत ओकर आँखि नोरसँ भरि गेलैक। लोकसभ सेहो नोर पोछि रहल छलाह। अत्यंत भावुक क्षण छल। कालू बजलाह –

“हमरा लोकनिक संघर्षक सुखद अंत भेल। आइसँ राजपुराक मालिक एहिठामक लोकसभ छथि। जकर जे जथापात जहिआ कहिओ नीलाम भेल छल से ओकरा आपस भेल। आब ने किओ महराज ने किओ महरानी। हमसभ अपन भाग्यक स्वयं निर्माता छी। अजुका दिनसँ समस्त राज संपदाक उपयोग जन कल्याण हेतु कएल जाएत।"

सभ सहर्ष समर्थन केलक- चिकरि उठल- “एवमस्तु।"

इलाकाक जमींदार सभ आगा आबि कए स्वयं घोषणा केलाह-

“हम सभ जनताक संपत्ति ओकरा आपस करैत छी। आइसँ जहिना अहाँ तहिना हम। "

कामिनी मरैतकाल कहि गेलैक जे हम चंपाक संग बिआह कए ली। चंपा कै बेर एहि बातक चर्च करैत रहैत छलि। हम चंपाकेँ आश्वासन देने रहिआनि जे ई सभ होइते हम हुनकासंग बिआह करब। से समय आबि गेल छल। महराजक अंत भए गेल छल। जनताकेँ अपन हक आपस भेटि गेल छल। गाम-घरमे सभ किछु सरिआ गेल छल। हम चंपाकेँ कहलिऐक-

"आब हमरोसभकेँ बिआह कए लेबाक चाही।"

से सुनिते चंपाक प्रशन्नताक अंत नहि छल। ओ बाजलि- “शुभस्य शीघ्रम्।"

मखना अपन दायित्वसँ मुक्त भए गेल छल। सोचलक जे जाइत-जाइत गंगा स्नान कए ली। ओ अपन कोर कमिटीकसंग गामसँ बिदा भए सिमरिआ पहुँचल। सभकिओ गंगा स्नान केलाह। चारूकात पुष्पवर्षा भए रहल छल। मखना सहित समस्त पूर्वज लोकनि मुक्त भए गेलाह।

मखना अपन यमपाश गंगामे फेकि देलक। “आब एकर कोन काज?" -मखना बाजल। महराजकेँ हाथ-पैर बान्हि कए यमदुतसभ हाजतिमे रखने छल। से देखि यमराज मोंछपर हाथ दैत अपन रनिबास दिस बढ़ि गेलाह। ओहिठाम रेखा हुनक प्रशन्नतापूर्वक स्वागत केलीह।

रसनचौकी बजबैत जखन मल्हुआ भूतहागाछी लगसँ गुजरल तँ ओहिठामक गाछ-पातसभ खिलखिल हँसैत छल। ❑❑

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.
विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.
महराज (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.
सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/197004.
समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.
मातृभूमि(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198699.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।